वी आई पी

• निमाई भट्टाचार्य

अनुवाद : ममता खरे

V I P
(Novel)
by
NIMAI BHATTACHARYA

□

अनुवाद
ममता खरे

□

प्रकाशक
रवीन्द्र प्रकाशन
११३१ कटरा, इलाहाबाद

□

मुद्रक
जय हनुमान प्रिंटिंग प्रेस
१-सी. बाई का बाग, इलाहाबाद

□

मूल्य : पन्द्रह रुपये

□

प्रथम संस्करण : १६८४

विख्यात लेखक श्री निमाई भट्टाचार्य की यह अद्भुत औपन्यासिक कृति है।

एक संवाददाता पत्रों के माध्यम से अपनी विदेश-प्रवासिनी मंगेतर को अपने पेशे के कारण मिलने वाले वि आई पिओं के बारे में विस्तार से लिखता है। यही अनेक पत्र मिल कर एक रोचक कथा की सृष्टि करते हैं।

निमाई भट्टाचार्य वास्तविक जीवन में भी एक संवाददाता होने के कारण अपने सच्चे अनुभवों को जिस स्वाभाविकता व सरलता से चित्रित करते हैं, वह उनकी विशेष खूबी है।

आज के उच्चवर्गीय समाज के नायकों व नेताओं तथा कुछेक 'टाइप' महिलाओं का जो चित्रण इस कथा कृति में अपनी यथार्थता के साथ मिलेगा, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

वी आई पी
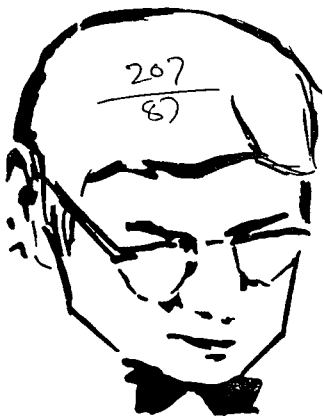
मेम साहब,

एडेन से पोस्ट की तुम्हारी चिट्ठी मिली। मालूम हुआ कि बम्बई से जहाज छूटने के बाद सारी रात तुम सो न सकी थीं। तुम न भी लिखतीं तो भी मैं जानता हूँ, तुमने रो-रो कर बाढ़ बुला ली होगी, जानता हूँ तुम असहनीय यन्त्रणा से छटपटा रही हो। एक ही चन्द्रताप के नीचे तुम और मैं हूँ। फिर भी इस दीर्घ व्यवधान और सामयिक विच्छेद का दु:ख होना तो स्वाभाविक ही है, लेकिन इतनी उतावली न हो। एक बार भी मेरी बात सोची तुमने ? सोचा है क्या, जो मेम साहब मेरे अशान्त जीवन में हिमालय-सी प्रशान्ति लाई थी, जिसकी गहरी काली तनी आँखों ने मेरा सारा मन भरा-पूरा कर रखा था, जिसके प्यार ने मेरी मृतात्मा को बहा दिया था, जिसके प्रेम के स्पर्श से मेरी युग-युग-व्यापी निद्रा भंग हुई थी, जिसने मेरी आँखों में भविष्य का स्वप्न चित्रित कर दिया था, उसी मेम साहब को अपने समीप न पाकर मेरी क्या दशा हो रही है ? शायद सोचा हो, शायद न सोचा हो। लेकिन इस विरह-वेदना में आनन्द है, है आत्म-तृप्ति। मैं निस्संग होकर निस्संग नहीं, एक अन्तरद्वीप की मंगलशिखा मेरे कल्याण-यज्ञ के लिए हर समय जल रही है। सोचने में निश्चय ही आत्मतृप्ति है, है निर्भरता का आनन्द।

तुम्हें जहाज पर चढ़ा कर लौटा तो मेरी मानसिक दशा क्या थी, तुम्हें लिख कर बताने की क्षमता मुझमें नहीं है। भयानक आवाज के साथ जहाज के छूटते ही मेरा आधा हृदय टूट गया। तुम डेक पर खड़ी रूमाल हिला रही थीं पर मैं ठीक से देख न सका था। आँसुओं के कारण तुम्हारी मूर्ति धुंधली हो रही थी। तुम्हें प्यार किया है,

तुमने मुझे प्यार से भरपूर कर दिया है। लेकिन पहले न जान सका था। यह न जानता था, मेरे हृदय पर तुम्हारा कितना अधिकार है। जहाज के अदृश्य होते ही लगा कि अचानक सारी दुनिया विजन बान्धव विहीन हो गई। लगा कि मैं सहारा रेगिस्तान के बीच में बिलकुल अकेला पथिक हूँ। प्यास से छाती फटी जा रही है, चारों तरफ धोखे में डालने वाली नदियाँ, मैं इधर से उधर दौड़ रहा हूँ, लेकिन प्राणों की प्यास बुझाने के लिए एक बूंद पानी नहीं मिल रहा है। सात दिन हुए जहाज छूटे, अभी भी मैं जैसे वही प्राणहीन एवं हरियाली विहीन निर्दयी रेगिस्तान में भटक रहा हूँ। जब तक फिर तुम्हें पास न पा लूंगा, तुम्हारा गाना न सुनूंगा, तुम्हारे चेहरे की हँसी और आँखों की बिजली से मेरे प्राण न जल उठेंगे, तब तक इस रेगिस्तान में हरियाली की कोई आशा नहीं।

आज दस दिन हो गए बम्बई आए। सोचा था दिल्ली जल्दी लौटूंगा, लेकिन हो न सका। तुम्हारे जहाज के छूटने के सात दिन बाद भी मन संयत नहीं हो पाया है, दिल्ली लौटने के बारे में मन स्थिर नहीं कर पा रहा हूँ। अन्त में सोचा है कि और कुछ दिन इसी अरब सागर के किनारे बैठा रहूँगा और यह सोच कर आत्मतृप्ति होगी कि इसी समुद्र के हृदय पर तुम बह रही हो। छुट्टी बढ़वाने के लिए आज न्यूज एडिटर को तार भेजा है। इस बचकानी हरकत के लिए तुम मुझे डाँटना नहीं, कड़ी बात भी न कहना। तुम नवीनता के बीच शायद दुःख को छुपाने का मौका पा जाओ—लेकिन मैं ? उसी चिरपरिचित वातावरण में इस नए दुःख को मैं कैसे भूलूंगा ?

इतने बड़े शहर में लाखों लोगों की भीड़ लगी है। कितने दोस्त फैले हैं चारों तरफ, लेकिन ये लोग जैसे मेरे कोई नहीं। मनुष्य की इस चलायमान प्रदर्शनी को देख कर भी मन नहीं भर रहा है—कहने की इच्छा हो रही है—

'पोड़ा मोने शुधू पोड़ा मुख खानी जागे रे।
ए त लोक आछे, तबू पोड़ा चोखे,
आर केहो नाहीं लागे रे।'

केफ परेड के इस बंगले में बैठा समुद्र ताकता रहता हूँ और सोचा करता हूँ तुम्हारी-मेरी बात। याद आ रही है तुम्हारे साथ मुलाकात की पहली शाम की बात, याद आती है माधुर्यभरी तुम्हारी-मेरी प्रतिदिन की कहानी। सच, पहले दिन की उस शाम को उतने लोगों के बीच पहले मैं तुम्हें आविष्कार न कर सका था, किन्तु तुम्हारी ये उज्ज्वल फैली-फैली काली आँखें और मुँह की हँसी, एक ही मुहूर्त में बहा ले गई थीं भाग्य के एक नए बन्दरगाह पर। याद है वह शाम ? पहली मुलाकात की तीव्र अनुभूति ?

बहुत सोचने पर भी उस संध्या के भाव व्यक्त करने की भाषा नहीं ढूंढ़ पाता हूँ। अचानक बायरन और कोलरिज याद आ गए। बायरन के शब्दों में तुम्हारी आँखों में पाया था, And that's best of dark and bright, meet in her aspect and her eyes. बाकी उत्तर मिला कोलरिज के Songs में :—

....'She is not fair to outward view
as many maidens be,
Her loveliness I never knew;
Until she smiles on me.......'

तुम्हें समीप न पाने के दुःख में भी अतीत की मीठी स्मृति का मन्थन करना अच्छा लग रहा है। सोच नहीं पा रहा हूँ कि तुम बगल में खड़ी नहीं हो, निकट नहीं हो। लग रहा है, अभी तुम लौटी हो! अपना बैग मेरे लिखने की मेज पर रखा और दिवान पर बैठ कर मेरे गले में बाँहें डाल गाना गा रही हो। मेरे मन में वही गाने का स्वर बज रहा है—सुनाई पड़ रहा है तुम्हे?

जहाज के डेक पर, डेक-चेयर पर बैठ, भूमध्य सागर के ऊपर विस्तृत नीले आकाश की ओर देखते-देखते तुम्हें उन दिनों की याद नहीं आती है? याद आता है क्या, तुम्हारी विदेश-यात्रा की रात को हम दोनों के रतजगे के हर क्षण?

तुम्हारे पत्र के अन्त में विचित्र-सा अनुरोध देख आश्चर्य हुआ। हर सप्ताह क्यों, हर दिन तुम्हे पत्र लिख सकता हूँ, लेकिन वी० आई० पी० की कहानी लेकर क्यों? तुम्हारा कोई भी अनुरोध आज तक टाला नहीं, भविष्य में भी नहीं टालूँगा। तुम्हारे अनुरोध पर हर हफ्ते वी० आई० पी० पर ही लिखूँगा। लेकिन जिनकी मीटिंगों में श्रद्धा-पूर्वक जाती हो, जिनके भाषण अखबारों में पढ़ती हो, जिनके पास रह कर तुमने विद्या-बुद्धि अर्जित की, कन्वोकेशनों में जिनके करकमलों से उपाधिपत्र प्राप्त किए, उन्हीं की कहानी सुन कर दुःखी हुई तो उसके लिए उत्तरदायी मैं न होऊँगा।

बहुत सारा प्यार, बहुत-सा स्नेह और लेना....!

तुम्हारा
बच्चू

मिस तापसी सेन
केयर मैनेजर
रोज कोर्ट
टैल्वर्ट स्क्वायर
लंदन, वेस्ट—३

मेम साहब,

कल रात तुम्हारा केबल पाकर ज्ञात हुआ कि तुम इंग्लैण्ड की भूमि स्पर्श कर चुकी हो। एक आध दिन में तुम्हारे दीर्घ पत्र की प्राप्ति की आशा करता हूँ। तभी जान सकूँगा तुम्हारी जहाज-यात्रा की कहानी और लंदन निवास की अन्यान्य खबरें।

मेम साहब, वी० आई० पी० के बारे में क्या लिखूं, बताओ तो ? देश के दो खण्डों में स्वाधीन होने के बाद से कौन वी० आई० पी० नहीं है ? साधारण मनुष्यों की धारणा है, जो खद्दर की टोपी पहन कर सरकारी गद्दियां पकड़े बैठे हैं और बड़ा आत्म-त्याग स्वीकार कर मासिक कुछ हजार रुपया पारिश्रमिक के बदले देश-सेवा कर रहे हैं—केवल वे ही वी० आई० पी० हैं, यह सच नहीं है। वी० आई० पी० आज केवल मिनिस्टरों में ही सीमाबद्ध नहीं हैं। छोटे-मोटे सब राजनैतिक नेता वी० आई० पी० हैं। पालियामेण्ट के साढ़े सात सौ सदस्य भी वी० आई० पी० हैं। यहीं पर बात खत्म होती तो समझते, लेकिन अब वह दिन आया है कि एक्टर-एक्ट्रेस, शिल्पी, संगीतज्ञ, साहित्यिक, प्रिंसिपल-प्रोफेसर-मास्टर, फुटबाल, हॉकी, क्रिकेट, टेनिस के खिलाड़ियों से लेकर सब-डिप्टी मजिस्ट्रेट, अण्डर सेक्रेटरी, हेड असिस्टेन्ट, सेक्शन ऑफिसर सभी वक्त-बेवक्त वी० आई० पी० हो जाते हैं।

रेडियो पर देश के प्रसिद्ध गायक लोग गाते हैं। नाना प्रकार के लोग भाषण देते हैं, असंख्य अभिनेता-अभिनेत्रियां अभिनय करती हैं। स्टेशन-डाइरेक्टर तो इन्हें अपना भाग्य-विधाता समझता है। बहुतेरे सेक्शन आफिसरों की आधी तनख्वाह पाकर भी प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव्स आँख उठा कर नहीं देखते हैं। लेकिन रेडियो स्टेशन के असली वी० आई० पी० ये लोग ही हैं, जिनके कोमल स्वरों में सुनाई पड़ता है—पंकज मल्लिक के कण्ठ से रवीन्द्रनाथ का ये गीत 'कि पाईनी तार हीसाब मिलाते' सुनने के बाद रवीन्द्रनाथ का एक और गीत गा रहे हैं विमल भूषण। इनमें से बहुतों की आवाज हवा में फैलने पर भी इनकी क्षमता सभी स्तर पर विस्तृत रूप से व्याप्त है।

मेम साहब ! तुम शायद सोच रही हो, मैं रंग पर रस की चाशनी चढ़ा कर बात को बहुत बढ़ा रहा हूं, पर वास्तव में यह बात नहीं। ग्रैण्ड होटल में बड़े-बड़े फिल्मस्टारों के आने पर क्या होता है—नहीं देखा है ? देखा है न, लॉरी भरी पुलिस इनका पहरा देती है, डिप्टी कमिश्नर दौड़ते रहते हैं। जनता के अभिनन्दन से बचने के लिए ख्रुश्चेव—बुलगॉनिन की तरह फुटबॉल, क्रिकेट प्लेयरों को पुलिस की वायरलेस वैन में चढ़ कर मैदान से गायब होते नहीं देखा है ? तब ये क्या वी० आई० पी० नहीं हैं ?

क्षमता की तारीफ करने का धर्म हमारे खून में मिला है। आसपास ताबेदारों को न देखने से तृप्ति नहीं होती है। चमक-दमक के बिना हम मनुष्य के महत्त्व को स्वीकार नहीं करते हैं। हमारे देश के एक डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को लेकर जितना नाचा जाता है, पृथ्वी के बहुतेरे देशों के प्राइम मिनिस्टर को लेकर भी उतना नहीं कूदते हैं लोग।

तुम तो अभी लंदन में हो—देखोगी, हमारे देश के क्षमताहीन गर्वनरों के जाने पर जितनी पुलिस-व्यवस्था की जाती है, वहाँ की क्वीन या प्राइम मिनिस्टर के जाते वक्त वहाँ यहाँ के दस गुने के एक गुनी भी पुलिस-व्यवस्था नहीं की जाती है। हमारे देश के बहुत से मन्त्रियों के घरों के सामने पुलिस के वायरलेस वैन व कई दर्जन बन्दूकधारी पुलिस का पहरा होने पर भी दस नम्बर डाउनिंग स्ट्रीट पर ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर के घर के दरवाजे पर एक से ज्यादा पुलिस दिखलाई नहीं पड़ेगी। मिस्टर हैरल्ड मैक्मिलन

जिन दिनों ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर थे, तब प्राइम मिनिस्टर्स सेक्रेटेरियट में केवल सात-आठ कर्मचारी ही थे। सुनोगी तो आश्चर्य होगा कि दस नम्बर डाउनिंग स्ट्रीट में ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर का कोई खास आफिस नहीं है, सेक्रेटेरियट टेबिल नही, फाइलिंग कैबिनेट भी नहीं है। बीस-पचीस लोगों के साथ मीटिंग होने वाली विशाल मेज पर ही प्राइम मिनिस्टर काम करते हैं। हर क्षण टेलिफोन पर सेक्रेटरी या अन्य किसी पर्सनल स्टॉफ को तलब करने की प्रथा भी दस नम्बर डाउनिंग स्ट्रीट में नहीं है, मैक्मिलन स्वयं उठ कर जाते थे और सेक्रेटरी को बुला लाते थे।

और सोचो, हमारे मन्त्रियों, उप-मन्त्रियों या बड़े-बड़े आफिसरों की बात! उठते-बैठते, चलते-खाँसते, लड़की के लिए सिनेमा का टिकट लाने, लड़के को टेस्ट-मैच दिखाने, पत्नी को मार्केटिंग कराने के लिए हमारे लीडर लोग आम सेक्रेटरियों को न देखें तो सारा ससार ही अँधेरा दीखता है उन्हें। विश्वविख्यात मैक्मिलन कम्पनी के मालिक और भूतपूर्व ब्रिटिश प्राइम मिनिस्टर मिस्टर हेरल्ड मैक्मिलन के बस पकड़ने के लिए लाइन में खड़े रहने की तस्वीर हमारे देश के अनेक अखबारों में प्रकाशित हो चुकी है। लेकिन किसी कम्पनी के मालिक न होने पर भी कामराज योजना में गद्दी छोड़ने पर भी हमारे एक भी नेता को टैक्सी पर घूमते न देखा। वे कैपिटलिस्ट ठहरे—हम सब सोशलिस्ट हैं—तभी तो ऐसा होता है।

मेम साहब, हमारे देश का सोशलिज्म ही अन्य तरह का है। पैरिस के फ्रेंच फारेन मिनिस्ट्री में जाकर तुम्हें ताज्जुब होगा। किसी कमरे के किसी दरवाजे पर नेम प्लेट नहीं दिखाई पड़ेगी, सभी कमरों के नाप और फर्नीचर एक से दिखाई पड़ेंगे। एक भी चपरासी या बैरा नजर नहीं आएगा। बाहर के किसी आदमी को पता तक न चलेगा कि कौन बड़ा है, कौन छोटा। लेकिन अगर तुम राइटर्स बिल्डिंग में जाओ तो देखोगी—किसी-किसी कमरे के दरवाजे पर दर्जन-दर्जन भर साइनबोर्ड लटक रहे हैं। सैकड़ों क्लर्कों के बीच बैठने पर भी हेड असिस्टेण्ट को पहचान लेने में बिन्दु-मात्र भी दिक्कत न होगी; देखोगी और सबों से उसकी मेज बड़ी भी है और जरा तिरछी करके रखी है। हम सोशलिस्ट हैं, हम गरीब हैं, इसलिए आभिजात्य का प्रचार करने में अद्वितीय हैं। सरकारी दफ्तरों में चपरासी-बैरों की भरमार है। योरप धनी देश है, इसलिए चपरासी-बैरा वे रखते ही नहीं हैं।

मेम साहब, हमारे देश के वी० आई० पी० ओं की कहानी लेकर महाभारत लिखा जा सकता है। पृथ्वी के अधिकांश देशों में बिना किराये पर मन्त्रियों को सरकारी घर देने की व्यवस्था न होने पर भी दिल्ली में सोशलिस्ट पैटर्न के जच्चाघर हैं। सिर्फ यही नहीं, सरकारी खजाने में से सत्तर-अस्सी हजार रुपये लेकर इन सब बंगलों को सजाने की व्यवस्था भी है। फिर भी बहुत से मंत्री अफसोस करते हैं, इस तरह के बंगले जानवरों के लिए ठीक हैं, मनुष्यों के लिए अनुपयोगी हैं। जो भी हो, भुवनेश्वर में सोशलिज्म का नया प्रस्ताव पास होने के बाद बहुत उन्नति हुई है। सोशलिज्म के कस्टोडियन लोग एम्बेसडर छोड़ प्रायः एक लाख मूल्य की एयर-कण्डीशण्ड एम्पाला पर चढ़ने

इधर देश के सभी अखबारों में विज्ञापन निकल रहा है—जन-साधारण—टाइटेन मोर बेल्ट, प्रोड्यूस मोर एंड कन्ज्यूम लेस, जो लोग ये विज्ञापन निकाल रहे हैं वे ही लोग एयर-कण्डीशण्ड गाड़ियों में बैठ कर कमर की बेल्ट खोल कर जम्हाइयाँ लेते हुए चुटकी बजा रहे हैं।

मेम साहब, तुमने कहा है इसलिए इन सब वी० आई० पी० ओं की बात तुम्हें लिखने लगा हूँ, वरना ये कहानियाँ किसी को सुनाने के काबिल नहीं हैं। इन्हें जितना ही देखता हूँ, उतना ही शर्म, दुःख और अपमान से सिर नीचा हो जाता है। इस चिट्ठी को पढ़ कर चौंकना नहीं, क्योंकि अभी तो शुरुआत ही है, आश्चर्यचकित होने के लिए बहुत कुछ बाकी है।

पर-निन्दा से ही पत्र भर गया। अब बताओ, तुम कैसी हो? बच्चू-विहीन दिन कैसे गुजर रहे हैं? मैं तो सिर्फ सोचता हूँ कि रुदन भरे बसंत के समाप्त होते ही फिर अर्जुन समझ कर चित्रांगदा की तरह तुम कब मेरे पास लौटोगी।

अगले दिन फ्रन्टियर मेल से दिल्ली के लिए रवाना हो रहा हूँ। इस पत्र का उत्तर दिल्ली भेजना। बहुत-सा प्यार।

तुम्हारा
बच्चू

मेम साहब,

रिक्त मन से रूखी दिल्ली में वापस आ गया हूँ। बहुत दिनों बाद पहली बार बाहर से दिल्ली लौटा और तुमने मुझे रिसीव नहीं किया। बम्बई में फिर भी कुछ तसल्ली थी, पर यहाँ तो कदम-कदम पर तुम्हारी स्मृति और प्यार के धक्के झेल रहा हूँ। स्टेशन पर उतरते ही लगा, कौन मेरा कमरा ठीक कर देगा? शाम को कौन मेरे घर में बत्ती जलायेगा? कौन इण्डिया-गेट पर टहलते वक्त मेरा हाथ पकड़ कर गाना सुनायेगा? कौन सुबह-सुबह टेलीफोन करके नींद से जगायेगा?

स्टेशन से आते ही रिसेप्शन काउण्टर पर चाभी माँगते ही मथुरा ने बहुत-सी चिट्ठियाँ दीं। एयरमेल-कवर दिखा कर बोला—'बाबू जी, विलायत से दीदी जी ने लिखा होगा। पढ़िए न? देखिए न बाबूजी, दीदी जी को कोई परेशानी तो नहीं हो रही है?'

क्या करता? काउण्टर के सामने ही खोल कर तुम्हारी चिट्ठी पढ़ी। मथुरा से कहा—'दीदी जी ने लिखा है कि मेरा ख्याल रखना, सेवा करना, मेरा कमरा साफ-सुथरा रखना।'

मथुरा ने क्या किया पता है? खैनी मुँह में भर कर मुस्कुरा दिया। बाद में

मालूम हुआ, तुम उसे सब काम-काज पहले ही समझा-बुझा गई हो। उसकी नई पुत्र-वधू के लिए एक साड़ी और पन्द्रह रुपये भी दे गई हो। अतएव, तुमसे घूस खाकर मथुरा दासानुदास बना सेवा-टहल, कामकाज कर रहा है। मेरे लिए तुम्हारी यह दुश्चिन्ता ? फिर दिन कैसे काट रही हो, बताओ ?

कमरे में आकर लेट कर मैंने तुम्हारा पत्र फिर कई बार पढ़ डाला। फिर अन्य पत्रों के बीच मिस पार्कर की चिट्ठी देख कर अवाक्-सा हुआ। लिखा है, केनी को लेकर शनिवार को दिल्ली पहुँच रही है और सोमवार को उसे मेडिकल इस्टीट्यूट में भर्ती करेगी।

जानती हो मेम साहब। मिस पार्कर को मैं बहुत चाहता हूँ। अपनी कोई छोटी बहन नहीं है, लेकिन उस कमी को उसने दूर किया है। मैं सम्पूर्ण हृदय से यही चाहता आया हूँ कि उसकी केनी से शादी हो जाए, वे सुखी हों। लेकिन पता नहीं क्यों, भगवान् को जैसे उनका सुखी होना पसन्द नहीं। इसीलिए तो उनके जीवन में जैसे ही सुख का सूर्य चमकने को होता है वैसे ही दु:ख के बादल उस सूर्य को ढँक लेते हैं। एक बार नहीं—कई बार।

बहुत दिनों पहले एक वी० आई० पी० का टूर कवर किया था मैंने ! ओरियण्ट एयरलाइंस के जिस चार्टर्ड स्काइमास्टर पर हम घूम रहे थे—मिस पार्कर उसी की एयर होस्टेस थी। इस तन्वी एंग्लो-इंडियन एयर होस्टेस के प्रति बहुत लोग तृषित दृष्टिदान कर रहे थे। यह मैं देख रहा था। दोनों तरफ की सीटों के मध्य सँकरे छोटे से रास्ते में, मिस पार्कर के आने-जाने के बीच कुछ लोग स्वेच्छा से और कुछ लोग जान-बूझ कर पथरोधक बन कर खड़े हो जाते थे। कलकत्ते की ट्राम-बसों पर एक तरह के निर्लज्ज लालची लोग जैसे लेडीज सीटों के पास दुर्भिक्ष पीड़ित-सी दृष्टि लिए, जरा-सा कोमल स्पर्श प्राप्त करने की आशा लिए खड़े रहते हैं, हमारे यह वी० आई० पी० पार्टी के मूवमेण्ट लायसन अफिसर और ओरियेण्ट एयरलाइंस के डिप्टी जनरल मैनेजर मिस्टर विग ने भी उसी तरह मिस पार्कर का नरम स्पर्श पाने के लिए हम लोगों के सामने ही घृणित हरकत की। मिस पार्कर की उलझन तो मैं देखता था, पर अच्छी तरह से समझता था कि असह्य होते हुए भी उसे सहन करना पड़ता था। विग जैसे एक सीनियर आफिसर को कुछ कहने की क्षमता एक साधारण एयर होस्टेस के लिए असम्भव थी।

बंगलौर जाकर एक दिन एक कॉकटेल पार्टी में मिस पार्कर को लेकर विग ने खूब हो-हल्ला किया, एक साथ नाचा भी। आधी रात को कॉकटेल खत्म होने पर भी विग की आँखों का नशा कम नहीं हुआ, मिस पार्कर को लेकर होटल के अपने कमरे में गए। भर पेग ह्वाइट हॉर्स पर चढ़ कर जिस वक्त अन्य लोग अपने-अपने बिस्तर पर पड़े स्वर्ग विजय कर रहे थे, मैं उस समय चुपचाप बरामदे के एक कोने में खड़ा विग के कमरे के दरवाजे पर ध्यान लगाए खड़ा था। रात के दो या ढाई बजे मिस पार्कर विग के कमरे से बरामदे में निकलीं। धीरे-धीरे चल कर मिस पार्कर अपने कमरे में जाते वक्त

बरामदे के एक तरफ मुझे खड़ा देख कर सज्जा से जरा तेज चली ही थीं कि मैंने पुकारा—'मिस पार्कर'।

दाँतों से नाखून कुतरती, सिर झुकाए, मिस पार्कर रुक गई। मैं उसकी तरफ बढ़ गया। उसके मुँह की तरफ देख न सका। एक नजर डालते ही लगा जैसे किसी दुश्मन ने इस फूल की पंखुड़ियों को नोच डाला है। सिर झुकाए हुए मैं बोला—'आई एम सॉरी मिस पार्कर। नौकरी करने के लिए आकर अपने को इस सीमा तक बेच देना, असह्य लगता है न?'

मिस पार्कर आश्चर्य से मेरा मुँह ताकते हुए बोलीं—'भाग्य के अलावा और क्या कह सकती हूँ, बताइए?'

इतनी रात को और अधिक बात बढ़ाए बगैर सिर्फ बोला—'जाइए, आराम कीजिए।'

दूसरे दिन नेशनल यूनियन के एक रिसेप्शन में मि॰ विग मिस पार्कर को ज्यों ही घेरने आए मैंने बाधा पहुँचाई। हँसते-हँसते मैं बोला, 'क्यों, क्या हमारे साथ गप्प-शप नहीं कर सकते हैं?' मजबूरन मिस्टर विग को हमारे साथ रहना पड़ा और मैं खुशी के साथ उनके गिलास में शराब डालता रहा। अन्त में बेहोश होने के बाद किसी तरह से पकड़ कर गाड़ी में चढ़ाया और होटल के कमरे में ले जाकर लिटा दिया। आधी रात को उठ कर परेशान न कर सकें अतः बाहर से दरवाजे मे चिटखनी चढ़ा दी। और क्या किया, जानती हो मेम साहब? अचानक किसी कारणवश कोई दरवाजा खोल सकता है सोच कर, 'प्लीज डोण्ट डिस्टर्ब' का बोर्ड दरवाजे पर लटका दिया। दूसरे दिन विग के जागने से पहले ही मैंने दरवाजे की चिटखनी खोल कर बोर्ड हटा दिया।

ब्रेकफास्ट की मेज पर विग से भेंट होते ही वह बोले—'यू नॉटी बॉय, यू मेड मी डाउन लास्ट नाईट।'

मैं बोला—'मि॰ विग, अच्छे गुरु के अभाव में मैंने आज तक ड्रिंक नहीं किया है। इसीलिए तय किया था तुम्हारी परीक्षा लेकर देखूंगा, तुम्हें गुरु के रूप में ग्रहण कर सकता हूँ या नहीं।' कॉफी की एक घूंट लेकर बोला—'लेकिन कल रात देखा, तुम सिर्फ मुँह ही से बकबकाते हो—असल में पी नहीं सकते हो।'

विग साहब के आत्म-सम्मान को शायद धक्का पहुँचा। बोले—'डैम चैप, डोण्ट टॉक! चाहूँ तो कुछ बोतल सोडा के साथ तुम्हें भी खा सकता हूँ।'

'बेकार की बातें मत करो साहब, औरतों के साथ छेड़खानी करने के अतिरिक्त तुम कुछ नहीं कर सकते हो।'

मेज पीटते हुए विग साहब चिल्ला उठे। मैं भी जवाब में चिल्लाया, 'अगर असली बाप के बेटे हो तो आओ, बाजी लगाओ।'

तुरन्त विग साहब ने जेब से पर्स निकाल कर मेज पर पटक दिया, 'देसाई, कीप इट विथ यू, ये लड़का अगर मुझे बेहोश कर दे तो यह पर्स इसे दे देना।'

फिर मेरी तरफ अँगुली उठा कर बोले—'माई डियर लवली यंग बॉय, तुम हारोगे तो क्या दोगे ?'

'एक बोतल किंग ऑफ किंग्स।'

'लवली, लवली।'

द्रौपदी को दाँव पर लगा कर पांडवगण जुआ खेलने बैठे थे, और उस दिन शाम को बंगलौर में उस गन्दे-कुत्सित विग के हाथों से, कुछ न सही, पर एक रात के लिए अपरिचिता एक एंग्लो इंडियन एयर होस्टेस को बचाने के लिए मैं शराब की बोतल सामने रख कर बैठा। चारों तरफ वी० आई० पी० पार्टी के अनेक लोग घेर कर खड़े हो गए। मिस पार्कर भी आई थी।

विग साहब हँसते-हँसते पाँच-सात पेग चढ़ा गए। लेकिन और दो-एक पेग के बाद सिगरेट न जला सके। मैंने सिगरेट जला दी, पर मुँह से गिर गई। अच्छी तरह से समझ रहा था कि अब ज्यादा देर नहीं है। लक्षण शुभ देख मैंने और अधिक प्रेम जताते हुए दुगने उत्साह के साथ विग साहब को पिलाना शुरू किया, लेकिन बहुत आगे बढ़ना न पड़ा। हाथ का गिलास रखते हुए साहब बोले—'जर्नलिस्ट, इफ यू डोण्ट माइण्ड, तो जरा रेस्ट ले लेता।'

'सर्टेन्लि।'

जैसे ही विग साहब कुर्सी पर पसरे मिस्टर सोढ़ी ने डिक्लेयर किया, 'ही इज फिनिश्ड।'

भीड़ छँटने लगी। कुछ ही देर में सभी विदा हो गए। बैरे ने गिलास-बोतलें, सजा-सँवार, धो-पोंछ कर विदा लेने से पहले दो पेग स्क्वाच मेरी मेज पर और रख दिया। काफी समय तक प्रतीक्षा करने के बाद मुझे लगा, विग साहब का विश्राम-पर्व कल सुबह के पहले खत्म न होगा। कुछ लोगों की मदद से उन्हें उठा कर कमरे में सुला आया।

विग साहब के कमरे से अपने कमरे में जाने के रास्ते में बरामदे में देखा मिस पार्कर खड़ी हैं। उन्हें देखते ही मैंने पूछा, 'इतनी रात गए आप यहाँ ?'

'आपकी ही प्रतीक्षा कर रही हूँ।'

'बट व्हाई ?' मैंने पूछा।

जरा हँस कर मिस पार्कर बोली, 'आपने मुझे विग के अत्याचारों के हाथ से लगातार दो दिन बचाया और इसके लिए मैं आपको धन्यवाद भी न दूँ ?'

जरा गम्भीर होते हुए मैं बोला—'आप तो काफी उदारतापूर्वक दूसरों की प्रशंसा कर सकती हैं। मैंने तो आपके लिये कुछ भी नहीं किया।'

'मिस्टर जर्नलिस्ट, यह सच है कि आपकी तरह बुद्धि मुझमें नहीं है, फिर भी मुझे जितना बेवकूफ समझ रहे हैं उतनी बेवकूफ मैं नहीं हूँ।' जरा रुक कर बोली—'देखिये, एंग्लो इण्डियंस में कलचर या ट्रेडिशंस का अभाव रह सकता है, लेकिन सौजन्य ज्ञान की कमी उनमें नहीं है।'

'थैंक-यू मिस पार्कर, नो मोर लेक्चरिंग।'

उस दिन काफी रात को सभी के अनजाने मेरे साथ मिस पार्कर का नये सि से परिचय हुआ, घनिष्ठता हुई। इस परिचय और घनिष्ठता की खुशी में बाकी दूर क समय बड़े मजे से बीत गया। अन्त में एक दिन सुबह सान्ताक्रुज से वी० आई० पी० भारतवर्ष से विदा लेकर यूरोप लौट गये।

दूसरे दिन दून एक्सप्रेस से पार्टी के सभी लोग दिल्ली के लिए रवाना हो गये पर मैं मिस पार्कर के अनुरोध पर रुक गया। दिन के वक्त मैं और मिस पार्कर मेरीन ड्राइव से मालाबार हिल्स होते हुये वालेश्वर रोड—रिज रोड से घूमते-घामते चले आते हैंगिंग गार्डन! किसी-किसी दिन विक्टोरिया गार्डन। किसी दिन क्रॉफोर्ड मार्केट में घूमते-घूमते दोपहर का शो देखने जा घुसते सिनेमा हाल में। फिर शाम को राजा भाई टावर के सामने आइसक्रीम खाते होते कि केनी आ पहुँचता। फिर, मेरिन ड्राइव की बेंच पर बैठे-बैठे हमारे शाम और रात के कुछ प्रहर बीत जाते।

जानती हो मेम साहब, पाँच दिन था बम्बई में पर उन्हीं पाँच दिनों में मिस पार्कर की पच्चीस साल की जीवन कहानी और पारिवारिक इतिहास मालूम कर चुका था।

क्वीन विक्टोरिया के भारतवर्ष की शासन-सत्ता ग्रहण करने के बाद कलकत्ते के जो उमेश घोष काले पानी से जान बचा कर विलायत गये थे, वे ही अट्ठाइस साल बाद विलियम घोष बन कर मद्रास लौट आए थे। गये अकेले, लौटे और तीन जनों के साथ। उन्हीं विलियम घोष की बड़ी लड़की की एकमात्र सन्तान है यह मिस पार्कर। शरतचन्द्र का 'श्रीकान्त' पढ़ कर जब सुनाया मिस पार्कर ने तब मैं चकित रह गया। उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया कि प्रारम्भिक बीसवीं सदी के एक बंगाली का खून उनकी धमनियों में आज भी प्रवाहित हो रहा है।

विलियम घोष के एकमात्र पुत्र, मिस पार्कर के मामा, रेलवे में गार्ड थे। गोदावरी-ब्रिज पर मद्रास मेल-दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई थी। उनकी शादी न होने के कारण गोदावरी नदी के पानी से विलियम घोष के वंश का नामो-निशान धो-पोंछ कर साफ हो गया। जिस समय मिस पार्कर चौदह साल की थी, उसके पिता की मृत्यु हुई। लड़की को मिशनरी स्कूल के हास्टल में रख कर मिसेज पार्कर दूसरी शादी करने कराँची चली गईं।

स्कूल से मैट्रिक पास करने के कुछ ही दिनों बाद मिस पार्कर को फार ईस्ट एयरवेज ट्राफिक असिस्टेण्ट की नौकरी मिल गई। लेकिन लगभग चार साल बाद बम्बई का यह दफ्तर बन्द हो गया। साल-दो साल इधर-उधर काम करने के बाद उसे ओरि-येण्ट एयरलाइंस के दिल्ली आफिस में काम मिल गया।

जानती हो मेम साहब! दिल्ली के अनुभव ने मिस पार्कर को चौंका दिया। ओरियेण्ट में पच्चीस-तीस लड़कियाँ काम करती थीं। आफिस में साधारण पोस्ट पर रह कर भी मिस आहूजा, मिस तनेजा, मिस अरोरा, मिस प्रसाद, मिस बरुआ और दो-तीन

लोगों को बहुत अधिक वेतन मिलता था। साल भर काम करने के बाद मिस पार्कर को इसका कारण मालूम हुआ था। जाना था कि कम्पनी की मंगल-कामना में देह को पूजा की थाल मे सजा कर बड़े-बड़े रथी-महारथियो के आगे उत्सर्ग करके उन्नति लाभ करने में कोई कठिनाई नहीं। बोर्ड ऑफ डाइरेक्टर्स के चेयरमैन की सेवा कर, रात को साह-चर्य प्रदान कर, मिस तनेजा चार ही साल में एक सौ पचहत्तर से आठ सौ पर पहुँच गई। और मिस अरोरा व मिस बरुआ ने गेस्ट फ्लैट में ड्यूटी करके, बड़े-बड़े कम्पनी के अफसरों की सर्व-कामना चरितार्थ करके, सैकड़ों चार्टर्ड फ्लाइट दिला दी है ओरि-येण्ट को। चार साल में थ्री-फोर्थ रेवेन्यू बढ़ा है कम्पनी का।

दिल्ली के प्रौढ़ और वृद्ध वी० आई० पी० ओं की लालसा और कामना में अपने को जला कर राख करना नहीं चाहा मिस पार्कर ने। इसीलिये तो बहुत कह-सुन कर वह नॉन शेड्यूल्ड पैसेंजर सर्विस की एयर होस्टेज बनी। सोचा था, उड़ती फिरेगी तो कोई विपत्ति नहीं आयेगी। फिर भी विग और ट्राफिक मैनेजर तिलकधारी दक्षिणी ब्राह्मण अय्यर के हाथों से मिस पार्कर न बच सकी।

मिस पार्कर ने मुझसे कहा था, 'जानते हो भइया, एक दिन अपने आफिस में जननायक गोपाल स्वामी को देखा था। चेयरमैन साहब के साथ इतने बड़े नेता की सहृदयता देख कर अपनी ही आँखों पर विश्वास नहीं हुआ।' जरा उत्तेजित हो आँखें बड़ी-बड़ी कर मिस पार्कर ने कहा था, 'जानते हो भइया, बाद में देखा कि हमारी कम्पनी के नाम पर एयर कण्डीशनर, रेफ्रीजेरेटर खरीदा गया, लेकिन वह सभी गोपाल स्वामी की कुटिया में गया। डिनर गोपाल स्वामी ने दिया पर पेमेण्ट किया हमारे आफिस ने। सिर्फ इतना ही नहीं, इसके बाद हैं हमारी मिस प्रसाद, गोपाल स्वामी के लिये हर शाम को हमारी कम्पनी की तरफ से भेंट-स्वरूप।'

जानती हो मेम साहब, जीवन में किसी दिन मर्यादा या प्रेम मिस पार्कर को नहीं मिला था। मुझसे जो भी थोड़ी-सी मर्यादा उसे मिली, उसी के लिये मेरे पास स्नेहपूर्ण अधिकार से उसने अपने को बन्दिनी बना लिया है। लेकिन भाग्य का ऐसा ही परिहास है कि नौकरी के झंझटों और केनी के अचानक अस्वस्थ हो जाने के कारण आज तक उनकी शादी नहीं हो सकी है। मन ही मन मुझे बड़ा दुःख होता है। समस्त संसार में सिर्फ एक आदमी के पास सम्पूर्ण रूप से आत्म-समर्पण करने का भी अधिकार क्या भगवान् मिस पार्कर को न देगा?

प्यार।

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

तुम तो जानती हो, मैं भगवान् पर विश्वास या अविश्वास कुछ भी नहीं करता हूँ। सारी उम्र पुत्र-वधुओं पर अकथनीय अत्याचार करने के उपरान्त वृद्ध विधवा सासों का दल काशीधाम में विश्वनाथ जी के दर्शन कर या पुरी के जगन्नाथ जी के चरणों में लोट कर पाप-मुक्त हो सकती हैं, इस पर मैं कभी विश्वास नहीं करता था, आज भी नहीं करता हूँ। जो ब्राह्मण पूरा दहेज न मिलने पर बहू को घर नहीं लाता है, वह प्रतिदिन सुबह-शाम लाख-लाख बार गायत्री मंत्र का जाप करके मोक्ष प्राप्त कर सकता है, यह मैं नहीं मानता। न्याय का त्याग कर जो सिर्फ नियम पालन करता है, अज्ञानता और तर्कहीनता के सहारे जो आदर्श का स्वर्ण-मन्दिर निर्मित करते हैं, वहाँ पुजारी रह सकता है, पत्थर की मूर्ति रह सकती है लेकिन भगवान् नहीं रह सकते हैं।

जानती हो मेम साहब, जहाँ दुःख नहीं, प्रेम नहीं, जहाँ कर्म के साथ धर्म का मेल नहीं, वहाँ वास्तव में किसी का कल्याण होना सम्भव नहीं। लेकिन खेद इसी बात का है कि भारतवर्ष में चारों ओर बहुत से आदमी धर्म के नाम की झूठी नामावली ओढ़ कर अन्याय और अविचार को गुप्त रखते हैं। ये लोग ससम्मान भाग्य की वैतरणी पार कर सत्य और प्रेम का उपहास करते हैं। देख कर दुःख होता है कि स्वयं भगवान् बुद्ध के जीवितावस्था में त्याग और सेवा की बात जितनी प्रचारित हुई, आज उससे कहीं अधिक इन बातों का प्रचार हो रहा है। जो इस त्याग का झंडा उठाए फिर रहे हैं, वे आकंठ क्षमता की मदिरा पान कर आसक्ति में डूबे हुए हैं।

तुम्हें विदा कर हफ्ते भर बाद जब दिल्ली लौटा, सोचा था दुबारा तभी बम्बई जाऊँगा जब तुम आओगी। सोचा था, इसके बाद बम्बई से लौटते वक्त फ्रण्टीयर मेल की खिड़की के किनारे बैठ कर तुम्हें जी भर कर देखूंगा—सम्पूर्ण हृदय से तुम्हें पा सकूंगा। लेकिन भाग्य का ऐसा परिहास देखो कि एडीटर का ट्रंक-काल पा कर कांग्रेस का सेशन कवर करने के लिए फिर दौड़ कर बम्बई आना पड़ा। जिस बम्बई में पहुँच कर चिरपरिचिता तुम्हें पा सकूंगा, सोचा था, वहीं बम्बई के अपरिचितों के बीच तुम्हारे बच्चू को कई दिन रहना पड़ गया।

डुप्लीकेट फ्रण्टीयर मेल से बम्बई सेण्ट्रल स्टेशन पर उतर कर देखा—अपार भीड़। हमारी ट्रेन से जितने वी० आई० पी० आए थे, उन्हीं का स्वागत-समारोह था। साधारण एक वी० आई० पी० के आने से ही शहर में हलचल मच जाती है, फिर इस कांग्रेस सेशन के समय तो मिनिस्टरों और वी० आई० पी०ओं की भीड़ लगी थी। इसलिए बम्बई सेन्ट्रल विक्टोरिया टर्मिनस या सान्ताक्रुज में अभ्यर्थनाकामियों की भीड़ होगी इसमें आश्चर्य की क्या बात है? सिर्फ कांग्रेस अधिवेशन ही क्यों, वी० आई० पी०ओं का आना-जाना, आविर्भाव-तिरोभाव के समय, देश भर में जो दृश्य देखने को मिलता है वह भी अभूतपूर्व होता है।

कलकत्ते में, ध्यान दिया होगा, वी० आई० पी० के आने-जाने पर, कैसा जबरदस्त कार्यक्रम होता है। शाम पाँच बजे जो वी० आई० पी० दमदम में लेण्ड करेंगे,

उनके लिए दोपहर दो-ढाई बजे के बाद ही श्यामबाजार के चौराहे पर या सेन्ट्रल ऐवन्यू से गाड़ी-घोड़े या साधारण लोगों का चलना वर्जित हो जाता है। सिर्फ इतना ही नहीं, पुलिस की गाडियाँ इस तरह से दौड़-धूप करेंगी जिसे देख कर लगेगा, लड़ाई छिड़ गई है। बिना परमिट के दमदम एयरपोर्ट में कोई घुस नहीं सकता। अन्य प्लेन के स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े पैसेंजरों को जाड़ा-गर्मी-वर्षा की उपेक्षा कर लम्बा रास्ता तय करना पड़ता है प्लेन पर चढ़ने के लिए। जानती हो मेम साहब, ज्यादातर इन अनुष्ठानों का रिहर्सल होता है। किसी एक सब-इन्सपेक्टर को गला बन्द कोट पहना कर वी० आई० पी० बना कर, दमदम से अभ्यर्थना कर राजभवन के दरवाजे तक ले जाया जाता है। कम से कम लाखों लोगों के लिए असुविधा उत्पन्न किए बगैर हमारे देश के वी० आई० पी० ओं का आगमन-निर्गमन सम्भव नहीं।

एक बार सोचो जरा, कई लाख लोगों के घंटे दो घंटे काम की क्षति से कितने लाख मैन-पॉवर का नुकसान होता है। सोचो, देश भर में वी० आई० पि०ओं के आगमन-निर्गमन, स्वागत-अभ्यर्थना और देख-रेख में लाखों-लाखों पुलिस और सरकारी कर्मचारियों का कितना करोड़ घंटा नष्ट होता है। वी० आई० पि०ओं के लिए इतना समय बरबाद करेंगे तो पुलिस कब चोर-डाकू पकड़ेंगे? सरकारी कर्मचारी ही कैसे देश की शासन-व्यवस्था अटूट रखेंगे?

जो यह सब देखने के अभ्यस्त होते हैं, वे अन्य देशों की कहानी सुन कर स्तम्भित हो जाते हैं। मेरे मित्र डॉक्टर बोस कोलम्बो प्लेन से फेलोशिप पाकर रिसर्च करने आस्ट्रेलिया गए थे। सिडनी से डरविन जाते समय बोस की बगल की सीट पर एक वृद्ध आस्ट्रेलियन बैठे थे। घंटे भर अगल-बगल बैठे रहने के बाद दोनों के बीच बातचीत शुरू हुई। बोस रिसर्च करने आस्ट्रेलिया आए हैं जान कर वृद्ध खुश हुए। भारतवर्ष पर भी दोनों के बीच बहुत आलोचनाएँ हुईं। हमारे देश की नाना प्रकार की समस्याओं और योजनाओं के बारे में वृद्ध आस्ट्रेलियन का गहन ज्ञान देख कर बोस चकित रह गये थे।

डरविन में जब प्लेन उतरा, मूसलाधार वर्षा हो रही थी। प्लेन पर से उतरने के पहले वृद्ध ने बोस से कहा था, 'कालेज से तुम्हारे लिए गाडी न आए तो तुम मेरे साथ चल सकते हो। मैं तुम्हारे लिए रुका रहूँगा। कंगारू के चिन्ह का बैज लगाए मेरा ड्राइवर गाड़ी के सामने खड़ा रहेगा। खैर, पानी में ही अन्य पैसेंजरों की तरह वृद्ध भी दौड़ कर टर्मिनल बिल्डिंग में पहुँचे। बोस भी पहुँचा।

कालेज से बोस के लिये कार आई थी। यह खबर वृद्ध को देने पर उन्होंने बोस को शाम को चाय का निमन्त्रण दिया। वृद्ध का पता जानते हुए भी उनका परिचय पूछते हुए बोस को शर्म लगी। अन्त में ड्राइवर को बुला कर डॉ० बोस ने फुसफुसा कर पूछा था—'हू ईज ही?'

डॉ० बोस सुन कर चौंक पड़े। ये वृद्ध आस्ट्रेलिया के एक्टिंग प्राइम मिनिस्टर हैं। प्राइम मिनिस्टर सर रवार्ट मेंजिस कॉमनवेल्थ प्राइम मिनिस्टर्स कांफ्रेंस के लिए लदन

गये हैं और फाइनेंस मिनिस्टर ने अस्थायी रूप से प्रधानमंत्री का पद-भार संभाल रखा है। एक्टिंग प्राइम मिनिस्टर की अभ्यर्थना के लिए, सरकारी गाड़ी के एक ड्राइवर के अलावा एयरपोर्ट पर और कोई न था। किसी पैसेंजर ने उन्हें आटोग्राफ के लिए नहीं घेरा, बड़े बाजार बिग्रेड की तरह एक झुण्ड व्यापारियों का फूल की मालाएँ लिए नहीं खड़ा था, न तो स्कूल-कालेज की लड़कियाँ क्लास कट करके शंख-ध्वनि करने के लिए या लड़कों की पार्टी बैण्ड बजाने के लिये उपस्थित थी। सिर्फ इतना ही नहीं—पुलिस या सरकारी कर्मचारियों के दल कामकाज छोड़ कर एयरपोर्ट नहीं पहुँचे थे। एक्टिंग प्राइम मिनिस्टर के आने पर एक भी प्राणी का एक मिनट न तो नष्ट हुआ, न किसी को असुविधा हुई। वे लोग काम करते हैं। हम काम की भूमिका बाँधा करते हैं।

हमारे देश में प्राइम मिनिस्टर के विदेश जाने पर कोई एक्टिंग प्राइम मिनिस्टर नहीं होता है। फिर भी एक बार कल्पना करो—नेहरू जी विदेश में और सरदार पटेल या मौलाना आजाद प्रधान-मंत्री का दफ्तर सभाल रहे हैं, सेन्ट्रल कैबिनेट प्रिसाइड कर रहे हैं। क्या कभी स्वप्न में भी सोच सकती हो, ऐसे समय में सरदार पटेल कलकत्ते आए हैं और सरकारी कर्मचारियों का दल अपने-अपने कामों में व्यस्त है, मिनिस्टरों के झुण्ड राइटर्स बिल्डिंग में सिर झुकाए फाइलें देख रहे है, नोट्स लिख रहे हैं? क्या सोच सकती हो कि हजारो सुविधावादी माला हाथों मे लिए दमदम में मौजूद नहीं हैं, श्यामबाजार के चौराहे पर यथारीति ट्राम बस चल रहे हैं और सबके अनजाने में गवर्नमेण्ट हाऊस का एक ड्राइवर उन्हें दमदम से राजभवन ले आया?

पृथ्वी के अन्यतम उन्नत देश, स्कैण्डीनेवियन योरोप के शिरोमणि स्वीडेन के प्राइम मिनिस्टर मिस्टर ऑरलैण्डर के साथ भेंट करने गए थे विश्व प्रसिद्ध अमेरिकन सवाददाता मिस्टर जॉन गन्थर। घर के एक छोटे से कमरे में सामने रखी फाइलों को एक तरफ सरकाते हुये जिन्होंने स्वागत किया वे ही प्राइम मिनिस्टर ऑरलैण्डर थे। सिक्युरिटी पुलिस, प्राइवेट सेक्रेटरी, पर्सनल असिस्टेण्ट के अभेद दुर्ग का अतिक्रमण करना तो दूर की बात स्वीडिश प्राइम मिनिस्टर के साथ भेंट होने से पहले भी बैरा, चपरासी या नौकर तक नही मिला था गन्थर को। और हमारा देश?

अभी बम्बई कांग्रेस में अनेक लीडरों को अलग-अलग मन्त्रोचारण करते देखा। साधारण कांग्रेस सेवकों से बहुत दूर विख्यात होटलों के शीततप-नियन्त्रित कक्षो के, आइवरी टावरों में रखा गया था वी० आई० पी० कांग्रेसियों को। ए० आई० सी० सी० की चायपान-व्यवस्था भी बड़े यत्न से दो भागों में विभाजित थी। जिन दिनो कांग्रेस में सोशलिज्म का नारा नहीं लगता था तब जमीन पर दरी बिछा कर सभी कांग्रेसी एक साथ बैठने में हिचकना दूर आनन्द का अनुभव करते थे! और आज?

जानती हो मेम साहब, यह सब देख कर मन ही मन डर-सा लगता है।—ये लोग मन्दिरों का निर्माण करेंगे, पुजारी की नियुक्ति करेंगे, मूर्ति प्रतिष्ठित करेंगे, लेकिन भगवान् को न ला सकेंगे। ये लोग कारखाने स्थापित करेंगे, स्कूल-कालेज खोलेंगे, रास्ते बनवाएँगे, लेकिन शायद सहानुभूति की कमी से, मर्यादा देने की कजूसी के कारण, मनुष्य

के बीच मनुष्यों-सा घुल-मिल सकने का संकोच, इनके हाथों कभी मनुष्य की रचना करने न देगा। कर्म के साथ आदर्श जुड़ा होने के कारण अतीत में जो भारतवर्ष सभ्यता के शीर्ष स्थान पर था, वह दिन क्या कभी उसके लौटेंगे ? जरूर लौटेंगे।

मेरा भरपूर प्यार स्वीकार करना।
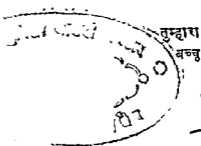
तुम्हारा
बच्चु

म साहब,

दुःस्वप्न की तरह भारतीय इतिहास को करवट बदलते देखा है मैंने। इसीलिए इस टना-प्रवाह के बीच तुम्हें याद करने तक का समय मेरे पास न था। अपने तक को भूल गया था। लेकिन आज अपने को क्लान्त पा रहा हूँ। जब चारों तरफ की उत्तेजना शिथिल पड़ गई, तब तुम्हारे अतिरिक्त किसी अन्य की बात सोच तक नहीं पा रहा हूँ। अचानक अपने को भीषण कमजोर और असहाय पा रहा हूँ। इस दुर्बलता एवं असहायता से तुम्हारे अलावा और कौन मुक्ति दिला सकता है, बोलो ? इसीलिए तो इच्छा हो रही है, दौड़ कर तुम्हारे पास चला जाऊँ। लग रहा है, दौड़ कर किसी बोइंग पर चढ़ बैठूँ। फिर जिस समय लंदन एअरपोर्ट के नार्थ साइड में प्लेन रुकेगा, तब सीढ़ी से न उतर कर कूद पड़ूँ और तुम्हें पकड़ लूँगा। इच्छा हो रही है, तुम्हें साथ लेकर पिकाडेली सर्कस के किनारे टहलूँ, केनसिंग्टन गार्डन में सारी शाम घूमूँ, अकारण ही अण्डर ग्राउण्ड पर चढ़ कर घूमता रहूँ और फिर तुम्हारे कमरे में लौट कर तुम्हारी आँखों में अपनी छवि निहारता बैठा समय काट दूँ।

मन मिजाज ठीक नहीं है, फिर भी घूम-फिर रहा हूँ, कामकाज कर रहा हूँ। इसी मध्य एक अन्य कारण से मन खराब हो गया है।

...कुछ साल पुरानी बात है। तब तुम मेरे जीवन में नहीं आई थीं, मैं स्वाधीन था। दार्जिलिंग के एक चैरिटी-शो में तन्द्रा सान्याल से मेरा परिचय हुआ। पहली ही भेंट में मन को हिला देने के लिए *अगाध सम्पदा थी, तन्द्रा के पास। मेरा मन नहीं* हिला था, ऐसा कहूँगा तो तुमसे झूठ बोलना होगा।

चैरिटी प्रोग्राम करने के लिए तन्द्रा के कालेज से गये दल ने दार्जिलिंग में खूब नाम कमाया। अन्य बहुत लोगों की तरह मैं भी उनका पृष्ठपोषक बन बैठा। एक दिन बोटानिकल गार्डन में घूमने गया तो देखा तन्द्रा लोग भी हैं। तन्द्रा उस दिन क्यों मेरा हाथ पकड़ कर मुझे घसीट ले गई थी, आज भी नहीं जानता हूँ। बात-चीत बहुत हुई हो, ऐसा भी नहीं। पर मेरा एक हाथ अपने हाथों में पकड़ कर बड़ी देर तक दौड़ाती रही। सिर्फ याद है, विदा लेते समय मुझसे बोली थी, 'इस तरह से मत देखो। यू

अण्डरस्टैण्ड ह्वॉट आई मीन ?'

कलकत्ते से दार्जिलिंग के ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ने से मन भी कैसा-कैसा हो जाता है। दार्जिलिंग से उतरने पर सब ठीक भी हो जाता है। कलकत्ता लौटने के बाद तन्द्रा भी कटी जा रही थी। काफी दिनों बाद रायल हार्टिकलचरल गार्डन के ऐन्युअल शो में एक एअरफोर्स ऑफिसर के साथ तन्द्रा दिखाई दी। मैं देख कर भी न देखने का बहाना बना कन्नी काट कर खिसकने जा रहा था कि बाधा पड़ी। अचानक मेरी बाँह पकड़ कर खींचती हुई बोली....'दार्जिलिंग के उतने आनन्द भरे दिनों के बाद भी तुम मुझे पहचान नहीं पा रहे हो? क्या हो गया? आई सपोज यू हैव नॉट लॉस्ट ईयूर मेमोरी, बच्चू ?'

मैंने किसी तरह सिचुएशन संभाला तो तन्द्रा ने परिचय करवा दिया...'बच्चू, मीट माई फ्रेण्ड स्क्वाड्रन लीडर इन्द्रजीत।' बाद में सुना था तन्द्रा सान्याल मिसेज इन्द्रजीत बनी बंगलोर में हैं। एक बार पूना में उससे मेरी मुलाकात हुई थी। उसी के कुछ दिनों बाद आकस्मिक दुर्घटना में इन्द्रजीत की मृत्यु हो गई। केवल पति की मृत्यु ही नहीं, उसका प्राणहीन देह तक तन्द्रा न पा सकी। अरब सागर के गहन गह्वर में इन्द्रजीत कहाँ छुप गया, कोई न जान पाया।

घर वालों की इच्छा के विरुद्ध तन्द्रा ने शादी की थी। इसीलिए अभिमानवश वह कलकत्ते न लौट कर दिल्ली चली आई। डिफेन्स कालोनी के एक मकान में गृहस्थी सजा कर उसने मुझे लिखा था, 'बच्चू, आज अपना कहने को मेरा कोई नहीं। इन्द्र के यूनीफार्मों को सजा-सँवार कर रखने और उसकी फोटो के सामने बैठे रहने के अलावा और कोई काम नहीं। अगर सम्भव हो तो आना। हो सकता है, कुछ समय के लिए अच्छा ही लगे।'

मैं गया था—एक बार नहीं बहुत बार। कभी एक घण्टे रहा, कभी सारे दिन, सारी शाम रहा। विधवा होते हुए भी तन्द्रा के शरीर में यौवन का ज्वार था, निष्प्रभ होने पर भी आँखों में बिजली-सी चमक थी। उसके मुँह की ओर देखने में मुझे सकोच होता, डर लगता। मैं उसके पास जाकर भी सामीप्यता से शर्माता था, पास जाता तो घनिष्ट होने से डरता। फिर भी जाता था।

एक दिन लगभग जबरदस्ती ही तन्द्रा को लेकर मार्निंग शो में एक बंगला पिक्चर देखने गया। हॉल से निकल कर कार में बैठते समय एक महाशय ने तन्द्रा को खींचते हुए कहा, 'हैलो, हाउ आर यू ?'

मैंने कार में बैठ कर सिगरेट सुलगाया। दो-चार कश खीचते ही तन्द्रा आकर मेरी बगल में बैठी। मेरे कुछ न पूछने पर वह बोली, 'वे हैं इन्द्र के एक दोस्त स्क्वाड्रन लीडर मित्रा। हम लोग बहुत दिनों तक जोधपुर में एक साथ थे।'

कुछ ही दिनों में मैंने आविष्कार किया कि मित्रा तथा और भी कुछ ऑफिसर, डिफेंस कॉलोनी वाले तन्द्रा के फ्लैट में खूब आ-जा रहे हैं। मैंने भी तन्द्रा के यहाँ धीरे-धीरे जाना कम कर दिया। अन्त में कैसे और क्यों तन्द्रा के फ्लैट पर जाना बन्द किया था, याद नहीं। लेकिन यह याद है कि बहुत दिनो बाद हाल-चाल लेने के इरादे

से गया तो दरवाजा बन्द देखा। माली बोला...मेम साहब बम्बई चली गई है। समझ गया, इन्द्रजीत के इंश्योरेंस और प्रावीडेण्ट फण्ड की मोटी रकम पाकर तन्द्रा के बहुत दोस्त बन गए हैं और उन्हीं की सलाह से उसने दिल्ली छोड़ी है।

जानती हो मेम साहब, अभी कुछ दिनों पहले मालूम हुआ कि तन्द्रा की मृत देह मिली है दिल्ली के एक यशस्वी समाज-सेवी के ऑफिस में। खबर सुन कर चौंक पड़ा था। संवाददाता होने के कारण घटना की मोटे तौर से एक तस्वीर आँखों के आगे खिंच गई। फिर भी एक बार चेक-अप करने के इरादे से पुलिस-सुपर के पास गया था। सुन कर चौंक पड़ा था कि, पांच साल में उसने तीन शादियाँ की थी। सिर्फ इतना ही नहीं—समाज के शीर्ष स्थान पर पहुँच कर अपनी प्रभुता विस्तृत की थी। और इन्हीं रथी-महारथियों के काम-क्रोध-लोभ और सर्वोपरि राजनीति के खेल में तन्द्रा की मृत्यु हुई है—पुलिस ऐसा ही सन्देह कर रही है।

तन्द्रा अपने को बहुत चाहती थी—चाहती थी इस पृथ्वी को। वह चाहती थी, जीवन के अन्तिम क्षण तक हँसते-हँसते जीवन का उपभोग करेगी, हँसते-खेलते सारा दुःख भुला देगी। लेकिन न जाने क्यों वह सफल न हो सकी। जीवन से प्यार करती थी, इसीलिए क्या उसे दण्ड मिला। या और कुछ ?

तुम्हारा

बच्चू

मेम साहब,

तुम्हारी चिट्ठी पाकर बड़ा चिन्तित हो रहा हूँ। फिर भी हँसी आ रही है, मजा भी आ रहा है। केम्ब्रिज में तुम्हे अच्छा लग रहा है, जान कर खुश हुआ। मुझे भी अच्छा लगा था। ट्रिनिटी या किंग्स कालेज की गत कई शताब्दियों का इतिहास मेरी भी आँखो के आगे जीवन्त हो उठा था। छात्रों को देख कर मन ही मन शायद कुछ ईर्ष्या भी हुई थी, खुशी भी हुई थी। लेकिन तुम्हारी तरह स्वप्न देखने का साहस या क्षमता मुझमे नहीं थी। अपने लड़के को वहाँ पढ़ाओगी—यह तुमने तय कर लिया है, जान कर मन ही मन मजा ले रहा हूँ। तुमने लिखा है तुम्हारा लड़का प्रोफेसर के साथ तर्क करते हुए क्लास से बाहर निकलेगा और हम दोनों दूर से यह देखेंगे। तुम्हारा लड़का केन नदी में नौका-विहार करते समय लिट्रेचर या हिस्ट्री पर दोस्तों के साथ आलोचना करेगा और हम दोनों नदी के किनारे घास पर बैठे वह आलोचना सुनेंगे। सिर्फ इतना ही ? तुमने तय कर लिया है कि डिबेट में तुम्हारा बेटा लीडर ऑफ दी ऑपोजीशन होकर मिस्टर स्पीकर से प्राइम मिनिस्टर के विरुद्ध अभियोग पेश करेगा और स्पीकर उसकी प्रशंसा करते हुए बोल पड़ेंगे तो तुम और मैं खुशी के मारे पीछे से तालियाँ बजाएँगे।

मन ही मन तुम इतना बढ़ चुकी हो, मैं जानता नहीं था, समझा भी नहीं था।

तुम मुंह से चाहे कुछ न कहो, मन के कैन्वस में सपनों की तूलिका से भविष्य का चित्र ठीक ही चित्रित करती चल रही हो। इसीलिए, आज नये सिरे से फिर प्रतिज्ञा करता हूं, तुम्हारे जीवन को मधुर बना दूंगा, तुम्हें सुखी करूंगा, तुम्हारे सपनों को मैं सार्थक बनाऊंगा।

....कुछ दिनों पहले कुछ दोस्तों के चक्कर में पड़ कर होटल इण्टरनेशनल में कैण्डिल लाइट डिनर-डांस प्रोग्राम में गया था। रात के नौ बजे प्रोग्राम शुरू होने पर भी काम-काज निपटा कर मैं जब पहुँचा तब साढ़े दस बज चुके थे। शैम्पेन पीना तब तक खत्म न होने पर भी डिनर लगभग खत्म हो चुका था। डांस भी शुरू हो गया था। कैण्डिल लाइट की धुंधली रोशनी में दो-दो जने आपस में लिपटे नाच रहे थे। लाउडस्पीकर पर खूब बारीक स्पैनिश मियूजिक का स्वर गूंज रहा था। मैं खाते-खाते ये सब देखता मजा ले रहा था। आबो-हवा भी मतवाली हो रही थी। तुम रहतीं तो उस रात शायद नाचता। अन्य किसी लड़की के साथ नाचने का दुस्साहस मुझमें नहीं है, इसीलिए चुपचाप बैठा-बैठा शैम्पेन का गिलास हिला-डुला रहा था और नाच देख रहा था।

चारों तरफ नजर दौड़ाई तो सभी मेजें खाली थीं, सब नाच रहे थे। पीछे की तरफ अच्छी तरह ताक कर देखा तो दूर एक जोड़ा बैठा था। धुंधलके में ठीक से पहचान न सकने पर भी, महाशय धोती-कुर्ता पहने हैं ये समझ गया। हमारे देश की लड़कियों में असीम क्षमता है—वे साड़ी पहन कर नाच लेती हैं, लेकिन पुरुष लोग धोती पहन कर नहीं नाच सकते हैं। इसीलिए उस रात को धोती पहने महाशय को देख कर मुझमें जिज्ञासा जागी।

एक राउण्ड नाच खत्म हुआ, म्यूजिक रुक गया, बत्ती जल उठी। लोग अपने-अपने निश्चित स्थानों पर शैम्पेन के गिलास लेकर बैठ गये। जब सब बैठ गये तब मैं उठा उनमें कोई परिचित चेहरा ढूंढने। दो-एक कदम बढ़ते ही मिस्टर एंड मिसेज सहाय दिखाई पड़ गये। उसके बाद रामकृष्ण दम्पती, मिस्टर व मिसेज तनेजा, भरद्वाज मिस सुन्दरी सिनहा और अनेकों लोगों से मुलाकात हुई। हर मेज पर रुक कर दो-चार मिनट बात करके पीछे जाते न जाते फिर बत्ती बुझ गई। लाउडस्पीकर पर हवाइयानी गीटार बज उठा। कैण्डिल लाइट के आधे अँधेरे में नाच शुरू हुआ तो मैं एक खाली मेज के सामने बैठ गया।

थोड़ी देर में चुटकी बजा कर बैरे को बुलाते ही वह ड्रिंक दे गया। एक घूंट पीकर लाइटर से सिगरेट जलाने लगा तो अचानक बगल वाली मेज से बंगला में बात होते सुन कर मैंने मुड़ कर देखा। बगल वाली मेज पर बैठे थे प्रोफेसर चटर्जी। पहले तो अपनी ही आँखों पर विश्वास नहीं हुआ, लेकिन दो-चार बार देखने के बाद अविश्वास करने का कोई कारण न रहा। सगिनी उन्हीं की कोई छात्रा है, यह समझते देर न लगी। उन दोनों की मीठी-मीठी बातें मुझे सुनाई पड़ रही थीं।....जानती हो मीरा। पहले ही दिन तुम्हारे क्लास में जाते ही, तुम मुझे अच्छी लगी थीं। इसीलिए तो तुम्हें अलग बुला कर नोट्स देता था....अचानक लाउडस्पीकर पर हवाइयानी गीटार की धुन

तेज हो उठी। प्रोफ़ेसर की अगली बात न सुन सका।

प्रोफ़ेसर चटर्जी की 'छात्रा-प्रीति-कथा' कलकत्ते के कालेज स्ट्रीट मोहल्ले के रेस्टूरेण्टों में छात्र-छात्राओं के लिए सरस आलोचना का विषय है। अगर पहले तुमसे यह सब बतलाता तो तुम मुझ पर दोषारोपण करतीं। कहतीं, संवाददाता हर बात में बुराई ढूंढा करते हैं। लेकिन बाद में जब मिसेज दास गुप्ता के मुंह से सुना था कि प्रोफ़ेसर चटर्जी के साथ कोई भी लड़की अकेले लिफ्ट में नहीं चढ़ती है, किसी भी लड़की को छुए बगैर वे बात नहीं कर सकते हैं, तब तुम विश्वास करने को बाध्य हुई थीं। उसके बाद मैत्रेयीदी से तो सुना था कि उनके क्लास की सुलेखा मित्र के साथ प्रोफ़ेसर की मित्रता और मिलना-जुलना देख कर चारों तरफ रट गया था कि उनकी शादी होगी। इस तरह का मिलना-जुलना और शादी की अफवाहें एक बार नहीं, बहुत बार रट चुकी हैं।

प्रोफ़ेसर चटर्जी ठहरे मजे हुए शिकारी। एक शिकार करके वह बहुत दिनों तक निश्चिन्त नहीं रह पाते है। प्रकृति के ऋतु-परिवर्तन की तरह प्रोफ़ेसर चटर्जी की छात्रा-प्रीति बदल जाती है। तुम विश्वास मानो मेम साहब, पुरी में प्रोफ़ेसर चटर्जी के साथ जिसको देखा था, अगले साल दार्जिलिंग के बार्च हिल में उसके साथ घूमते नहीं पाया था। उस दिन रात को दिल्ली के होटल में कैण्डिल लाइट डिनर-डांस मे जिस मीरा को ले आए थे, उसी मीरा के भजन प्रोफ़ेसर अगले जाड़े में नहीं सुनेंगे, यह मैं निश्चित रूप से जानता हूँ।

देखो मेम साहब, बंगला प्रान्त के असंख्य छात्र-छात्राओं की भाँति मैं भी प्रोफ़ेसर चटर्जी को उनके पाण्डित्य के लिए श्रद्धा करता हूँ, लेकिन दस फार नो फरदर। अपने घर का चौखट तक मैं उन्हें पार करने नहीं दे सकता हूँ। उस दिन रात को कुछ देर बाद देखा था, मीरा को घनिष्ठ रूप से अपने से चिपटा कर प्रेम-भरी कविताएँ सुना रहे हैं, प्रोफ़ेसर डाक्टर चटर्जी, एम० ए०, पी-एच० डी०, पी० आर० एस०।

मध्यरात्रि में बड़ी देर से सभा भंग हुई। मैंने निःशब्द अनुसरण करके देखा, प्रोफ़ेसर और मीरा सेकेण्ड फ्लोर के एक कमरे में घुस गए। नीचे आकर होटल के रिसेप्शन में पूछा—'प्रोफ़ेसर किस नम्बर के कमरे में हैं और उनका डिपार्चर कब होगा?' रजिस्टर उलट कर देखने के बाद रिसेप्शनिस्ट बोला, 'एस, प्रोफ़ेसर एण्ड मिसेज चटर्जी—रूम नम्बर थ्री-फोर-सिक्स।....दे हैव रिजर्वेशन अप टू नेक्स्ट सण्डे।' मैं धन्यवाद जता कर विदा हुआ।

इण्टरनेशनल कलचरल एसोसिएशन की चेष्टा से प्रोफ़ेसर चटर्जी के एक स्वागत सभा में योगदान के लिए मुझे निमन्त्रण-पत्र मिला। मैं गया नहीं, लेकिन दूसरे दिन सुबह सभी अखबारों में रिपोर्ट निकली थी। सभापति के भाषण में डॉक्टर राव ने कहा था—'पढ़ाई-लिखाई, रिसर्च और छात्र-छात्राओं के कारण प्रोफ़ेसर चटर्जी को अपनी गृहस्थी जमाने का आज तक मौका नहीं मिला।' कुछ ही दिनों में वे लेक्चर टूर में लण्डन जा रहे हैं यह भी अखबार में निकला था। तुम उसकी मीटिंग में न जाओ तो ही अच्छा,

लेकिन नितान्त अगर उसे सुनना ही चाहो तो बिल्कुल पीछे की लाइन में सिर ढँक कर बैठना और भाषण खत्म होने के बाद एक सेकेण्ड भी मत रुकना। अगर जरूरत समझो तो अपनी घनिष्ठ सहेलियों को भी घूंघट काढ़ कर बैठने के लिए कहना—समझीं?

प्यार सहित!

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

कुछ दिनों से दिल्ली में कितनी भयानक गरमी पड़ रही है, इसकी कल्पना भी अब तुम नहीं कर सकती हो। एक तो तुम पास नहीं हो, प्रत्याशाहीन शाम की आस लगाए दोपहर जैसे कटती नहीं; इसीलिए हृदय में एक जलन-सी हर समय रहती है। उस पर इस असहनीय भयानक गरमी से सारा शरीर जलने लगा है। रवीन्द्रनाथ का गाना है न 'ऐई श्रावनेर बूकेर भीतरे आगुन आछे'—मेरे तो इस आषाढ़ के महीने में ही सीने में आग जल रही है। नहीं जानता हूँ, श्रावण में क्या होगा। अच्छा ये बताओ—तुम्हारे हृदय में भी आग जल रही है? मन में एक विराट् शून्यता का बोध नहीं करती हो?

इसी बीच एक दिन अचानक तुम्हारे भाई साहब का टेलीग्राम मिला—'एटेण्ड दिल्ली एक्सप्रेस सनडे'। स्टेशन पर पहुँच कर देखा—तुम्हारे भइया, साथ में भाभी, बबुआ और छोटी बहू भी आई है। कालका मेल में सीधे रिजर्वेशन न मिलने की वजह से वे सब दो दिन मेरा आतिथ्य उपभोग करते रहे। तुम्हारी छोटी बहन को छोटी बहू कह कर दो-चार जनों से परिचय करा देने पर वह खूब गुस्सा हुई। मुँह चिढ़ा-चिढ़ा कर और चिकोटी काट काट कर, दो ही दिन में उसने मुझे खत्म कर दिया। मैं कई बार बोला, 'छोटी बहू, अब तुम बड़ी हो गई हो, कालेज में पढ़ती हो, मेरे जैसे शरारती रिपोर्टर के साथ यह सब करोगी तो तुम्हारी बदनामी होगी।'

और भी डर दिखाया! बोला—'हो सकता है इसी बदनामी की वजह से मेम साहब से शादी करना ही कष्टकर हो जाए।' मेरी बात सुन कर तुम्हारी भाभी और छोटी बहू दोनों हँस उठीं; तुम्हारे भाई मुँह फेर कर बैठ गए। लेकिन ड्रेसिंग टेबिल के शीशे पर हठात् नजर पड़ते ही देखा वे भी हँस रहे हैं। मेम साहब, वे सब हँसे क्यों थे—बता सकती हो? क्या वे तुम्हारे विवाह के लिए जरा भी चिन्तित नहीं?

कालका मेल में चढ़ाने के बाद, ट्रेन छूटने से दो-चार मिनट पहले तुम्हारी भाभी ने मेरे कान में कहा—'वापसी के विलायत से लौटने के बाद, पिता जी और माता जी अब देर नहीं करेंगे। तैयार रहिएगा।' बात की तह तक पहुँचने से पहले ही गार्ड साहब

ने सीटी बजा दी, ट्रेन छूट गई। देखा, हँसते-हँसते तुम्हारी भाभी रूमाल हिला रही हैं और छोटी बहू ने फिर एक बार मुँह चिढ़ाया। जानती हो मेम साहब, उस रात तुम्हारी भाभी की बातें सुनने के बाद लग रहा है, अचानक गरमी कम हो गई है, देह और मन की जलन-यन्त्रणा भी बहुत कम है। क्यों ऐसा हुआ, कह सकती हो?

कुछ दिनों पहले सप्रू हाउस में एक सर्वभारतीय संगीत-सभा में गया था। इण्टरवेल के समय लाउंज में खड़ा सिगरेट पीता हुआ कुछ दोस्तों के साथ गप्पशप कर रहा था। पास लगी भीड़ की तरफ देखते ही देखा मिसेज पद्मिनी पद्मनाभ को घेर कर कुछ लड़के-लड़कियाँ खड़ी हैं। सुना, एक कलचरल डेलीगेशन में बाहर जाने के लिए वे दिल्ली आई हैं। यहाँ भी गाना गाने के लिए प्रबन्धकगण पकड़ लाए हैं। भीड़ धकेलता मैं आगे बढ़ कर बोला, 'मैं भी हाजिर हूँ।' पद्मिनी भाभी मुझे देख कर जैसे हाथों मे स्वर्ग पा गईं। 'प्लीज एक्सक्यूज मी' कह कर भीड़ के हाथों से अपने को उद्धार कर मुझे एक तरफ ले जाकर बोलीं, 'सिर्फ घंटे-डेढ़ घंटे पहले आई हूँ। पालम में उतरते ही तुझे फोन किया था, लेकिन नो-रिप्लाई मिला।'

मैं बोला, 'भाभी, तुम यहाँ आ रही हो मैं नही जानता था, और आज मैं इस म्यूजिक कान्फेन्स में आऊँगा यह भी तय नही था। इतवार की सुबह अकेलापन अच्छा नहीं लगा, इसीलिए चला आया। अब देख रहा हूँ, आकर अच्छा ही किया है। रविवार बढ़िया बीतेगा, क्यों भाभी?'

खुशी से हँस कर भाभी बोलीं, 'सौ बार बढ़िया बीतेगा।' इण्टरवेल खत्म हुआ, अन्दर गया। दो लोगो के बाद पद्मिनी भाभी ने मीरा के दो भजन गाए। सारे दर्शक मुग्ध हो गए, उनका गाना सुन कर, मैं तो तालियाँ बजाना ही भूल गया। कुछ देर बाद गेट-कीपर ने आकर इशारा किया तो देखा पद्मिनी भाभी दरवाजे पर खड़ी हैं।

पद्मिनी भाभी दिल्ली में सारे दिन रहीं। रात के प्लेन से योरप के रास्ते कायरो चली गईं। सारे दिन हमने खूब हो-हल्ला किया, खूब घूमे, खूब खाया। पालम पहुँच कर विदा लेने से पहले पद्मिनी भाभी बोलीं, 'बच्चू, तुझ-सा भाई न रहता तो दिल्ली मेरे लिए रेगिस्तान हो जाती।'

मैं बोला, 'तुम्हारा प्यार न मिलता तो मेरा जीवन भी अपूर्ण रह जाता।'

भाभी के विदा लेने पर मैं एयरपोर्ट के रेस्टूरेन्ट में चाय पीने बैठा। चुपचाप बैठा-बैठा पद्मिनी भाभी से पहली बार मेरे परिचय की बातें याद आईं। याद आया उनका आँसू भरा इतिहास।

लगभग पाँच साल पहले, अचानक जरूरी कारण से मुझे नाइट स्काई-मास्टर प्लेन पर चढ़ना पड़ा मद्रास के लिए। प्लेन पर चढ़ कर में एक सुदर्शना दक्षिण भारतीय महिला थी जो यौवन पार थी बाहर देखने की वजह से पहले नहीं देख पाया था, बाद में बेल्ट बाँधते वक्त चेहरा देख कर लगा, कहीं देखा है।

कुछ ही देर में प्लेन पालम की धरती छोड़ ऊपर

देने के बाद छोटी सी एक बत्ती के अलावा बाकी बत्तियाँ बुझा दीं, इशारा किया सोने का। नींद न आने पर भी ऊपर के रैक से एक तकिया उतार कर सिर के नीचे रख कर तिरछा होकर लेट गया। कब चुपचाप नींद आ गयी थी, न जान पाया। न जाने कैसी फुस-फुस की आवाज सुन मेरी नींद खुल गई। आँख खोल कर देखा—सारे प्लेन के लोग गहरी नींद मे सो रहे हैं। कुछ ही देर मे समझते देर न लगी कि मेरे बगल की महिला ही रो रही है। पहले कुछ हिचकिचाया। बाद में सारा संकोच त्याग कर पूछ बैठा, 'आपको क्या हुआ है ? तबियत खराब लग रही है ?'

रूमाल से आँखें पोछ, अपने को किसी तरह सँभालते हुए महिला बोली—'कुछ नही हुआ है। मैं ठीक ही हूँ।'

बहुत धीरे से मैं हँसा।

'आप हँसे क्यों ?' मुझसे सहयात्रिणी ने प्रश्न पूछा।

'अभी तक जानता था, मनुष्य स्वाभाविक अवस्था में रो नही सकता है। मन में कोई दुःख न हो तो सुना है आँखों में आँसू नही आते हैं। आज इसीलिए आप से नई बात जान कर हँसी आ गई।' मैंने बड़े अदब से कहा।

हल्की-सी रोशनी में लगा भद्र-महिला के चेहरे पर हँसी की झलक दिखाई पड़ी। बोली—'उम्र में छोटे होने पर भी देख रही हूँ आपको धोखा देना मुश्किल है।'

इसी तरह धीरे-धीरे उस रात हम दोनों का परिचय हुआ, दोनों ने दोनों के सुख दुःख की कहानी सुनी थी।

काफी रात को इण्डियन एयरलाइंस के आतिथ्य स्वरूप नागपुर एयरपोर्ट में वेजिटेबिल चॉप्स खाने की इच्छा न हुई। मेरी सहयात्रिणी बोली—'क्या खाएँगे बताइये।'

धन्यवाद देते हुए मैंने कहा—'नहीं, कुछ नहीं।'

'नही क्यों ? कुछ तो खाना ही पड़ेगा।'

फिर एक बार मना किया। इस बार महिला बोलीं—'मैं तुमसे उम्र में बड़ी हूँ न। गुरुजनों की बात सुननी चाहिये। अब बताओ क्या खाओगे ?'

हँसते-हँसते एक नही, दो चाकलेट बार आइसक्रीम मुझे मिलीं।

कुछ देर बाद हम फिर प्लेन पर चढ़े। यात्रियों को सोते देर न लगी। जगे रहे सिर्फ हम दोनों। सहयात्रिणी सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती पद्मिनी पद्मनाभ मेरी पद्मिनी भाभी बनी और मैं बन गया उनका छोटा भाई बच्चू।

उसी दिन रात के आखिरी प्रहर में पद्मिनी भाभी ने कहा था, 'अगर किसी दिन मौका मिला, तब तुम्हे अपनी आँसू भरी कहानी सुनाऊँगी।'

पद्मिनी भाभी के जीवन का इतिहास जानने के लिए बहुत दिनों तक प्रतीक्षा नहीं करना पड़ा। मद्रास का काम-काज खत्म कर दिल्ली लौटने के पहले दिन, शाम को पद्मिनी भाभी से विदा लेने गया। मद्रास त्याग की अनुमति नहीं मिली। माउण्ट रोड का छोड़ मैं भाभी के घर आया। मीरा का भजन गाते-गाते अचानक रुक गईं, पद्मिनी

भाभी ! बोली, 'अच्छा बच्चू, यह बताओ, इस तरह कब भगवान् के आगे आत्म-समर्पण कर सकूंगी ?'

जानती हो मेम साहब, मुझसे जरा-सी समवेदना पा पद्मिनी भाभी ने अपने आँसुओं की कहानी सुनाई थी। सुन कर आश्चर्य हुआ था—मिस्टर पद्मनाभ मिनिस्टर बन कर दिल्ली आने के बाद एक सिन्धी लड़की के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बना बैठे। उन दोनों की घनिष्ठता बढ़ने के साथ-साथ पद्मिनी भाभी की अवहेलना भी बढ़ने लगी। मिस्टर पद्मनाभ ने विदेश यात्राओं में भी उस लड़की को साथ ले जाना शुरू किया। भाभी को सब कुछ पता था, पति को उन्होंने सावधान भी किया था, लेकिन कुछ हुआ नहीं। अन्त में एक दिन पद्मिनी भाभी बोली थीं, 'तुम इस लड़की को लेकर और आगे बढ़ोगे तो मैं दिल्ली के सभी लीडरों से तुम्हारी कहानी बता दूँगी।' मिस्टर पद्मनाभ पत्नी की बातों से सावधान नहीं हुये थे लेकिन पद्मिनी भाभी पति की बदनामी न रटा सकी, पति के विरुद्ध वह किसी से शिकायत न कर सकीं।

पद्मिनी भाभी स्वयं ही धीरे-धीरे पति के रास्ते से दूर हट गई थीं। पत्नी के लिए पति का कोई आग्रह नहीं दिखाई पड़ा। पति-परित्याग के बाद पद्मिनी भाभी ने संगीत में खोकर अपना दुःख भुला दिया था। अतीत में प्रतिष्ठित गायिका पद्मिनी भाभी फिर नये सिरे से सुप्रतिष्ठित और सुप्रसिद्ध हुई थीं।

उस दिन रात को एयरपोर्ट के रेस्टूरेण्ट में बैठा-बैठा पद्मिनी भाभी की यही कहानी मुझे फिर याद आ गई। बड़े-बड़े नेताओं की अन्दरूनी कहानियाँ सुन कर लज्जा और घृणा से मेरा सारा मन न जाने कैसा होने लगता है। मिस्टर पद्मनाभ के कितने भाषण सुन चुका हूँ, रिपोर्ट भी कर चुका हूँ। लेकिन उन्हे देखते ही मेरी आँखों के आगे, पद्मिनी भाभी का चित्र खिंच जाता है। तानपूरा हाथ में लेकर वह मीरा का भजन गा रही हैं और उनकी दोनों आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है।

जानती हो मेम साहब, पद्मिनी भाभी को देख कर लगता है, उन्हे दुःख मिला है, इसीलिए शायद इतने दर्द से गा लेती हैं। सारे देश के लोग पद्मिनी पद्मनाभ के गीत सुनते हैं, उनका नाम सुनते हैं लेकिन क्यों और किस तरह इतना दर्द घुला रहता है उनके गानों में—यह सब खबरें कोई नहीं जानता है। मन के एक दुर्बल मुहूर्त में जरा-सी समवेदना पा कर उन्होंने मुझे अपनी जीवन कहानी सुनाई थी। तुम आओगी तो तुम्हें एक बार मद्रास ले जाऊँगा। देखना, छोटी बहन जैसा सम्मान और प्यार देकर कैसे तुम्हे वरण करके घर ले जाएँगी।

बड़ी चिट्ठी डालना। प्यार सहित—

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

असहनीय गरमी के बाद दिल्ली में बडे धूमधाम से वर्षा आई है। आकाश मेघाच्छन्न है तो क्या, चारों तरफ सुन्दर हरियाली का मेला-सा लगा है। शीर्णा-रुग्णा-क्षीणधारा यमुना तक वर्षा का स्पर्श पा अष्टादशी-सी भरपूर हो उठी हैं। जब चारों तरफ के रूखेपन को विदा कर सद्यस्नाता प्रकृति आत्म प्रकाश कर रही है, ठीक तभी तुम्हारे प्यारे हाथों की लिखी सुन्दर चिट्ठी मेरे हाथों में आई। सारा रूखापन दूर हटा कर मेरे मन को उसने हरे आवरण से ढँक दिया।

उस दिन दोपहर को सारे किताब-कागज हटा कर मैं सिर्फ तुम्हारी चिट्ठी ही पढता रहा। लगा इतनी प्यारी, इतनी सुन्दर चिट्ठी इससे पहले तुमने कभी नहीं लिखी।

रविशंकर का हेम विहाग राग का लॉग-प्लेइंग रेकार्ड लगाने के कुछ ही मिनटों में मैं सो गया। टाइपराइटर खुला पड़ा था, कागजात भी चारों तरफ फैल रहे थे। यहाँ तक कि सोफे पर उतार कर रखा सूट-टाई तक ठीक से न रख सका था। सोचा था, म्यूजिक खत्म होने पर सब सँभाल कर रखूंगा। फिर तुम्हारे यहाँ जाऊँगा।

मेरे पहुँचने का समय बीत गया तो टेलीफोन पर तुम्हें 'नो-रिप्लाई' मिला। बाद में मथुरा से पूछने पर तुम्हें पता चला कि मैं सो रहा हूँ। हालांकि इतना सब मैं जानता तक नहीं, उसके बाद तुमने हमारे यहाँ आकर कमरा ठीक किया, रफ कॉपी देख कर वीकली डायरी का बाकी हिस्सा टाइप किया, आर्डर देकर दोनों के लिए खाना मँगाया है—यह भी मैं नहीं जान सका। उसके बाद जब मेरे माथे पर हाथ फेरते हुये तुम गाने लगी तो मेरी नींद कुछ कम हुई, पर खुली नहीं। करवट बदल कर लेटते वक्त लगा कि रविशंकर का रेकार्ड खत्म होने के बाद नया रेकार्ड बज रहा है।

इसके बाद एक गाना तुमने गाया....'एबार उजाड़ करे लओ हे आमार जा किछू सम्बल, फिरे चाओ, फिर चाओ, फीरे चाओ ओगो चंचल।' आँख खोल कर मैंने तुम्हारा हाथ पकड़ लिया।

तुमने गुस्से से मेरा हाथ झटक दिया। बोलीं, 'हाथ हटा लो।'

मैंने आश्चर्य से पूछा था—'एक तरफ तो गा रही हो कि 'एबार ऊजाड़ करे लओ हे आमार जा किछू सम्बल' और फिर कह रही हो हाथ हटाओ—मामला क्या है? अचानक हड़ताल शुरू कर रही हो क्या?'

सामने से लम्बी चोटी को झटक कर पीठ की तरफ उछालते हुये तुमने मुँह फेर कर कहा—'तुमने तो आजकल अनशन शुरू किया है। सवेरे निकल कर सारे दिन चरखी से घूमते हो, खाते नहीं हो और अन्त में थक कर शाम को सो जाते हो। फिर...'

मैं चट उठते हुये बोला...

'गोपने देखेछि तोमार व्याकुल नयने भावेर खेला
उतल आँचल, एलोयेलो चूल, देखेछि झड़ेर वेला।'

(एकान्त में तुम्हारे व्याकुल नैनों को भावविभोर होते देखा है। चंचल आंचल, उलझे बाल—देखा है वहाँ तूफान उठने वाला है)

उसके बाद जानती हो मेम साहब, क्या हुआ था ? दोनों खाना खाने बैठे तो खूब होहल्ला किया। तुम्हारे मुँह में जबरदस्ती कुछ भरने जा रहा था कि एक गिलास जमीन पर गिर कर टूटते ही दोनों एक साथ चिल्ला दिये थे।

इसी चिल्लाने से मेरी नींद खुल गई। काफी देर बाद समझ सका कि तुम पास नहीं हो—स्वप्न देख रहा था। और कितने दिन माया वन में विचरने वाली हिरनी की तरह गहन स्वप्न संचारिणी-सी बनी रहोगी मेम साहब ?

इसी बीच नींद टूटते ही हाथ घड़ी में देखा पौने आठ बज रहे हैं। पांच-सात मिनट में तैयार होकर भागा मिस डोभर के यहाँ डिनर खाने। मिस डोभर ने आज ही के दिन तीस साल पहले अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया था। पन्द्रह साल पहले राजनीति त्याग कर समाज-सेवा का काम शुरू किया था। कुछ सालों से चिरकुमारी मिस डोभर के यहाँ आज के दिन, मैं नियमित रूप से बुलाया जाता हूँ।

मिस डोभर के यहाँ पहुँच कर देखा श्रीनिवासन, मौलिक मिस घोष और दो-तीन लोग हाजिर हैं। साठ साल की होने पर भी मिस डोभर ने हम सभी को हँसते-खेलते महा-सन्तुष्टि के साथ सोलह कोर्स वाला डिनर खिलाया। अन्त में धीरे-धीरे अतिथियों के विदा लेने के बाद मैं भी उनसे विदा मांगने गया, लेकिन अनुमति न मिली। बोली —'यंग फ्रेण्ड, जरा बैठो, कुछ बात है।'

सबको विदा कर ड्राइंग रूम के कोने की सीट पर लौट आईं मिस डोभर। हँसते-हँसते पूछा—'कुछ खोया है ?'

मैं सोच ही न सका कि क्या खोया है। बोला, 'ठीक समझ में नहीं आ रहा है ?'

हँसते-हँसते ही मेरा पर्स आगे बढ़ाती हुई बोलीं, 'खाने के बाद झुक कर मेज के नीचे प्लेट रखते वक्त शायद यह तुम्हारी जेब से गिर गया था।'

'हो सकता है।' —खूब सारा धन्यवाद देता हुआ खड़ा हुआ था कि बोलीं— 'तुम तो बड़े स्वार्थी हो। पर्स मिलते ही जा रहे हो ?'

लगा मेरी तरफ देख कर दबी हँसी हँस रही हैं। इस बार जरा आज्ञा देने के लहजे में बोलीं—'बैठो, बहुत सारी बात करनी है।' फिर हँसते-हँसते पूछ बैठीं—'पर्स के अन्दर प्रिवी पर्स देखा—वह कौन है ?'

ठीक से समझ न सकने की वजह से विस्मित-सा हो उनकी ओर देखते ही मिस डोभर ने एक डांट लगाई, 'तुम्हारे बैग में जिस लड़की की तस्वीर देखी—वह कौन है ?'

मैं कुछ लज्जित हो, सिर झुका कर बोला, 'वह है तापसी—मिस तापसी सेन।'

'तुम उसे चाहते हो !'

मैं उत्तर दिये बगैर सिर झुकाये बैठा रहा।

फिर प्रश्न पूछा—'तुम्हारी और तापसी की शादी होगी न ?'

आज तक किसी ने इस तरह स्पष्ट प्रश्न पूछा न था। मैं और भी लज्जित हुआ। अन्त में बताया—'तापसी के विलायत से लौटने के बाद. शायद देर न होगी।'

मुझे धन्यवाद जताया उन्होंने। लेकिन क्षण भर में उनका उज्ज्वल सुन्दर हँसता चेहरा जैसे अँधेरे में डूब गया। न जाने क्या कहते-कहते रुक गईं—सिर्फ एक दबी हुई दीर्घ श्वास छोड़ी उन्होंने !

'आप कुछ कहने वाली थीं ?' मैंने प्रश्न पूछा। उत्तर न मिला।

कुछ क्षण चुपचाप बीते। अपने ही आपसे जैसे मिस डोभर कह उठीं, 'राजनीति के खेल में आदमी अमानुष हो जाता है। प्यार-मोहब्बत तक उसके चरित्र से मिट जाता है।'

उस दिन रात और गहरी हुई। धीरे-धीरे डोभर ने अपनी आत्म-कथा के अतीत का अध्याय खोल कर मेरे सामने रख दिया।....

गांधी जी की पुकार सुन आज से तीस साल पहले रावलपिंडी के रायबहादुर पी० एल० डोभर की एकलौती बेटी जमुना डोभर ने यूनिवर्सिटी छोड़ कर स्वदेशी आन्दोलन में भाग लिया था। कुछ दिनों बाद सारा ऐश्वर्य पीछे छोड़ कर रावलपिंडी से चली आई थी, लाहौर। पाँच ही साल में भारतवर्ष की राजनैतिक दुनिया में प्रायः सर्वत्र मिस डोभर का नाम प्रसिद्ध हो गया। उन्नीस सौ बयालिस के दिनों में यही लड़की अंगरेज सरकार के लिये विभीषिका बन गई थी।

असंख्य लोगों के घनिष्ठ सानिध्य में मिस डोभर के दिन कटते थे। इसी घनिष्ठता के बीच ही सहयोगी व शुभकांक्षी महाजन के साथ प्यार के एक नये बंधन में बँधी थी। सुख-दुःख, समस्या-संकट में दोनों का प्यार गहरा होता चला गया। क्रिप्स मिशन भारत आया तो दोनों जेल से बाहर निकले। देश स्वाधीन होते-होते दोनों ही थक चुके थे। घर बाँधने का स्वप्न देख रहे थे।

इसके बाद इलेक्शन में मिस डोभर को नॉमीनेशन मिलने पर मिस्टर महाजन मुँह से अभिनन्दन व्यक्त करने पर भी मन ही मन भीषण अपमानित हुये थे। दोनों के सम्बन्ध में यहीं से दरार पड़नी शुरू हुई और अन्त में मिस्टर महाजन ही मिस डोभर के चरम शत्रु और निन्दक बन गये।

मेरी तरफ देख कर मिस डोभर बोलीं—'बच्चू, जो आदमी स्नेह की पात्री की उन्नति न देख सके, उसकी भलाई न सह सके, उसमें क्या कोई मनुष्यत्व बचा होगा ?'

मैं कुछ न बोला। मिस डोभर ने अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं ही दिया। बोलीं, 'ज्यादा दिनों तक राजनीति में रहने पर अधिकांश लोगों में स्वार्थपरता बहुत बढ़ जाती है। इसीलिये मैंने महाजन को मुक्ति दी, स्वयं भी राजनीति से मुक्ति ले ली।'

राजधानी दिल्ली के सामाजिक जीवन की उज्ज्वल तारिका सर्वजन श्रद्धेया मिस जमुना डोभर ऐश्वर्य के बीच पैदा हुई थीं। राजनैतिक जीवन मे प्रसिद्ध हुई थी। समाज सेविका के रूप में सारे देश में सम्मानित होने पर भी अपना जीवन पूर्ण नहीं कर सकी, यह सोच कर मेरा मन उदास हो उठा। सामने जिन्हे जीवन में प्रतिष्ठित देखता हूँ, देखता हूँ मुस्कुराते हुये भाषण दे रहे हैं, दुनिया भर घूम रहे हैं—उनके जीवन में भी ऐसी व्यर्थता हो सकती है—मिस डोभर की कहानी न सुनता तो विश्वास न करता।

अच्छा मेम साहब, जिन्हे जीवन में सम्मान मिलता है, उनके जीवन में कुछ न कुछ दुःख क्यों रहता है, कह सकती हो?

प्यार सहित—

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

तुम्हारी अस्वस्थता की खबर से बड़ा चिन्तित हूँ। मैं कुछ हफ्ते के लिए कल सुबह अफगानिस्तान जा रहा हूँ। तुम मेरी यह चिट्ठी पाते ही होटल आरियन के पते से, कैसी हो, लिख भेजना। मैं लेकिन बड़ी उत्कण्ठा लेकर कल सुबह हिन्दुकुश की तलहटी पर बसी आर्य-भूमि के लिये रवाना होऊँगा।

इन दिनों मेरे दिन अच्छे बीत रहे हैं। तुम्हारे शब्दों में—जंगली चिड़िया-सा उड़-उड़ कर लोगों को देखता हूँ, कितनी बातें पता करता हूँ, कितनी सुनता हूँ। राजधानी दिल्ली के विशाल रंग-मंच पर मैं मौन या 'मृत सैनिक' का अभिनय करता चल रहा हूँ। फिर भी अन्य अभिनेता-अभिनेत्रियों का अभिनय देखने में मुझे कोई असुविधा नहीं हो रही है। एक अभिनय देख कर एक-आध दिन का विश्राम लेते न लेते किसी अदृश्य हाथों के इशारे से अगला अभिनय देखने का निमन्त्रण मिल जाता है।

....कुछ दिनों पहले कनकदा और कल्याणी भाभी, खूकू और नये दामाद अमिय को लेकर दिल्ली घूमने आये थे। एक दिन कुतुबमीनार से लेकर लाल किले तक घुमा दिया। मोतीमहल में चिकन-रोस्ट खिलाया। अन्त में रोज शाम को कनॉट प्लेस में टहलना शुरू किया। उनके दिल्ली छोड़ने के पहले दिन शाम को हम सब झुण्ड बना कर दिल्ली के विख्यात त्रिवेणी गोष्ठी का 'स्वामीजी' देखने गए।

हॉल में जाकर बैठते ही किसी ने मुझे पीछे से चिकोटी काटी; पलट कर देखा घटक भाभी थीं। थियेटर शुरू होते ही घटक भाभी ने मेरी पीठ पर झुक कर रनिंग कमेण्ट्री देना शुरू किया। एक-आध बार मैंने इशारे से मना किया, पर घटक भाभी का उत्साह जरा भी कम नहीं हुआ—'जानते हो बच्चू, वह जो रामकृष्ण का पार्ट कर रहे हैं, वे ही हैं हमारी मिसेज केतकी चक्रवर्ती के हसबैण्ड कर्नल चक्रवर्ती।' जरा रुकतीं, फिर

शुरू होती रनिंग कमेण्ट्री---विवरण-धारा शुरू होती---'देखो-देखो बच्चू, दक्षिणेश्वर के मन्दिर वाले सीन में माया को देखोगे।'

मैं पीछे मुड़ कर फुसफुसा कर कहता---'ओ भाभी ! शो के बाद तुम्हारी पूरी स्क्रिप्ट पढ़ लूँगा, अभी रनिंग कमेण्ट्री बन्द रखो।' भौहें सिकोड़ कर आस पास देख कर बोला---'बगल वाले कुछ कह सकते हैं।'

जैसे यह चिरन्तन सत्य है कि कोयला सैकड़ों बार धोने पर भी अपनी कालिमा नहीं छोड़ता है, वैसे ही मुँह से शब्द झड़ना घटक भाभी की विशेषता है। मेरे मना करने के बावजूद घटक भाभी की रनिंग कमेण्ट्री रेडियो सीलोन की तरह लगातार चलती रही।

कल्याणी भाभी ने पूछा---'ये कौन हैं रे ?'

मैं बोला---'गेजेट ऑफ दी कैपिटल ऑफ इण्डिया, राजधानी दिल्ली की गेजेट।'

सिर्फ कल्याणी भाभी और कनकदा ही नहीं खूकू और दामाद अमिय भी हँसने लगे। मैं जरा शर्मिन्दा हुआ। सीधा इस तरह से घटक भाभी के लिये टिप्पणी कसना उचित नहीं था। फिर मन ही मन सोच कर देखा कि घटक भाभी का इसके अलावा और परिचय भी तो नहीं।

कुछ देर में सिस्टर निवेदिता आईं। घटक भाभी ने काफी उत्तेजित होकर मुझे पीछे से कोंचा। कानों में बोलीं---'यही है प्रिया बोस। इसे तो जानते हो ?'

उत्तर दिया---'नहीं।'

'नालायक कहीं का ! बच्चू, तुझे अखबार वालों ने अभी तक भगा क्यों नहीं दिया है---बता सकता है ? दिल्ली में रह कर तू प्रिया बोस को नहीं पहचानता है ?'

मैं दिल्ली की यशस्विनी मंचाभिनेत्री प्रिया बोस को नहीं पहचानता हूँ, इसी दु:ख से घटक भाभी बिल्कुल बुझ सी गईं। रनिंग कमेण्ट्री बन्द हो गई।

ढाई घंटे बाद 'स्वामीजी' नाटक खत्म हुआ। हॉल में बत्ती जल उठी। अन्य लोगों की तरह हम भी खड़े हो गये। निकलने के लिये कल्याणी भाभी के पीछे बढ़ते ही घटक भाभी ने प्यार जताते हुये धीरे से कान पकड़ कर खींचा। खूकू और अमिय ने अपने मुँह के सामने रूमाल पकड़ा।

मैं भीगी बिल्ली-सा म्याऊँ-म्याऊँ करता बोला, 'भाभी, अब प्यार मत जताओ।'

शैम्पू किये बालों को झटक कर चेहरे पर से हटाती हुई घटक भाभी मुझसे बोलीं---'माई डियर बैचलर, कम टूमॉरो इवनिंग। आई विल गिव यू गुड फूड एंड गुड स्टोरी। आई मीन टॉप एक्सक्लूसिव स्टोरी।'

दूसरे दिन सुबह की ट्रेन से कनकदा लोग चले गये। उसके बाद तुम्हारा दिया

कलफदार कुर्ता और शान्तिपुरी धोती पहन शाम को मैं घटक भाभी के 'डिप्लोमेटिक एंक्लेव' वाले घर में पहुँचा।

दामाद न होने हुये भी मेरा दामाद-वेष देख कर घटक भाभी उत्तेजित हो उठीं। हाथ बढ़ा कर बोलीं—'बच्चू, तू आज वण्डरफुल लग रहा है।' फिर नेचुरल कलर के लिपिस्टिक से रंगे होठों को उलट कर बोलीं—'लेकिन ठीक जम नहीं रहे हो।' जरा चुप्पी के बाद फिर बोलीं—'तापसी के बगल में न रहने पर तू इस पोशाक में जमता नहीं है।'

घटक दादा डिनर खाने के बाद एक दोस्त को रिसीव करने पालम चले गये। ड्राइंग रूम की पैनल लाइट्स बुझा कर केवल टेबिल लैम्प के छुट-पुटे अंधेरे में उस रात घटक भाभी ने प्रिया बोस की कुछ कहानी सुनाई।

····अजीत बोस सरकारी ऑफिस में साधारण-सी नौकरी करने पर भी पत्नी और एकमात्र कन्या के साथ सुखी जीवन बिता रहा था। पाँच-सात साल पहले दुर्गा-पूजा के मौके पर पत्नी प्रिया ने पड़ोस के लड़के-लड़कियों के साथ शरत्चन्द्र के 'गृह दाह' में अभिनय किया।

गृहदाह के अभिनय के बाद दिल्ली में प्रिया बोस का नाम चारों ओर सुनाई पड़ने लगा। कुछ दिनों बाद अड़ोसी-पड़ोसी के अनुरोध करने पर प्रिया बोस को फिर अभिनय करने की अनुमति मिल गई। उसके बाद पति को बताती थीं कि अभिनय करेंगी परन्तु अनुमति नहीं माँगती थीं। साल पूरा होते-होते प्रिया बोस ने नियमित रूप से अभिनय करना शुरू किया।

अलग-अलग मोहल्लों में नाना प्रकार के लोगों के साथ नियमित अभिनय करते-करते बहुत सारे अपरिचित परिचित हो उठे प्रिया बोस के। परिचितों के साथ-साथ कुछ मक्खियाँ भी शहद पाने की गुप्त आशा लिये समय-असमय, प्रिया बोस के सान्निध्य लाभ की आशा से आने लगे। पत्नी के अनुरोध की उपेक्षा न कर सकने के कारण अजीत बाबू ने ऑफिस से कुछ रुपए एडवांस लिये। बाहर के कमरे को ड्राइंग-रूम बनाया गया। नया सोफा सेट लगा। कुछ कैक्टस के गमले घर के चारों तरफ लगाये गये। कुछ दिनों बाद फर्श पर कारपेट बिछा। प्रिया बोस की पोशाक व आचरण पर आधुनिकता की छाप पक्के तौर पर लग गई।

अजीत बाबू प्रतिवाद करते, समझाने की कोशिश करते, लेकिन पत्नी के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। कुछ ही दिनों में पति-पत्नी के बीच मनमुटाव शुरू हुआ। रिहर्सल से घर लौटने का समय धीरे-धीरे पीछे खिसकने लगा। दो-एक बार प्रिया बोस रात के आखिरी प्रहर में लौटीं। टैक्सी के किराये के नाम पर प्रिया बोस मोटी रकम कमाने भी लग गईं।

देखा को घटक भाभी ने फिर एक बार कॉफी ले आने को कहा। फिर कॉफी की घूंट लेती हुई बोलीं—'आठ-दस साल की लड़की के सामने पत्नी की यह बेपरवाही और बदचलनी मिस्टर बोस के लिये ज्यादा दिनों तक बरदाश्त करना सम्भव न रहा।

निरुपाय हो भद्रपुरुष होटल की शरण में गये और लड़की को बड़ी मौसी की हिफाजत में रखा। इधर प्रिया बोस अनेक घाटों का पानी पीने के बाद, अन्त में, एक जाने-माने आदमी के डाइरेक्शन में अभिनय ही नहीं अपना जीवन भी बिताने लगीं। आज भी उसी आदमी के गले की मणिमाला बनी हैं। और अजीत बाबू आज भी होटल की एक छोटी-सी कोठरी में चारपाई पर पड़े-पड़े, लड़की की बात सोचते हैं, सिर्फ दीर्घश्वास छोड़ते हुए जीवन काट रहे हैं।

इतनी सी कहानी सुनाने में घटक भाभी ने बड़ी रात कर दी। फिर कभी प्रिया बोस की बाकी कहानी सुनने का आश्वासन देकर उस रात मैंने घटक भाभी से विदा ली।

आज और आगे नहीं। बाद में चिट्ठी लिखूंगा।

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

ज्यादा दिन नहीं हुए, लगभग पाँच हजार साल पहले मेरे-तुम्हारे पूर्वज जिस भूमि को त्याग कर चले गये थे, वहीं आज का अफगानिस्तान, अतीत की आर्य-भूमि में, आने के बाद तुम्हारी एक भी चिट्ठी नहीं मिली। पता नहीं क्या मामला है? अभी भी क्या तुम मुझे निश्चिन्त नहीं कर सकती हो?

सुबह से रात आठ-नौ बजे तक बेहद अव्यस्तता में बीत जाता है। डिप्लोमैटिक मिशन या इण्डियन एम्बेसी की तरफ से प्रायः रोज ही डिनर रहता है। इसीलिये लगभग आधी रात से पहले, अपनी तरफ ताकने तक का सही अवसर नहीं मिलता है। एकमात्र शुक्रवार को इस देश में कोई पार्टी नहीं होती है। इसीलिये तो उस दिन शुक्रवार को मिस्टर चेरिल के अनुरोध पर, इण्टरनेशनल क्लब में चला गया। बहुत ज्यादा भीड़ न होते हुए भी, बहुत जाति के काफी स्त्री-पुरुष चारों तरफ फैले थे।

चेरिल और मैं एक तरफ की एक छोटी मेज पर बैठे। बैरा आकर स्कॉच ह्विस्की के दो गिलास रख गया। सिगरेट जलाते हुए ह्विस्की के घूंट से चेरिल बोले—'रिपोर्टर! तुम्हारे साथ एक आदमी को मिलवाऊँगा। बेहद इण्टरेस्टिंग और रोमाण्टिक आदमी है। मिल कर तुम्हें खुशी होगी।'

मैंने पूछा—'हू इज ही?'

'मिस्टर विलियम फॅक्स।'

नाम सुनते ही मेरी भौंहे सिकुड़ गईं। लगा, कहीं इनका नाम सुना है या कहीं

परिचय हुआ है। पूछा चेरिल से—'मिस्टर फॅक्स रहते कहाँ हैं ? क्या करते हैं ?'

जैसे ही सुना कि फॅक्स एक विश्वविख्यात कण्ट्राक्टर फार्म के मालिक हैं, और आजकल काबुल में हैं—मैंने लगभग चिल्ला कर चेरिल से पूछा—'वॉज ही इन लिवनॉन सम ईयर्स बैक ? (कुछ साल पहले क्या ये लिवनॉन में थे ?)'

चेरिल बोले—'देट्स राइट ! तुम उन्हें पहचानते हो ?'

'खूब ज्यादा तो नहीं, लेकिन बेरूत के होटल में एक रात मिस्टर और मिसेज फॅक्स के साथ रहा था। हम लोगों ने सारी रात गप्पबाजी की थी। दूसरे दिन सुबह उन्होंने मुझे जबरदस्त ब्रेकफास्ट खिलाया था। उसके बाद मैं एथेन्स गया और वे कायरो चले गये।'

जानती हो मेम साहब, मिस्टर फॅक्स की बात सुनते ही मेरा मन कई साल पहले के, बेरूत के होटल में बिताई एक रात की तरफ लौट गया।

...बी. ओ. ए. सी. से बेरूत उतरते ही मेरे अभिभावक बने ब्रिटिश योरपियन एयरवेज। एयरपोर्ट के दुमंजिले बी. ई. ए. के आफिस में एक मेम साहब ने होटल रिजर्वेशन स्लिप देकर एक सुन्दरी लेबनीज युवती के हवाले करते हुए कहा—'शी विल टेल यू टू योर होटल।'

बी. ई. ए. की छोटी सी गाड़ी पर लेबनीज ग्राउण्ड होस्टेज की बगल में बैठ कर होटल जाने में मजा आ रहा था। रास्ते के चारों ओर, बीच के किनारे अनगिनत लेबनीज सुन्दरी युवतियों को देख कर शायद मेरा मन भी रंग पकड़ रहा था। होटल के निश्चित कमरे में पहुँचा कर लड़की हाथ बढ़ा कर विदा लेने लगी तो मैं बोला—'इतनी जल्दी क्या है ? हैव लिटिल ड्रिंक्स।'

पहले एतराज करने पर भी बाद में मेरा आमन्त्रण उसने स्वीकार किया था लेकिन दूसरी फ्लाइट अटेंड करने के लिये जरा जल्दी ही विदा लेकर चली गई। उसे विदा कर मैं फिर लौट गया बार में और यहीं मेरा परिचय हुआ मिस्टर एंड मिसेज फॅक्स के साथ।

बार के काउण्टर पर दोनों के ड्रिंक्स अदल-बदल जाने पर मिस्टर फॅक्स से पहला परिचय हुआ। एक मिनट के परिचय के बाद ही मुझे आदर और आग्रहपूर्वक अपनी पत्नी से मिलवाने ले गये। बगल में बैठाया। मैं जर्नलिस्ट और दिल्ली में रहता हूँ, सुन कर मिस्टर एंड मिसेज फॅक्स दोनों अत्यन्त प्रसन्न हुए।

पति-पत्नी दोनों ने एक साथ सवाल पूछा—'यू नो योर मिनिस्टर मिस्टर बत्रा ?'

मिस्टर बत्रा भारतवर्ष के एक जबरदस्त मिनिस्टर और यशस्वी राजनैतिक नेता थे। उन जैसे नेताओं से परिचय न रहा तो दिल्ली में हम जैसों का काम करना ही मुश्किल हो जाए। इसीलिये मेरा भी उनसे अच्छा परिचय था। मैं बोला—'यस आई नो हिम वेल।'

लम्बे गिलास के नीचे बची बियर की बूँदों को पीकर मिस्टर फॅक्स बोले, 'वे

मेरे परिवार के विशेष मित्र हैं।'

उस वक्त ज्यादा बात नहीं हुई। तीनों मिल कर डिनर खाने के बाद बार में लौट आए। पृथ्वी के प्रायः हर सम्भव विषयों पर आलोचना हुई थी उस रात। उस रात हम तीनों में से किसी ने कितने पेग व्हिस्की पी....

जो भी हो, ठीक क्या-क्या आलोचनाएँ हुई थी, वह याद नहीं। लेकिन मिस्टर बत्रा की कहानी नहीं भूला हूँ।

मिस्टर फॉक्स ने कहा था, 'कैलिफोर्निया के रेसकोर्स के मैदान में मिस्टर बत्रा ने एक अद्‌भुत घोड़े पर टिप्स लगा कर ढेरों डालर जीत कर हमें आश्चर्य में डाल दिया। यह बात कई साल पुरानी है, लेकिन मैं भूला नहीं। चार साल पहले न्यूयार्क के एक होटल में मिस्टर बत्रा को देख कर दोस्ती की और तभी से दोनों में गहरी मित्रता है।

इस करोड़पति अमेरिकन दम्पत्ति से उस रात मैंने अपने सर्वजनप्रिय देशनायक बत्रा की बहुत कहानियाँ सुनी।.. 'जानते हो जर्नलिस्ट, मिस्टर बत्रा के आने पर मैं अपने सारे टूर कैंसिल कर स्टेट्स लौट आता हूँ। सारे दिन के हो-हल्ले के बाद हम लोग शाम को जरूर लौट आते और फिर शुरू होतीं हमारी ड्रिंक्स और गप्पें।'

कहते-कहते जरा रुके मिस्टर फॉक्स। फिर कहना शुरू किया—'साधारणतया मैं ज्यादा ड्रिंक नहीं करता हूँ। लेकिन बत्रा के साथ गप्पें हाँकने बैठते तो दोनों मिल कर बोतल पर बोतल खत्म कर देते। अगर किसी वजह से मैं फँस जाता तो बत्रा मेरी पत्नी को लेकर ब्रॉडवे में चला जाता किसी न किसी प्रोग्राम पर। जोनी (मिसेज फॉक्स) लाइक्स हिम वेरी मच। किसी-किसी दिन ये दोनों चले जाते स्वीमिंग करने या और किसी आउटिंग पर।'

मिसेज फॉक्स अपने लो-कट गाउन के स्ट्रैप दोनों जरा खींचती हुई कहने लगी, 'बत्रा इज फुल ऑफ फनूस। उसके साथ आउटिंग पर जाने पर लगता है यूनिवर्सिटी के बीते दिन फिर लौट आये हैं। जानते हो जर्नलिस्ट, एक बार मुझसे बाजी लगा कर बत्रा मुझे अपनी पीठ पर बैठा कर एक किलोमीटर तैरा था।'

मैंने तारीफ करते हुए कहा, 'वण्डरफुल !'

मिसेज फॉक्स बोली, 'जर्नलिस्ट गुस्सा मत होना। अधिकांश इण्डियन बड़े कंजर-वेटिव होते हैं। लाइफ को इंज्वाय करना नहीं जानते। लेकिन बत्रा में इस तरह की कोई बात नहीं। ही नोस हाउ टू इंज्वाय लाइफ एंड कैसे मजा करना चाहिए।'

मैं बोला, 'दैट्स राइट मिसेज फॉक्स।'

मिस्टर फॉक्स बोल उठे,....'जानते हो, एक बार हम दोनों की अचानक पेरिस के उरली एअरपोर्ट पर भेंट हो गई। सिर्फ एक दिन हम दोनों एक साथ पेरिस में थे, लेकिन ऐसा मजा किया था कि छात्र जीवन के बाद फिर कभी वैसा आनन्द उठाया था—याद नहीं आया।'

मिस्टर और मिसेज फॉक्स ने बताया वे दिल्ली आ चुके हैं। 'ही गेव अस

वण्डरफुल डिनर एण्ड ब्यूटीफुल ड्रिंक्स।'

हे-हे कर हँसते हुए उनकी बातें सुन मैं मुग्ध हो गया। लेकिन मन ही मन सोचा था, जिस देशनायक गांधीवादी वक्ता के भाषण की मैं रिपोर्ट लिखता हूँ, जिनके भाषणों के विद्युत् तरंग से देशवासी मुग्ध हो जाते हैं, वे ही हैं ये वक्ता? जिनके बारे में हम जानते हैं कि सारा त्याग दिया है, ये क्या वही है जो मिसेज फॅक्स के साथ असंख्य आनन्दपूर्ण खेल खेल चुके हैं? सन्देह करने में जैसे द्विविधा-ग्रस्त हो रहा था।

जानती हो मेम साहब, उस दिन रात को इण्टरनेशनल क्लब में मिस्टर एंड मिसेज फॅक्स के दर्शन नहीं मिले। लेकिन चेरिल ने वादा किया है, उन दोनों को मेरे होटल में ले आएगा। न जाने अब कौन सी नई कहानी सुनूंगा।

मेरा प्यार।

तुम्हारा
बच्चू

मेम साहब,

अंधेरी अमावस्या की गहरी रात में क्लान्त—थका, भूखा पथिक, गहन वन में रास्ता खो बैठा था। दिशा-भ्रान्त वह पथिक सांपों से भरे वन में घूमते-घूमते लगभग मरणासन्न हो गया। अचानक ऐसे वक्त पर स्वप्न की तरह रथ पर चढ़ कर एक राजकन्या का आविर्भाव हुआ। सुन्दरी अष्टादशी वह राजकन्या पथिक को लेकर राजप्रासाद में लौटी। आहार दिया, खातिर की। फिर? फिर राजकन्या मुग्ध होकर पथिक को निहारती रही। मन ही मन आत्मसमर्पण भी किया था। मुँह से कुछ न बोली थी राजनन्दिनी, पथिक के सीने पर सिर रख कर अपने आनन्दोत्सव का इशारा किया था।

अच्छा मेम साहब, उस पथिक की मनोदशा जरा सोचो तो? अगर समझ सको तो लिखने की जरूरत नहीं। होटल से काबुल इण्टरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवाना होने के पाँच मिनट पहले मैनेजर ने दो मोटे-मोटे तुम्हारे लिखे लिफाफे मेरे हाथ में दिए। मेरा मन उसी पथिक की तरह खुशी से भर उठा था। किसी तरह से चिट्ठियों पर एक नजर डाल एयरपोर्ट चला गया। ज्यादा समय न था। लगेज चेकअप, कस्टम्स चेक, इमीग्रेशन हेल्थ काउण्टर से निकल कर ट्रांजिट लाउंज पर आते न आते ही एनाउंसमेंट हुआ, 'मे आई हैव योर एटेंशन प्लीज? पैसेंजर्स ट्रैवलिंग वाई फ्लाइट नम्बर आई० सी० फोर फाइव—फ्राम काबुल टू देल्ही ऑर रिक्वेस्टेड टू प्रोसीड टू द एयरक्राफ्ट। तभी जलाया सिगरेट फेंक ब्रीफकेस और टाइपराइटर लेकर प्लेन पर चढ़ा।

जरा भी समय वरबाद किए बगैर तुम्हारा पत्र पढ़ने लगा। सुन्दरी युवती एयर होस्टेस ने अधगिरा आंचल सम्भालते हुए 'एक्सक्यूज मी' कहा और चॉकलेट की ट्रे बढ़ा दी। मैंने इनकार किया। सांस रोक कर तुम्हारी दोनों चिट्ठियां कई बार पढीं। ठीक याद तो नहीं, हो सकता है अत्यधिक प्रसन्न होकर मैंने दोनो चिट्ठियां चूम लीं। फिर चिट्ठियां कोट के इनसाइड पॉकेट में रखी। पर्स में से जूहू के किनारे खींची तुम्हारी तस्वीर देखने लगा कि महसूस हुआ कोई मुस्कुरा रहा है। आंखें उठाईं तो एक एयर होस्टेस ट्रे में काफी और स्नैक्स लिए हँसती हुई खड़ी है। जरा लज्जित होते हुए पूछा—'बहुत देर से खड़ी है ?' हँसी को चेहरे पर और फैलाते हुए वह हँसी—'नहीं, पांच-सात मिनट ही हुए हैं।'

'सॉरी !' जल्दी से हाथ बढ़ा कर ट्रे ले लिया। पेस्ट्री और कॉफी पीते-पीते घड़ी देखी—बहुत-सा रास्ता तय कर चुके हैं। होस्टेस को बुला कर कहा—'कैप्टेन से पूछ कर जरा बताइए कि खैबर पास कब आएगा !'

पांच ही मिनट में उस ऐतिहासिक गिरिपथ के ऊपर से उड़ने जा रहे हैं, सुनते ही जल्दी से कॉफी पी कर, सिगरेट सुलगाई और बाहर देखने लगा। पांच ही मिनट में उस ऐतिहासिक गिरिपथ के ऊपर आ गए हम ! न जाने मन कैसा उदास हो गया। क्षण भर के लिए लगा मन में ऐतिहासिक तूफान उठा हो।

...क्राइस्ट के जन्म से दो हजार साल पहले, मध्य एशिया से अफगानिस्तान होते हुए इसी गिरिपथ से हमारे पूर्वज आर्य लोगों ने भारतवर्ष के मैदानी भाग में प्रवेश किया था। लगा, जैसे मैं भी उसी तीर्थयात्रा का यात्री हूं। पहाड़ी के उतार-चढ़ाव से चढ़ते-उतरते थक कर बीच-बीच में विश्राम कर रहा हूँ, फिर आगे बढ़ता हूँ। सिंधु नदी के खिचाव के कारण यह जान भी न पाया कि कब खैबर दर्रा पीछे छूट चुका है। लगा, प्राचीन ग्रीक के शौर्यवीर्य के प्रतीक, ईसा पूर्व ३२७ साल में, इसी रास्ते से गए थे। भारतवर्ष के अमूल्य ऐश्वर्य की लूट-खसोट लिया था मोहम्मद गजनी ने। इतिहास के हर पृष्ठ पर वह कलंक-कथा विस्तरित रूप से सबने पढी है। यह बात १००० शताब्दी की है। ठीक दो सौ साल बाद—१२२० ईसवी में दुर्दान्त आक्रमणकारी चंगेज खां भी इसी खैबर को पार कर भारतवर्ष में घुसा था। पुण्यभूमि भारतवर्ष के कोने-कोने में इस आक्रमण के चिन्ह आज भी पाए जाते हैं। वाइकाउण्ट प्लेन की बड़ी खिड़की से नीचे ताकने पर दिखाई पड़ा, जैसे चंगेज खां धन-सम्पत्ति और अगाध ऐश्वर्य लूट कर ले आया है। खुशी से उमत्त हो सुरापान कर रहा है और उसी पाशविक आनन्द के महोत्सव में उसके सैनिकों के झुण्ड, मतवाले होकर सबके सामने अपहृत नारी का सर्वस्व लूट रहे हैं। यूं सोचते ही जैसे दोनों आंखें जल उठी। जी भर कर इस ऐतिहासिक पथ के एक-एक धूल के कण को देखने की एकान्त इच्छा रहते हुए भी, अनिच्छापूर्वक मैंने आँखें बन्द कर लीं, दोनो हाथों से दोनों ही आँखें ढँक लीं।

काफी का प्याला-ट्रे लेने आई थी एयर होस्टेस। ख्याल नहीं किया। 'एनीथिंग रौंग ?' उन्होंने पूछा।

आँखें खोलीं। देखा, कुछ आश्चर्य से एयर होस्टेस मुझे देख रही हैं। बोला—'नहीं-नहीं, कुछ नहीं हुआ है। लेकिन....'

'लेकिन क्या ?'

'सोच रहा था खैबर दर्रे की बात। सोच रहा था आर्यों के आने की बात, एलेक्जेण्डर के आने की बात, मोहम्मद गजनी और चंगेज खाँ की बात। इनके बाद समरकन्द से १३६८ ईसवीं में आए थे तैमूर। १५०५ ईसवी से शुरू करके बाबर ने पाँच बार इसी रास्ते से भारत पर आक्रमण किए थे। अन्त में भारत के मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई थी....'

लगा, जैसे मैं लेक्चर दे रहा हूँ, इसलिए जैसे ही चुप हुआ बाधा पहुँची।

सीट के नीचे हाथ में ली ट्रे रख कर एयर होस्टेस मेरे बगल की सीट पर बैठ गई, 'उसके बाद ?'

मैं हँसा, 'उसके बाद क्या ? दिल्ली के लाल किले पर मुगलों का झण्डा फहरा, अंग्रेजों ने यूनियन जैक फहराया। उसके काफी दिनों बाद नेताजी ने आवाज उठाई थी, 'चलो-चलो दिल्ली चलो, लाल किला दखल करो।' इसके बाद उसी लाल किले पर एक दिन प्रातःकाल नेहरू जी ने तिरंगा लहरा दिया था।'

एयर होस्टेस ने फिर पूछा, 'उसके बाद खैबर दर्रे में कुछ नहीं हुआ ?'

'क्या कह रही हैं ? हुआ क्यों नहीं ? कश्मीर जीतने के वास्ते प्लासी की लड़ाई के ठीक एक साल पहले १७५६ में अफगान आए थे इसी खैबर से। अंग्रेजों ने सबसे पहले, २६ जुलाई, १८७८ में इसी खैबर दर्रे पर कब्जा किया था।'

जानती हो मेम साहब, इस खैबर दर्रे को लेकर आर्थर कैनन डयॅल की तरह एक विशाल रहस्यमयी किताब लिखी जा सकती है। इस कहानी के सूची-पत्र की हेडलाइनें सुन कर एयर होस्टेस के आग्रह का अन्त नहीं है। वह तो सवाल पर सवाल पूछने लगी। उससे मैंने कहा, 'उन्नीसवीं या बीसवीं सदी में भी खैबर को विश्राम नहीं मिला। बीच-बीच में अगर राइफल की गोलियाँ या तोप न गरज उठें तो वह क्रुद्ध हो उठता है।'

बातों ही बातों में काफी वक्त गुजर गया। सामने लाल अक्षरों में उभर आया—'नो स्मोकिंग ! फासेन योर सीट बेल्ट।' समझ गया पालम की धरती छूने ही वाले हैं। एयर होस्टेस ने मेरा पता लिया। बोली, 'ऑफ डे मिलते ही आपके यहाँ पहुँचूँगी और बहुत सारी कहानियाँ सुनूँगी। ठीक है न ?'

मैं बोला—'जरूर !'

कुछ ही मिनटों में वाइकाउण्ट के तीनों पहिए लम्बे रनवे पर चलते हुए टर्मिनल बिल्डिंग के सामने आए। उसके बाद कस्टम्स के काउण्टर पर एक सहयात्री के सामानों की संख्या देख आश्चर्यचकित रह गया। मेरी आँखों में जिज्ञासा देख एयर होस्टेस ने मेरे कान में फुसफुसा कर कहा—'मिस्टर चक्रपाणी की बात आपको बताऊँगी।'

दो-तीन दिन बाद वही एयर होस्टेस मेरे पास आई थी। मिस्टर चक्रपाणी की कहानी भी सुना गई थी। वह कहानी अगली चिट्ठी में सुनाऊँगा।

मेरा प्यार लेना।

तुम्हारा
बच्चू

मेम साहब,

इस दुनिया में तुम्हारे अलावा अन्य किसी का शासन मानने की इच्छा नहीं होती है। तुम पास रहती हो तो तुम्हारे शासन का अदृश्य हाथ मेरे चारों ओर घूमा करता है। जरा-सा अनियम या थोड़ी-सी शरारत करने से पहले चौंक पड़ता हूँ। लगता है, शायद गुस्सा करती तुम्हारी यह सुन्दर दोनों काली हिरनी-सी आँखें, भौंहें सिकोड़ कर मुझे देख रही हैं। मेरे सीने पर जैसे बिजली का झटका लगता है। लगता है, जिसके हृदय के निश्चित प्रदेश पर मैंने अपने प्राणों का प्रासाद बनाया है, वह शायद मेरे अन्याय के भूकम्प से हिल उठा है। इसलिए तो मैं डर और प्यारवश खुशी-खुशी, तुम्हारी इच्छा के हाथों आत्म-समर्पण करके चिरकाल से तुम्हारा बच्चू बना रहा। है न?

लेकिन जानती हो मेम साहब, तुम समीप नहीं रहती हो तो मैं भी तुम्हारा वाला बच्चू नहीं रह जाता हूँ। न जाने कहाँ से किस बहाव में बह जाता हूँ, इस बात का हिसाब स्वयं मुझे तक नहीं। उसी बहाव में खिंचता, हफ्ते भर तक बहता-बहता, कभी 'बार' में गया हूँ, कभी अड्डे घर में बैठ कर नाना प्रकार के लोगों से पूना-रेसकोर्स के गोल्डन एंजल घोड़े की कहानी सुनी है। एक दिन हरिमोहन दादा के दबाव डालने पर हरि सभा के वार्षिक उत्सव में ढोल भी बजा आया हूँ। दिनान्त होने पर, शाम या रात को, जब भी अपना सामना करने का मौका मिला है—अपने को अपराधी पाया। तुम्हें मुँह दिखाने के डर से तकिए में मुँह छिपा कर झट सो गया हूँ।

पिछले हफ्ते तुम्हें पत्र न लिख सका इसके लिए मुझे गलत न समझना। तुम्हारे लौटने पर, तुम्हें पास पाने पर, अपने हृदय से, प्यार और मर्यादापूर्वक, आज की कमी की क्षतिपूर्ति करूँगा। इस दीर्घकालीन विछोह के मौके पर मुझको भी तुम्हारे पास से कुछ मिलना है। हर दिन, हर क्षण जमा होने वाले इस हिसाब की आशा है तुम भी यथायोग्य क्षतिपूर्ति करोगी। है न?

तुम्हें तो मिस्टर चक्रपाणी की बात नहीं बताई है न? लो सुनो—

पालम के कस्टम्स काउण्टर पर नित्य नये विदेशी माल की धूम देख और कुछ न सही, कम से कम इतना तो समझ ही गया कि वे कोई 'समबडी' और वित्तवान

व्यक्ति हैं। उन्हें पहले कभी न देखने पर भी मेरा अनुमान गलत नहीं था।

आचार्य हरिदास बंगभंग आन्दोलन के बाद भारतवर्ष के राजनैतिक जीवन में प्रथम श्रेणी के नेता के रूप में देश भर में सम्मानित हुए थे। भारतवर्ष के नगरों-शहरों में आचार्य हरिदास के नाम के रास्ते और हर डिजाइन के छोटे-बड़े स्मृति-चिन्ह आज भी उन दिनों का इतिहास सुनाते हैं। देश तथा देश के लोगों के लिए असाधारण चिन्ता मन में रहने पर भी, अपने जीवन की उपेक्षा उन्होंने नहीं की थी। जब अंग्रेजों के हाथों बन्दी न होते, जेल में न होते, तब आचार्य शाम की जन-सभा के बाद सीधे बान्धवियों के कोमल हाथों में बन्दी रहा करते।

आचार्य की यह कहानी बहुत से लोग जानते हैं। शायद तुमने भी किसी से सुनी होगी। मैंने यह सब बहुतो से सुनी है। सुनी है आचार्य के बलिष्ठ चरित्र की और भी कहानियां।

हम लोग जो काम समाज की आंखो के पीछे भी करने से डरते है, झिझकते हैं, जननायक आचार्य हरीदास निर्भीक भाव से वही सब काम समाज के, हर किसी के सामने, प्रकाशित रूप से दिन-दहाड़े करने में झिझकते नही थे। असाधारण बलिष्ठ चरित्र न होने पर किसी भी आदमी में यह दुस्साहस दुर्लभ ही है। वयस्को से सुना है, सम्भ्रान्त घरो की सुन्दरी बान्धवियों के साथ आचार्य की घनिष्ठता की कहानी। स्कॉटलैण्ड के संसार प्रसिद्ध पेय-पदार्थ के प्रति उनकी दुर्बलता की बात उस समय हर कोई जानता था।

एयर होस्टेस मिस ग्रोवर ने कहा था, एक विदेशी प्लेन कम्पनी के नाइरोबी के दफ्तर में काम करते समय उन्होंने चक्रपाणी को देखा था और परिचित हुई थी। सुप्रतिष्ठित भारतीय व्यवसायिक के रूप में चक्रपाणी अनेकों प्रभावशाली संस्थाओं में बुलाए जाते थे। इसी खातिरदारी के बहाने चक्रपाणी ने असंख्य बान्धवियों से मित्रता कर ली थी। दिल्ली के सरकारी भवनो की चोटी पर तिरंगा और माथे पर तीन सिंहों का पोर्ट्रेट लगा होने के कारण, आचार्य का अनुकरण करते हुए चक्रपाणी को देश-सेवा करने की जरूरत नहीं हुई। जब देश पराधीन था तब कैडलॉक-इम्पाला छोड़ जरूर पैदल ग्राम-ग्रामान्तरों मे घूमे होंगे, 'इंकलाब जिन्दाबाद' किया होगा। फेंवरा, ला कावाना या नटराज मे लंच-डिनर उन दिनो हँसी-खुशी छोड़ देते होंगे चक्रपाणी साहब, ऐसा मिस ग्रोवर का निश्चित विश्वास था।

मिस ग्रोवर से भेंट होने के कुछ दिनों बाद ही एक पॉलिटिकल अड्डे-घर में बातों ही बातों में चक्रपाणी साहब की चर्चा छिड़ी थी। प्रातःस्मरणीय महापुरुष आचार्य हरिदास की बन्धु पत्नी के गर्भजात ये सुसन्तान, संसार भर के बन्दरगाहों मे सामानों का क्रय-विक्रय करते हैं। फिर फारेन एक्सचेंज की माला पहन भारतवर्ष में सुदिन लाने की कोशिश में मददगार रहे हैं। देश का उपकार करने के साथ-साथ दस औरों का उपकार करने में इन्होंने कभी कृपणता नही की। पृथ्वी के हर कोने से चक्रपाणी ने भारतवर्ष के लिए मशीनें इम्पोर्ट की हैं। अपना यौवन एक्सपोर्ट किया है, लेकिन कभी भी

देश का नुकसान करते हुए विवाहिता पत्नी को इम्पोर्ट नहीं किया। आचार्य हरिदास की बन्धुपत्नी के गर्भजात पुत्र के अलावा और किसी भारतीय के लिए इतना बड़ा आत्म-त्याग करना, आज के दुर्दिन में ऐसी देशसेवा करना सम्भव नहीं है, ये बात हर कोई स्वीकार करता है।

आचार्य हरिदास के राजनैतिक शिष्य आज सारे देश में फैले हैं और शायद उनकी सहायता और चेष्टा से चक्रपाणी भविष्य में और भी कठोरतम आत्म-त्याग करें।

मेम साहब, आज चला। प्यार सहित—

तुम्हारा ही
बन्धू

मेम साहब,

देवदास ने अपना सारा प्यार उँड़ेल कर पारो को चाहा था। सुख-दुःख, आघात-संघात, अभाव-प्राचुर्य या निकट-दूरत्व में भी उनका प्यार या एक दूसरे के प्रति हृदय में माधुर्य की कभी कमी नहीं हुई। पारो का बिछुड़ना देवदास सहन न कर सका था। दिल से अतीत की स्मृति मिटा न सका था। मन की हर ग्रन्थि से जिस निष्कलंक प्यार के स्वर्ण मंदिर की रचना की जाए, उसे दिल से भुलाना शायद मृत्यु के बाद भी संभव नहीं। देवदास निश्चय ही इस बात को जानता था फिर भी वह चन्द्रमुखी की महफिल में गया था, ह्विस्की की बोतल से प्यार कर बैठा था। पारो को भूलने के लिए देवदास ने और भी बहुत-सा आत्म-समर्पण किया था। इसलिए तो दोनों आत्माएँ मृत्यु के तीर्थ-स्थल में मिले थे। हमेशा के लिए यह प्रमाणित हो गया कि प्यार कभी व्यर्थ नहीं होता है। प्यार विच्छेद नहीं मिलन लाता है।

मेम साहब, इसलिए तुम्हे बताना चाहता हूँ कि इन दिनों नियमित पत्र न लिखने पर भी मैं तुम्हारे पास हूँ। तुम्हारा यह सामयिक विच्छेद भूलने के लिए कभी-कभी व्यर्थ ही चेष्टा करता हूँ। इधर-उधर अपने को बहा कर बाद में पछताता हूँ। यह सोच कर दुःख होता है कि चिट्ठी के माध्यम से तुम्हारे आगे अपने को प्रकाशित करने का अवसर भी खो रहा हूँ। अतीत में जैसे बहुत बार कह चुका हूँ फिर कह रहा हूँ—मुझे गलत न समझना।

जीवन के हर कदम पर तुमको इतना भरपूर पा चुका हूँ कि संसार का कोई आकर्षण आज मुझे तुमसे दूर नहीं रख सकता। जिसे आत्म-समर्पण कर निश्चिन्त हुआ हूँ, जिसने खुशी और स्वच्छन्दता से मेरा सारा भार उठा लिया है, उसे क्या अगले जन्म में भी भूल सकूँगा?

इधर कुछ दिनों से जिनके महत्त्वपूर्ण साहचर्य में दिन गुजार रहा हूँ वह हैं मिस्टर कटकटिया। वण्डरफुल आदमी हैं। पहले इनसे परिचय क्यों नहीं हुआ, सोच कर बड़ा पछतावा हो रहा है।

एक दोस्त से मिलने रेडियो स्टेशन गया था। जब बातचीत खत्म होने को थी, अगले प्रोग्राम की खोज-खबर लेने जो मेरे दोस्त के पास आईं वह उर्वशी-सी सुन्दरी न होने पर भी रम्भा-सी पूर्ण यौवना थी। मेरे पास की कुर्सी खाली रहते हुए भी उस पर नहीं बैठी। दोस्त की कुर्सी से सट कर, नजरों में चुभे कुछ इस ढंग से खड़ी हुईं। मेरी गैरहाजिरी में अवश्य ही मित्र इस दृश्य का मजा उठाते, लेकिन नारद की भाँति अखबार का रिपोर्टर सामने था—जरा झिझक रहे थे। लेकिन मेरे सामने महिला को भाव प्रकाशन में कोई असुविधा नहीं हो रही थी। प्रोग्राम सम्बन्धी बातचीत खत्म होने पर लड़की मेरे दोस्त से मचलते हुए बोली, 'आप कभी मेरे घर नहीं आये। सो यू मस्ट कम्पंशेट....'

'ठीक है, ठीक है, वह देखा जायेगा।'

'ठीक नहीं है, अगले बुधवार को चलिये न अलवर घूम आएँ।'

'बुधवार को कैसे जा सकता हूँ ! छुट्टी नहीं है न ?'

'मैं यह सब नहीं जानती हूँ। यू मस्ट गिव कम्पनी टु मी। मैंने सर्किट हाउस रिजर्व कर रखा है।' जरा रुक कर गिरता हुआ दुपट्टा खींचती हुई बोली, 'आई एम एफरेड, आई काण्ट कैंसिल दि प्रोग्राम नाऊ।'

मैं बेवकूफ होते हुए भी खूब समझ रहा था कि इस कलाकार के साथ दोस्त के काफी गहरे सम्बन्ध हैं। सिर्फ मेरी वजह से निमन्त्रण स्वीकार करते शर्मा रहा है।

मैंने स्वयं ही उपदेश दिया, 'छुट्टी नहीं है तो क्या हुआ; छुट्टी ले लो। इसके अलावा अलवर इज ए लवली प्लेस; स्पेशली दि लेक एंड दि सर्किट हाऊस।'

यौवन-प्रसारिणी ने इस बार मुझ पर अपनी कृपादृष्टि डाली। पूछा—'आप अलवर जा चुके हैं ?'

'बाई रोड जयपुर जाते वक्त दो-एक बार अलवर देखा है और रह भी चुका हूँ। इसके अतिरिक्त महाराजा का गेस्ट हाउस, यानी कि आज का सर्किट हाउस, मुझे बड़ा पसन्द है।'....दबी हुई एक दीर्घ साँस छोड़ कर बोला, 'लेकिन आप जैसी कम्पनी लेकर नहीं गया कभी, या तो अकेले या किसी दोस्त के साथ।'

जरा होठों को दबा कर, दबी हँसी हँसने का आभास मिला श्रीमती जी के रक्तिम होठों से। उसके बाद मेरे प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव मित्र से बोलीं, 'आप तो बड़े अजीब आदमी हैं।' अँगूठे से मेरी ओर इशारा करके बोली, 'परिचय क्यों नहीं कराया ?'

'ओह सॉरी ! मेरे मित्र जर्नलिस्ट हैं, पापूलरली नोन एज यच्चू।'

'नमस्ते ! मैं मिस सुनीता कटकटिया।'

'दिल्ली स्टेशन की एक जानी-मानी आर्टिस्ट हैं।' बन्धुवर ने सूचित किया।

बारहखम्भा रोड के प्रसिद्ध कटकटिया-परिवार के साथ परिचय का यही सूत्र-

देश का नुकसान करते हुए विवाहिता पत्नी को इम्पोर्ट नहीं किया। आचार्य हरिदास की धन्धुपत्नी के गर्भजात पुत्र के अलावा और किसी भारतीय के लिए इतना बड़ा आत्म-त्याग करना, आज के दुर्दिन मे ऐसी देशसेवा करना सम्भव नहीं है, ये बात हर कोई स्वीकार करता है।

आचार्य हरिदास के राजनैतिक शिष्य आज सारे देश में फैले हैं और शायद उनकी सहायता और चेष्टा से चक्रपाणी भविष्य में और भी कठोरतम आत्म-त्याग करें।

मेम साहब, आज चला। प्यार सहित—

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

देवदास ने अपना सारा प्यार उँड़ेल कर पारो को चाहा था। सुख-दुःख, आघात-संघात, अभाव-प्राचुर्य या निकट-दूरत्व में भी उनका प्यार या एक दूसरे के प्रति हृदय मे माधुर्य की कभी कमी नहीं हुई। पारो का बिछुड़ना देवदास सहन न कर सका था। दिल से अतीत की स्मृति मिटा न सका था। मन की हर ग्रन्थि से जिस निष्कलंक प्यार के स्वर्ण मंदिर की रचना की जाए, उसे दिल से भुलाना शायद मृत्यु के बाद भी संभव नहीं। देवदास निश्चय ही इस बात को जानता था फिर भी वह चन्द्रमुखी की महफिल में गया था, ह्विस्की की बोतल से प्यार कर बैठा था। पारो को भूलने के लिए देवदास ने और भी बहुत-सा आत्म-समर्पण किया था। इसलिए तो दोनों आत्माएँ मृत्यु के तीर्थ-स्थल में मिले थे। हमेशा के लिए यह प्रमाणित हो गया कि प्यार कभी व्यर्थ नहीं होता है। प्यार विच्छेद नहीं मिलन लाता है।

मेम साहब, इसलिए तुम्हे बताना चाहता हूँ कि इन दिनों नियमित पत्र न लिखने पर भी मैं तुम्हारे पास हूँ। तुम्हारा यह सामयिक विच्छेद भूलने के लिए कभी-कभी व्यर्थ ही चेष्टा करता हूँ। इधर-उधर अपने को बहा कर बाद में पछताता हूँ। यह सोच कर दु:ख होता है कि चिट्ठी के माध्यम से तुम्हारे आगे अपने को प्रकाशित करने का अवसर भी खो रहा हूँ। अतीत में जैसे बहुत बार कह चुका हूँ फिर कह रहा हूँ—मुझे गलत न समझना।

जीवन के हर कदम पर तुमको इतना भरपूर पा चुका हूँ कि संसार का कोई आकर्षण आज मुझे तुमसे दूर नही रख सकता। जिसे आत्म-समर्पण कर निश्चिन्त हुआ हूँ, जिसने खुशी और स्वच्छन्दता से मेरा सारा भार उठा लिया है, उसे क्या अगले जन्म में भी भूल सकूँगा ?

इधर कुछ दिनों से जिनके महत्त्वपूर्ण साहचर्य में दिन गुजार रहा हूँ वह हैं मिस्टर कटकटिया। वण्डरफुल आदमी हैं। पहले इनसे परिचय क्यों नहीं हुआ, सोच कर बड़ा पछतावा हो रहा है।

एक दोस्त से मिलने रेडियो स्टेशन गया था। जब बातचीत खत्म होने को थी, अगले प्रोग्राम की खोज-खबर लेने जो मेरे दोस्त के पास आई वह उर्वशी-सी सुन्दरी न होने पर भी रम्भा-सी पूर्ण यौवना थी। मेरे पास की कुर्सी खाली रहते हुए भी उस पर नहीं बैठीं। दोस्त की कुर्सी से सट कर, नजरों मे चुभे कुछ इस ढंग से खडी हुई। मेरी गैरहाजिरी में अवश्य ही मित्र इस दृश्य का मजा उठाते, लेकिन नारद की भांति अखबार का रिपोर्टर सामने था—जरा झिझक रहे थे। लेकिन मेरे सामने महिला को भाव प्रकाशन में कोई असुविधा नहीं हो रही थी। प्रोग्राम सम्बन्धी बातचीत खत्म होने पर लड़की मेरे दोस्त से मचलते हुए बोली, 'आप कभी मेरे घर नही आये। सो यू मस्ट कम्पंशेट....'

'ठीक है, ठीक है, यह देखा जायेगा।'

'ठीक नहीं है, अगले बुधवार को चलिये न अलवर घूम आएँ।'

'बुधवार को कैसे जा सकता हूँ ! छुट्टी नहीं है न ?'

'मैं यह सब नही जानती हूँ। यू मस्ट गिव कम्पनी टू मी। मैंने सर्किट हाउस रिजर्व कर रखा है।' जरा रुक कर गिरता हुआ दुपट्टा खींचती हुई बोली, 'आई एम एफरेड, आई काण्ट कैंसिल दि प्रोग्राम नाऊ।'

मैं बेवकूफ होते हुए भी खूब समझ रहा था कि इस कलाकार के साथ दोस्त के काफी गहरे सम्बन्ध हैं। सिर्फ मेरी वजह से निमन्त्रण स्वीकार करते शर्मा रहा है।

मैंने स्वयं ही उपदेश दिया, 'छुट्टी नही है तो क्या हुआ; छुट्टी ले लो। इसके अलावा अलवर इज ए लवली प्लेस; स्पेशली दि लेक एड दि सर्किट हाऊस।'

यौवन-प्रसारिणी ने इस बार मुझ पर अपनी कृपादृष्टि डाली। पूछा—'आप अलवर जा चुके हैं ?'

'बाई रोड जयपुर जाते वक्त दो-एक बार अलवर देखा है और रह भी चुका हूँ। इसके अतिरिक्त महाराजा का गेस्ट हाउस, यानी कि आज का सर्किट हाउस, मुझे बड़ा पसन्द है।'....दबी हुई एक दीर्घ सांस छोड़ कर बोला, 'लेकिन आप जैसी कम्पनी लेकर नही गया कभी, या तो अकेले या किसी दोस्त के साथ।'

जरा होठों को दबा कर, दबी हँसी हँसने का आभास मिला श्रीमती जी के रक्तिम होठों से। उसके बाद मेरे प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव मित्र से बोली, 'आप तो बड़े अजीब आदमी है।' अँगूठे से मेरी ओर इशारा करके बोली, 'परिचय क्यों नही कराया ?'

'ओह सॉरी ! मेरे मित्र जर्नलिस्ट है, पापूलरली नौन एज़ बच्चू।'

'नमस्ते ! मैं मिस सुनीता कटकटिया।'

'दिल्ली स्टेशन की एक जानी-मानी आर्टिस्ट हैं।' बन्धुवर ने सूचित किया।

बारहखम्भा रोड के प्रसिद्ध कटकटिया-परिवार के साथ परिचय का यही सूत्र-

पात्र था। पहले पता चला था कि सुनीता को प्रोग्राम दिये बगैर मेरे मित्र निरुपाय थे। तीन-साढ़े तीन सौ रुपया पाने वाले क्लर्क की हैसियत का सरकारी कर्मचारी होते हुए भी प्रोग्राम एक्जीक्यूटिवों की ऊपरी आय बहुत है। अनेक लालायित युवतियां इनकी पुजारिनें हैं। असंख्य धनिक नन्दन-नन्दिनी इन्हें सन्तुष्ट करने के लिए सदा व्यस्त रहती हैं। उस पर स्टूडियों के बन्द कमरे में इन सब राधा-सखियों के साथ नियमित रिहर्सल करना, प्रोग्राम ब्रॉडकास्ट करना तो होता ही है। सुनीता जैसे बुद्धिमती लड़कियां, अपनी कार में बगल में बैठा कर, बीच-बीच में अलवर, जयपुर या आगरा घूम आती हैं। जब भगवान् किसी का सहाय हो तो कोई किसी का क्या बिगाड़ सकता है? व्यवसाय-वाणिज्य में जैसे बार्टर प्रणाली के अनुसार, एक ही मूल्य की चीजों का लेन-देन होता है, सुनीता और मेरे दोस्त के बीच भी वह सम्बन्ध था। लेकिन बीच में मैं पहुँच कर, कभी-कभी सुनीता को साथ लेकर इण्डिया गेट, चाणक्यपुरी या ओखला घूमने जाने लगा। मेम साहब, कसम खाकर कह रहा हूँ, मेरी इच्छा न होते हुए भी ऐसी उग्र यौवनवती का अनुरोध न टाल पाता। पर विश्वास मानो, अलवर के सर्किट हाउस में एक रात नहीं बिताई है।

एक दिन शाम को चाय का निमन्त्रण पाकर, दिल्ली के इस विख्यात कटकटिया हाउस मे गया था। पहले तो अपनी रोल्स रायस लेकर घुसते शर्म लग रही थी। गाड़ी को एक कोने में छुपा कर रखा। बारामदा चढ़ते ही ऊपर के बारामदे से नीचे झुक कर चिल्ला उठी, 'जस्ट ए मिनट।'

सुनीता का चेहरा हट जाने पर भी मैं मुँह फाड़े ऊपर देखता रह गया। लो-कट ब्लाउज पहन कर सुनीता ने इतनी गन्दी तरह से झांका था कि उसके शरीर की अदर्शनीय सम्पदा के दर्शन हो गये थे। उस देखने का विस्मय कम होते न होते, सुनीता कूदती-फाँदती मेरे सामने आ खड़ी हुई। सलवार कमीज की जगह साड़ी-ब्लाउज पहन रखा था उसने। होठों और माथे के रंग, उसके मन की भाषा प्रकाशित कर रहे थे। पहली ही झलक में अच्छी लगी।

'कम इन बच्चू।'

ड्राइंगरूम के एक कोने में हम दोनों बैठे। ट्राली-ट्रे में नाश्ता आया, चाय आई। मेरे प्याले में चाय डालती हुई सुनीता बोली, 'आप का प्रोफेशन खूब बढ़िया है। विश आई कुड बी ए जर्नलिस्ट।'

'करोड़पति धनवान पिता की सन्तान होकर रेडियो आर्टिस्ट होने वाला प्रोफेशन भी कुछ खराब नहीं, है न?'

जरा-सा हँस दी सुनीता—'धनी या निर्धन होने का प्रश्न नहीं है, गाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। इसके अलावा आपके मित्र मुझे बहुत प्यार करते हैं, इसीलिए रेग्यूलर प्रोग्राम भी मिल जाता है। एक तरह से बाध्य होकर ही चर्चा रखती हूँ।'

'वह तो ठीक ही है।'

'दो-तीन साल पहले एक्सीडेण्टली आपके मित्र के साथ मेरा परिचय हुआ और

इन तीन सालों में हमारे बीच एक अजीब ही कोर्डियल रिलेशन बन गया है। एक-दो दिन के लिए कार लेकर आउटिंग के लिए जाना मेरी एक जबरदस्त हॉबी है। आई आलवेज टेक हिम विथ मी।'

दक्षिण भारतीयों की तरह सिर हिला कर मैं बोला, 'दैट्स फाइन।'

इस बीच बाहर कार की आवाज सुनते ही सुनीता दौड़ी। मेरे पीछे की तरफ से एक प्रौढ़ व्यक्ति को लेकर ड्राइंग रूम में आते ही परिचय कराया।

'डैडी, यही हैं वह संवाददाता, जिनकी बात तुम्हे बता चुकी हूँ।'

'वेरी ग्लैड टू सी यू जर्नलिस्ट।'

अपना दाहिना हाथ बढा दिया उन्होंने। हम दोनों ने हाथ मिलाया।

करोड़पति व्यवसायिक मिस्टर कटकटिया ने मेरे बगल में बैठ कर चाय पी। पहले परिचय में ही मिलने की खुशी जाहिर की। अन्दर जाने से पहले बोले—'ये लेकिन परिचय की शुरुआत है, अब से नियमित मुलाकात होती रहनी चाहिये।' अन्त में टिप्पणी की, 'सुनीता नेवर कमिट्स ए मिस्टेक इन हर सिलेक्शन।'

उस दिन कुछ देर और गप्पशप करने के बाद कटकटिया भवन से विदा ली। लेकिन फिर इतनी जल्दी आना पड़ेगा, मैंने नहीं सोचा था।

दो दिन बाद ही एक डिप्लोमेटिक पार्टी में मिस्टर कटकटिया से मुलाकात हुई। मुझे देख कर खूब खुश हुए। पार्टी खत्म होने से पहले ही मुझे लेकर बाहर आ गए। अपने बाराखम्भा रोड के भवन मे ले गए।

उस दिन सामने वाले ड्राइंग रूम में बैठा नही, बैठा मिस्टर कटकटिया के खास कमरे में। बैठते न बैठते बैरा आ पहुँचा। मिस्टर कटकटिया ने मुझसे पूछा, 'वांट विल यू हैव ? जिन या व्हिस्की ? या शैम्पेन ?'

'लेना जरूरी है ?'

'ह्वॉट डू यू मीन, माई बॉय ? लोगे क्यों नहीं ? लेना ही होगा।'

'ठीक है। जिन में ज़रा-सी व्हिस्की डाल कर लाने के लिए कहिये।'

मिस्टर कटकटिया उछल पडे—'कांग्रेचुलेशन ! बहुत बढ़िया पीने में लगती है न ?'

दोनों के लिए इसी फार्मूला से ड्रिंक आई।

'चियर्स।'

'चियर्स।'

बातों ही बातों में मिस्टर कटकटिया ने कब अपने व्यापार-वाणिज्य की बात शुरू कर दी थी, पता ही नही चल पाया। ध्यान तब आया जब लगा मिसेज कटकटिया की बात बता रहे हैं।

'...जानते हो जर्नलिस्ट, अगर प्रमिला न होती तो ये कटकटिया ब्रदर्स आज भी कनॉट प्लेस की एक दूकान भर रहती। युद्ध के दिनों में, जब दिल्ली में बड़े-बड़े ब्रिटिश और अमेरिकन जनरल भर गए थे, अचानक प्रमिला के साथ ब्रिगेडियर ब्राउन

और कर्नल मिलर की मित्रता हुई। कुछ ही दिनों में यह मित्रता गहरी हुई। विलीव मी जर्नलिस्ट, प्रमिला का पांव जमीन पर नहीं पड़ता था। आर्मी जीप पर चढ़ी घूमा करती थी।'

बेरा और एक राउन्ड आर्डर लेने आया तो मैंने कहा, 'सिर्फ साहब के लिए ले आओ! मैं अब नहीं लूंगा।'

युद्ध के समय की दो-चार कहानियां सुनाते-सुनाते सेकेण्ड राउण्ड खत्म कर थर्ड राउण्ड शुरू किया उन्होंने। थर्ड राउण्ड की पहली घूंट लेते मिस्टर कटकटिया के मन का सारा मैल घुलपुंछ कर साफ हो गया। जी खोल कर बोलना शुरू किया इस बार।

'....प्रमिला ही की कोशिश से मुझे पच्चीस हजार रुपाये एडवांस मिल गये और मैं आर्मी सप्लायर बना। फिर तो दिन-दिन बिजनेस बढ़ने लगा। साल-डेढ़ साल में कटकटिया ब्रदर्स, इण्डिया का टॉप आर्मी सप्लायर बन गया। जानते हो जर्नलिस्ट, उन दिनों मेरे पास मरने तक का वक्त न था। आज रायल एयरफोर्स के प्लेन पर कोहिमा, कल डिब्रूगढ़, उसके दूसरे दिन सुबह कलकत्ते फिर रात में बम्बई—इसी तरह महीने में बीस-बाइस दिन बाहर ही बाहर रहता।'

हाथ का गिलास मेज पर रख कर कुछ काजू मुंह में भर लिए मिस्टर कटकटिया ने। चबा-चबा कर और लड़खड़ायी जुबान से—उस रात बहुत कहानियां सुनाईं। सुना ब्रिगेडियर ब्राउन, बहुत बार मिसेज कटकटिया से बातें करते-करते रात यहीं बिता देते। कभी-कभी मिसेज कटकटिया अपनी अन्यान्य सखियों के साथ मिल कर, कलचरल ईवनिंग ऑर्गनाइज करतीं, ब्राउन, और उनके दोस्तों के लिए। उन रातों को बड़ा मजा आता। बड़े-बड़े अफसर तक खुशी से मस्त होकर अन्त में लड़कियों के साथ इण्डियन डान्स शुरू कर देते। उनसे नाचते नहीं बनता, फिर भी कोशिश करते। अचानक गिरने लगते तो लड़कियों से लिपट जाते—गिरते-गिरते बच जाते।

उस रात के बाद इन दिनों मिस्टर कटकटिया के घर, नाना कारणवश कई बार गया। पता नहीं क्यों, मेरे प्रति मिस्टर कटकटिया के मन में एक फँसी का जन्म हुआ है। ऐसा जी खोल कर बात-चीत करते कि मुझे भी वे अच्छे लगते।

मिसेज प्रमिला कटकटिया इन दिनों दिल्ली में नहीं हैं। समाज सेविकाओं का एक डेलीगेशन लेकर सोवियत रशिया गई हैं। इन महिमामयी महिला को मैंने देखा नहीं है, लेकिन न देखने पर भी उनके प्रति श्रद्धा से मेरा सिर झुक जाता है। आर्मी आफीसरों के मेस में हर शाम कलचरल प्रोग्राम करके मिसेज कटकटिया ने बहुतेरी लड़कियों की न सिर्फ रक्षा की है, उनके बाप-मां एवं भाई-बहन तक की भी रक्षा की है। इन सब परिवारों में बहुत कुछ प्राचुर्य भी लाने का श्रेय उन्हें है।

यह नहीं जानता कि ब्रिगेडियर ब्राउन या कर्नल मिलर आज कहां हैं, लेकिन सचमुच उनके प्रति हमें कृतज्ञ रहना चाहिये। घर-गृहस्थी त्याग कर, मृत्यु के सामने खड़े रह करके भी जिन्होंने मनुष्यत्व नहीं त्यागा। प्रमिला कटकटिया और दिल्ली की

एक झुण्ड युवती आर्टिस्टों और उनके परिवार की किस तरह न सहायता पहुँचाई। मन ही मन सोचता हूँ, कितने दिल से ये भारतीय लड़कियों को प्यार करते थे। युद्ध के दरमियान जितने विदेशी सैनिक इस देश में आए थे, इतने दिनों तक उनकी निन्दा ही सुनता आया हूँ। मिस्टर फटकटिया से इतिहास का नया पृष्ठ देख मन तृप्ति से भर गया।

प्यार सहित। खूब लम्बी चिट्ठी लिखना।

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

बहुत-बहुत शुक्रिया! तुम्हारे लौटने के दिन धीरे-धीरे करीब आते जा रहे हैं, पढ़ते ही मैं खुशी के मारे कुछ देर तक बिस्तर पर लोट लगाता रहा। ड्रेसिंग टेबिल के सामने खड़े हो कर बिखरे बालों को संवारने के बाद अपने चेहरे को देर तक निहारता रहा। मन से पूछा 'ठीक लग रहा हूँ न? या विलायत पलट मेम साहब मुझे पसन्द नहीं करेंगी।' राईटिंग टेबिल पर रखी अपनी और तुम्हारी तस्वीर की तरफ देख कर पूछा,—'क्यों जी, पसन्द हूँ न? या विलायत से मन में नया रंग चढा कर लौटी हो?' अचानक लगा, तुमने पीछे से गाल पर एक चपत लगाई—'छिः छि', तुम बेहद असभ्य हो।'

देखो, असभ्य मैं बनना नही चाहता हूँ लेकिन पता नहीं क्यो क्षण भर के लिए डर गया था। कैसी न जाने शका मन में जागी थी। वह कुछ नही है न?

उसके बाद क्या किया, पता है? हम लोगों के वह तीनों एलबम निकाले। मेरून रंग के एलबम से तुम्हारे सारे पोर्ट्रेट निकाल कर बिस्तर पर उनका डिस्प्ले किया! बहुत देर तक बड़े ध्यान से तुम्हारा सुन्दर मुँह देखा। देखा, चेहरे पर शरारत का कोई चिह्न या लक्षण तो नही। नही मिला कुछ। फिर खुशी के मारे तुम्हारी हर तस्वीर को देर तक देखता रहा—प्यार करता रहा। तुम्हारे लौटने पर, तुमसे भेंट होने पर, और क्या-क्या किया था कानो में बताऊँगा।

मथुरा ने कई बार आ-आकर तीन प्याले चाय पिलाई लेकिन फिर भी मैं दो एलबम पूरे न देख सका। तुम्हारी लम्बी नरम दोनों तकियों को पेट के नीचे दबा कर बड़ी तन्मयता से मैं अपनी शिमला ट्रिप की तस्वीरें देख रहा था। उसी वक्त मथुरा कह उठा, 'बाबूजी, बगैर दीदी जी के आपको अच्छा नही लगता है—है न?'

मथुरा न सुन पाये, ऐसे धीमे से मैंने तुम्हारी तस्वीर से कहा, 'सुन रही हो? मथुरा क्या कह रहा है?'

फिर मथुरा को सुनाता हुआ बोला, 'क्या करूँ बता, तेरी दीदीजी ने मन्त्र-तन्त्र पढ़ कर मेरा यह हाल कर दिया है। इसीलिए तो आज कल कुछ अच्छा नहीं लगता है।'

'दीदी जी कब आ रही हैं, बाबू जी ?'

'लिखा तो है जल्दी ही आएँगी। ठीक से बता नहीं सकता कब तक आएँगी।'

तुम्हारे वापस आने की खबर सुन मथुरा का चेहरा खुशी से खिल उठा। उसकी हँसी, मन की खुशी का प्रभाव मेरे प्राणों पर भी पड़ा।

घड़ी में देखा साढ़े नौ बजे हैं। फिर भी एक सिगरेट जला कर दोनों तकियों को बाँहों में कस कर लेट गया। एक-दो कश खींच कर, सपनों के राज्य में जाने के लिए, मन को तभी लगभग दस हजार फिट की ऊँचाई पर ले गया था कि किसी ने दरवाजे पर नॉक किया।

'कौन ?'

'मैं—रत्ना भाभी।'

मन ही मन डर जाने पर भी मैं चिल्लाया,—'कॅम इन रत्ना भाभी, कॅम इन।'

एक हाथ से सनग्लास खोलते खोलते, दूसरे हाथ से दरवाजा धकेल कर मेरी, तुम्हारी और अनेक भारतवासियों की रत्ना भाभी ने कमरे में पाँव रखा।

'मामला क्या है ? नवाबपुत्र अभी तक बिस्तर पर पड़े-पड़े करवट बदल रहे हैं ?'

'आज पार्लियामेण्ट का सेशन नहीं है, निकलने की जल्दी भी नहीं है। इसीलिए जाग कर लेटे-लेटे सपना देख रहा हूँ।'

भौहें सिकोड़ती, होंठ दाँतों के बीच दबा कर, चेहरे पर हँसी की आभा बिखेरती रत्ना भाभी बोली—'तापसी का भाग्य अच्छा है।'

उसके बाद अपने मन में बोली—'अभी यह हाल है, शादी के बाद न जाने क्या होगा ?'

मैं बोला—'और क्या करूँगा ? तुम और सुभापदा....'

आगे बढ़ने नहीं दिया रत्ना भाभी ने। बोलीं—'बच्चू, हर समय बन्दरपना मत किया कर, समझा ?'

बिस्तर पर उठ बैठा। सिर खुजलाते हुये बोला,—'ग्रीकों की एफ्रोडाइट, रोमनों की 'वीनस', अजन्ता की 'मारकन्या', भुवनेश्वर की 'नायिका' और लेटेस्ट रवीन्द्रनाथ के अनुसार चित्रांगदा—जैसे प्रेयसी के रूप में हर जगह वन्दिता है, वैसी ही तुम सुभापदा के लिए नित्य पूजित हो। इसीलिए कह रहा था कि तुम लोग का पदानुसरण करने पर मेरा जीवन भी धन्य होगा।'

'लगता है, तापसी के विलायत चले जाने से तू खूब ज्यादा बहक गया है।'

जीभ से होठों को गीला करते हुए जरा तिरछी नजर कर मंतव्य कर बैठा—

'वह रहती तो उसका मुँह ताकते हुए दिन बीत जाता और कुछ करने का समय कहाँ मिलता ?'

रत्ना भाभी मुझे खदेड़ कर मारने दौड़ी तो चट से बाथरूम में जा घुसा।

अभी तक मजाक कर रहा था, लेकिन अब मन ही मन डरा। रत्ना भाभी की बात ही और है। डरा....न जाने क्या करती हैं, क्या कहती हैं ? जानती हो मेम साहब, जो लोग रत्ना भाभी का अतीत-वर्तमान जानते हैं, वे उनसे डरे बगैर रह भी नहीं सकते।

....सुभापदा के साथ रत्ना भाभी की शादी मैंने नहीं देखी थी। लेकिन तीन-चार साल बाद स्टेट गवर्नमेण्ट से सेन्ट्रल गवर्नमेण्ट में ट्रांसफर होकर सुभापदा जब आए—रत्ना भाभी को बंगला प्रान्त की ग्राम्यवधु के रूप में ही देखा था। पहले दिन रत्ना भाभी को देख कर अच्छा लगा था पर उनके अंग-अंग पर तोला-तोला सोना देख समझ गया था, रत्ना भाभी के लिए दिल्ली दूर है।

साल पूरा होते न होते भारत सरकार की तरफ से बम्बई के एक विख्यात शिल्प प्रतिष्ठान की खोजबीन करने सुभापदा बम्बई चले गए। एक बार बम्बई जाने पर कोलाबा स्थित उनके फ्लैट में गया था लेकिन भेंट नहीं हुई। कोट-पैंट पहने बैरे ने कहा था, 'क्लब गए हैं।' मैंने सोचा सिर्फ सुभापदा ही गए है। इसलिए कहा—'ठीक है, मेम साहब से कहो बच्चू आए हैं।'

'मेम साहब भी क्लब में....'

व्यस्तता के कारण देर नहीं की। सीढ़ी से उतरते हुए अपने आप ही अपने मन से प्रश्न पूछा, 'रत्ना भाभी क्लब में गईं ?' अपने आप ही उत्तर भी दिया था, 'एक दिन के लिए गई होंगी, इसमें ताज्जुब की क्या बात है ?'

दो साल बीत गए। सुभापदा-रत्ना भाभी का कोई हाल नहीं मिला। अचानक एक दिन शाम को इंडिया गेट के पास ट्रैफिक सिग्नल पाइंट पर मेरी गाड़ी के बगल मे एक फियेट कार की स्टियरिंग पकड़े रत्ना भाभी को देखा। दो-चार दफा हार्न बजाने के बाद बाहर मुँह निकाल कर पुकारा, 'रत्ना भाभी।'

सनग्लास के भीतर से शायद पहले मुझे पहचानने मे कष्ट हो रहा था, कुछ खटका भी लगा होगा। पर खटका दूर होते ही चिल्ला उठीं, 'बच्चू, तू कैसा है ?'

मुँह निकाल कर और भी कुछ कहना चाहती थी, लेकिन इसी बीच लाल बत्ती हरी हो गई और पीछे की कारें धैर्यच्युत होकर बेसुरे ढंग से हार्न बजाने लगी। मैंने जल्दी से रास्ता पार कर कार रोक दी, रत्ना भाभी की कार भी आकर पास रुक गई।

रत्ना भाभी को उस शाम, इंडिया गेट के अस्तगामी सूर्य के सामना-सामनी देख कर मैं आश्चर्यचकित रह गया। दो साल में इतना परिवर्तन ! वह पहले की तरह डिजाइनों वाले सोने के गहने कहाँ गए ? दाहिने हाथ में एक बड़ी घड़ी, बस। ऊपर नजर उठाई तो देखा गले की पतली चेन में एक बड़ा-सा लौकेट है। वह भी हृदय

के अन्तरतम प्रदेश में आँख-मिचौली खेल रहा था। अच्छा, वह बड़ा सा जूड़ा कहाँ गया? न, वह भी नहीं है। काट-छाँट कर छोटे किए बाल खूब फूल रहे थे। ऐसी पतली बारीक तांत की साड़ी और एक ब्लाउज पहने हुए थी कि अन्दर की सिलुएट मूर्ति किसी भी पुरुष के लिए अगर शिराओं की पीड़ा का कारण न भी बने तो भी मर्म पीड़ा का कारण बन ही सकती थी।

मेरी आँखों में दुष्टतापूर्ण हँसी जरूर उभर आई होगी। रत्ना भाभी ने अब अपने रंगीन होठों पर हँसी बिखेरते हुए कहा, 'क्यों रे बच्चू, कुछ बोलता क्यों नहीं?'

'तुम तो आजकल रत्ना भाभी नहीं हो, रत्न भाभी हो गई हो। इसलिये तुमको जरा एक्सरे की नजरों से देख रहा था।'

इसके बाद सुभापदा दिल्ली के बाहर नहीं गये। रत्ना भाभी से मेरी बार-बार मुलाकात होने लगी। कभी-कभी होटल, रेस्ट्रेण्टों या डिप्लोमेटिक पार्टियों में भी भेंट होती। सुभापदा भारत सरकार के एक उच्चपद पर नियुक्त क्षमतासम्पन्न अधिकारी थे। वे अपने आभिजात्य और गाम्भीर्य की रक्षा करने पर भी रत्ना भाभी अपने रत्न-संभार की प्रदर्शनी लेकर बहुत अधिक मशहूर हो उठी थी। मुझे कैसा खटका-सा लगा, मन में जैसे कोई काँटा चुभा हो। काफी दिनों बाद रत्ना भाभी का रहस्य ज्ञात हुआ था। सुभापदा के एक सहकर्मी की पत्नी ने बताया था।

....इलाहाबाद से दिल्ली आते समय अकस्मात मिसेज मदनलाल से भेंट हो गई। साथ में एकमात्र पुरुष और अभिभावक के रूप में था सात-आठ साल का नाती। मुझे देख कर भद्र महिला बड़ी खुश हुई। बोलीं, 'सोच रही थी कि सारा दिन कैसे बीतेगा, चलो, तुम्हें पाकर वह डर कम हो गया।'

मिसेज मदनलाल ने बताया, 'लड़की-दामाद को देखने कलकत्ते गई थी। लगभग दस दिन रह कर नाती के साथ दिल्ली वापस जा रही हूँ।'

मिस्टर मदनलाल और सुभापदा भारत सरकार की एक ही मिनिस्ट्री में बहुत दिनों तक काम कर चुके हैं। आजकल मिस्टर मदनलाल केस्पेशल से सेक्रेटरी होकर दूसरी मिनिस्ट्री में चले जाने पर भी सुभापदा और रत्ना भाभी के साथ काफी घनिष्ठता है। उस दिन कालका मेल पर इलाहाबाद से दिल्ली आते समय रत्ना भाभी की कहानी सुनी थी।

....ट्रेडिशनल बंगाली घर की बहूरानी रत्ना भाभी को बम्बई में 'रत्ना' बना डाला था मिस परांजपे ने। दो बार शादी और दो बार विवाह-विच्छेद कर मिस परांजपे फिर तिबारा के लिए कुमारी जीवन में लौट आई हैं। तीसरी बार कुमारी जीवन में लौट कर मिस पराजपे ने जिस फर्म में रिसेप्शनिस्ट की नौकरी कर ली थी उसी फर्म की देखरेख का भार भारत सरकार ने सुभापदा पर सौंपा था। कुछ दिनों तक इस फार्म में काम करने के बाद व्यापार-वाणिज्य की दुनिया के हजारों गुप्त रहस्यों के बारे में जान गई थी मिस परांजपे। ठीक इसी शुभ मुहूर्त में परिचय हुआ रत्ना भाभी से।

मिस परांजपे रत्ना भाभी के निस्संग जीवन की एकमात्र सखी बनीं। धीरे-

धीरे सखी के अनुरोध पर घूंघट खोला, ब्लाउज की बाँहें कटवाईं, डिजाइनें बदली। 'शिथिल कँवरी बांधते' की समस्या दूर कर बालों को बॉन्ड् करवाया। साल खत्म होते न होते रत्ना भाभी का मिस परांजपे के हाथों नवजन्म हुआ। माथे से रक्त वर्ण बिन्दी उड़ गई पर अधर लाल हुए। आँखों में काजल घुला कर कालिमा बढाई गई। इतना ही नहीं, रत्ना भाभी ने अंग्रेजी के अलावा और सभी भाषाओं का त्याग किया। समाज में नाना प्रकार के लोगों से मिलने के कारण अर्थ और प्रचार के प्रति रत्ना भाभी का आकर्षण बहुत बढ़ गया।

इस बीच मिस परांजपे ने नौकरी छोड़ व्यापार करने का आयोजन पूरा कर, रत्ना भाभी के आगे प्रस्ताव रखा—'चलो, हम दोनों मिल कर कुछ करें।'

रत्ना भाभी एक ही छलांग मे कूद पड़ीं। दोनों ने मिल कर एक विख्यात इंश्योरेंस कम्पनी की एजेंसी ली। सुभापदा का यश और प्रताप, उस पर दो सर्वा-धुनिकाओं की आन्तरिक चेष्टा के जोर से पहला केस चार ही महीने में मिला। बडौदा के वेस्टर्न इलेक्ट्रिक कम्पनी का नया कारखाना डेढ करोड़ रुपए मे इंश्योर्ड हुआ।

जूहू-बीच में कॉटेज किराये पर लेकर रत्ना भाभी और मिस परांजपे ने पार्टी दी, जिसे उनके पहले शिकार ने सेलीब्रेट किया। जाने-माने, रथी-महारथी बहुत लोग आये थे उस पार्टी में। इन लोगों ने ऐसी महिमामयी नारियों को 'वाहवाही' दी थी।

इसी पार्टी में मिस कुन्दन लाल के साथ दूसरी बार भेंट हुई, रेसकोर्स के मैदान में उसके साथ घनिष्ठता हुई रत्ना भाभी और मिस परांजपे की। रत्ना भाभी के टिप्स पर ट्रिबल टोट का खेल खेल कर कुन्दन लाल एक शनिवार की दोपहर को लगभग छत्तीस हजार रुपये जीत गये। तभी से रत्ना भाभी पर उनकी अगाध श्रद्धा हुई। उस श्रद्धा का प्रीमियम पाते-पाते आठ महीने निकल गये। आठ महीने बाद एक परम शुभलग्न में कुन्दन लाल का नासिक का कारखाना इंश्योर्ड हुआ पचहत्तर लाख रुपये में।

डेढ़ साल में कुल साढ़े चार करोड रुपये का केस मिला था इन दोनों को। इसके बाद ही बदली होकर सुभापदा दिल्ली में, ऐसे एक डिपार्टमेण्ट का चार्ज पाकर आए कि रत्ना भाभी के काम में और सुविधा हो गई। नए कारखाने के लिए फारेन कोलेबोरेशन और फारेन एक्सचेंज पाने के लिए सभी शिल्प प्रतिष्ठानों के आवेदन-पत्रों पर सुभापदा के ऑटोग्राफ की जरूरत रहती। इन सब कामों में प्रचुर आलाप-आलोचना की जरूरत पड़ती है। ऑफिस में समय न मिलता तो आवेदनकर्त्ताओं को ज्यादातर सुभापदा के बंगले पर आना पडता। इनमें से प्रायः सभी रत्ना भाभी की उज्ज्वलता और व्यवहार से मुग्ध हो जाते और इसी सूत्र को पकड़ कर रत्ना भाभी अपना इण्डी-पेण्डेण्ट बिजनेस अच्छा ही चला रही थीं।

रत्ना भाभी का यह इतिहास मुझे ज्ञात होने के कारण ही, उस दिन अचानक मेरे यहाँ आने पर, मुझे कुछ सन्देह-सा हुआ। बाथरूम से निकलते वक्त पाँव जैसे काँप उठे। दुर्गा माँ का नाम स्मरण कर बाहर आते ही सीधे पूछ बैठा, 'बोलो रत्ना भाभी, आज सुप्रभात में किस मतलब से तुम्हारा आविर्भाव हुआ है ?'

रत्ना भाभी अस्त-व्यस्त-सी कुछ असामान्य अवस्था में बैठी थीं। देखने में नहीं लग रही थीं, फिर भी कोंचता हुआ बोला, 'ठीक से बैठो, और बताओ क्या है ?'

'आह ! डोन्ट बी सिली बच्चू।'

अन्त में बहुत देर बाद ना-नाकुर करती हुई रत्ना भाभी पूछ बैठीं, 'तेरे मिनिस्टर भारद्वाज की तो काफी खातिर-तवज्जो है। एक काम करना है। करेगा ?'

'सम्भव होगा तो जरूर करूँगा।'

रत्ना भाभी ने बताया—'नई-नई इण्डस्ट्रीज के लिए वेलफेयर प्रोग्राम इवैल्यू कमिटि एपाइण्ट की जा रही है। उस कमिटि में दो एक स्पेशल वर्कर चाहिए। लिए कह रही थी—तू अगर जरा भारद्वाज से कह देता...'

'वह तो बाद की बात है। इधर तीन-साढ़े तीन लाख रुपये की लागत से कॉलोनी में मकान खरीदा, सुभापदा के साथ जापान घूम आईं—वह सब कब सेल करोगी ?'

रत्ना भाभी ने दोनों हाथ बढ़ा कर मुझे अपने कोमल हृदय से लगा लिया 'एनी डे यू लाइक, माई बॉय। लेकिन अच्छे भइया, मेरा काम कर दे।'

दूसरे दिन रत्ना भाभी ने एक ग्राण्ड डिनर खिलाया, नाइट शो सिनेमा दिखा मैंने यथासाध्य कोशिश करने का वादा किया रत्ना भाभी से। मैं खूब जानता था, भाभी इस कमिटि की मेम्बर हो जाएँगी तो और कुछ नए शिल्पपतियों के सम्पर्क आएँगी और उनके व्यवसाय के क्षेत्र के बढ़ने की काफी संभावना रहेगी। इसके अ स्पेशल वर्कर के नाम से रत्ना भाभी को चालू करने में मेरा कोई आग्रह न था। इसी भारद्वाज से मैंने अनुरोध भी नहीं किया।

महीने भर बाद उस कमिटि के बारे में भारद्वाज से पता किया। पता च समाज सेविका रत्ना भाभी को उसमें स्थान मिला है। भारद्वाज के कमरे से निकल रत्ना भाभी को फोन पर बताया—'तुम्हारा तो हो गया।'

रत्ना भाभी अकेले मुझ पर निर्भर न थीं। फिर भी धन्यवाद जताया।

जानती हो मेम साहब, सुभापदा की ख्याति भारत सरकार में हर जगह है। मिनिस्टर, बहुत बार पालियामेण्ट में, सुभापदा की कर्मनिष्ठा और निपुण की प्रशंसा कर चुके हैं। लेकिन रत्ना भाभी की कहानी कोई नहीं जानता है। बा दुनिया के सामने वह एक सच्चे आफिसर की पत्नी और स्वनामधन्या समाज सेविका बम्बई के मालाबार हिल्स के एक फ्लैट में जो मिस परांजपे रहती हैं, उनके साथ र भाभी की घनिष्ठता की कहानी क्या दुनिया कभी जान पाएगी ? शायद नहीं, क्यों ये ही हमारे अभिभावक हैं—ये ही तो समाज-सेवा के कर्णधार हैं।

प्यार।

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

जीवन के परम लग्न में हम मिले थे। उद्दाम उन्मत्त पद्मानदी-सा मेरा जीवन, उसमें तुम भागीरथी की तरह प्रशान्त पवित्रता लाई थीं। आज की तरह ही एक दिन, शहर से बहुत दूर मैं और तुम पहली बार मिले थे, एकात्मा हुए थे। वह जगह थी मरुभूमि राजपूताने का ऐतिहासिक प्राणकेन्द्र उदयपुर का रेस्ट हाउस। रेस्ट हाउस की खिड़की से उस दिन मैंने सिर्फ राणा प्रताप का महल ही नहीं देखा था, देखा था तुम्हें, देखा था सपना। राजपूताने के रूखे प्रान्त में उस दिन दो जीवित फूलों को जीवन-सूर्य ने पहली बार छुआ था। याद आता है, क्या उस ऐतिहासिक शरत्-सन्ध्या मे लेक में हमारा नौका विहार ? याद आता है, क्या उस दिन शाम को हमारे जीवन में संगीत के सुर एक ही आवाज, एक ही मन्त्र में बज उठे थे ?

मेम साहब, तुम पास होतीं तो उस दिन की स्मृति मुझे इस तरह से पागल न बनाती। लेकिन जब से तुम मेरे जीवन में आई हो, इस पहली शरत् ऋतु में मैं अकेला निस्संग हूँ। वर्षा-क्लान्त शरत् ऋतु में जो नीला आसमान, मनुष्य के मन में नए दिन का नया जीवन लाता है, उसी आसमान पर गुच्छे-गुच्छे सफेद बादल मैं सहन नहीं कर पा रहा हूँ। यूँ लग रहा है, ये टुकड़े-टुकड़े बादल नाच-नाच कर मेरे निस्संग जीवन की हँसी उड़ा रहे हैं। अच्छा, यह बताओ मेम साहब, तुम्हारे मन मे भी क्या दर्द हो रहा है ? लग रहा है कि अंदर मन के कोई करुण स्वरों में भाटियाली गीत गा रहा है ?

भवानी कुमार भारतवर्ष के यशस्वी चलचित्र अभिनेता भले हों, उनकी पार्टी में मैं न जाता अगर मेरा मन ठीक रहता। उस दिन सोचा, कुछ समय के लिए जाने पर अपने को भूला जा सकता है। इसके अलावा तुम तो जानती हो कि भवानी कुमार आज का मशहूर अभिनेता जरूर है, मेरा बहुत पुराना परिचित है। इन दिनों कश्मीर या दिल्ली में आउटडोर शूटिंग के लिए भवानी अक्सर बम्बई से यहाँ आता है। यहाँ आते ही मुझे बुलाता है, ड्रिंक्स या डिनर या दोनों के लिए। किसी न किसी बहाने उसका इनवीटेशन एक्सेप्ट नहीं करता हूँ, लेकिन उस दिन रात का निमन्त्रण लौटाया नहीं।

भवानी ने शाम के बाद ही अपने होटल में बुलाया था। लेकिन जैसे ही निकलने को हुआ एक दोस्त आ गए। होटल में पहुँचते-पहुँचते लगभग सवा आठ बज गए। रूम नम्बर फाइव वन टू के सामने जाकर खड़े होते ही अन्दर से मीठी हँसी की लहर मेरे कानों से आ टकराई। दरवाजा नॉक करते-करते मैंने हाथ खींच लिया। स्टेपिंग की आवाज के साथ-साथ द्वैत हँसी का आर्केस्ट्रा सुना मैंने। साफ समझ में आ रहा था कि भीतर वसन्तोत्सव चल रहा है। एक बार लगा लौट जाऊँ, फिर मन में आया लौटूँगा नहीं। दो-चार-दस मिनट कट गए। अन्त में दरवाजा नॉक करके आवाज लगाई, 'भवानी'। पहली बार में कोई जवाब नहीं आया, दुबारा नॉक किया।

भीतर से चिल्ला कर जवाब आया—'कम इन बच्चू।'

दरवाजा खोल कर कमरे मे एक पैर रखते ही मैं ठिठक गया। देखा, सोफे एक कोने में सरका कर मस्त भवानी, दो सुन्दरियों के हाथ पकड़ कर नाच रहा है। मुझे इशारे से बुलाने पर भी मैं खड़ा ही रहा। जेब से रुमाल निकाल कर मैंने अपना चेहरा पोंछा, टाई की नॉट ठीक की। दोनों लड़कियों ने एक बार मेरी तरफ देखा फिर 'हा हू' चिल्लाती हुई कई चक्कर घूम गईं।

नाच रुका। भवानी ने क्षण भर के लिए दोनों लड़कियों को बाँहों में भर लिया, चूमा, फिर छोड़ दिया। फिर खुशी के मारे दौड़ कर आया। मुझसे लिपट कर बोला, 'वी आर मीटिंग आफ्टर ए लॉग टाइम, है न ?'

'हाँ,' मैंने छोटा-सा उत्तर दिया।

'गर्ल्स कॅम आन', भवानी ने लड़कियों को पुकारा—'मीट माई फ्रेण्ड बच्चू दि जर्नलिस्ट।'

दो सुन्दर नरम हाथ मेरी तरफ बढ़ आए। मुस्कुरा कर दोनों से हाथ मिलाया।

'भवानी, इन्हे तो मेरा परिचय मिल गया, लेकिन मैं तो परिचित नहीं हुआ।'

'आई सी। विख्यात आई० सी० एस० मिस्टर आर० एन० फक्कड़ की कन्याएँ मिस गंगा फक्कड और मिस यमुना फक्कड़।'

उन लोगों ने भारतीय रीति से हाथ जोड कर नमस्कार नही किया, सिर नवा कर स्वीकृति जताई मिस गंगा फक्कड़ और मिस यमुना फक्कड़ ने।

उसके बाद कोने मे रखे दो सिंगिल सोफो पर घुस-घुसा कर हम चारों बैठे। मेरे पास गंगा या यमुना बैठी, कह नहीं सकता हूँ, पर दोनों बहनों की पवित्रता एक ही-सी है, यह बात उस रात समझने में देर नहीं लगी।

कैनेडियन ह्विस्की और सोडा डाल कर भवानी ने चार गिलास भरे। उसी ने पहला गिलास उठा कर कहा, 'चियर्स। लेट अस ड्रिंक दि हेल्थ ऑफ बच्चू।'

मैंने बाधा दी—'जौली गुड गर्ल्स गंगा-यमुना का यौवन सदा ऐसा ही बना रहे।'

जरा-सा भी विलम्ब किए बगैर भवानी अपना गिलास उठा कर चिल्लाया—'चियर्स गंगा-यमुना।'

एक घूँट पी कर सबने गिलास मेज पर रखा। भवानी ने पूछा,—'गंगा सिगरेट कहाँ है ?'

'जस्ट ए मिनट', कहती हुई मिस फक्कड मेरे सोफे से उठ कर बेडरूम में चली गई। सिगरेट का टिन और लाइटर ले आई। भवानी के होंठो के बीच सिगरेट फँसा, गंगा ने लाइटर जलाया। यमुना ने स्वय उठा लिया। हजार हो, संभ्रान्त आई० सी० एस० की लड़की, गंगा की सौजन्यता में कोई त्रुटि न थी। मेरे होंठो के बीच-भी सिगरेट फँसा कर लाइटर जलाया। न जाने कैसी शरारत सूझी। सिगरेट न जला कर लाइटर की रोशनी में मैंने गंगा का चेहरा अच्छी तरह से देखा। देखी उसकी भूखी दो आँखें और अनुभव किया उसकी गरम दीर्घ साँस का जलता स्पर्श। निचला होंठ दाँतों

के बीच दबा कर गंगा जरा-सा हँसी। यह सब कुछ ही क्षणों में हो गया। भवानी समझ न जाए इस डर से मैंने जल्दी से सिगरेट जला कर धुँआ छोड़ा। इसके बाद अपनी जेब से लाइटर निकाल कर, जल्दी से, गंगा का सिगरेट जला दिया। जानती हो मेम साहब, गंगा ने मेरे दोनों गालों को दबाते हुए कहा था—'थैंक यू।'

इसके बाद के राउण्ड में आधा पीते न पीते यमुना थक कर भवानी की छाती पर लुढक गई। भवानी ने कहा, 'अभी तो सिर्फ दस बजा है। अभी से टायर्ड ?'

दोनों हाथों से भवानी के गले से लिपटती हुई मिस यमुना फक्कड़ बोली, 'जरा भी टायर्ड नहीं हुई हूँ। स्टोरिंग एनर्जी फॉर बेटर पार्ट ऑफ नाइट ?'

अँगुली से गंगा का चेहरा अपनी तरफ घुमा कर मैंने पूछा, 'यू डोण्ट फील नेसेसिटी टू स्टोर एनर्जी फॉर बेटर पार्ट ऑफ नाइट ?'

'आपसे कहीं ज्यादा एनर्जी मुझमें है।'

मन ही मन सोचा, इसमें क्या सन्देह है।

ज्यों-ज्यों रात गहराने लगी मिस गंगा फक्कड़ के साथ मेरी मित्रता भी बढ़ी। मैंने प्रश्न पूछा था—'भवानी को कैसे शिकार बनाया ?'

उसके बाद वह कहानी सुनी थी।—राजधानी दिल्ली के समाज में विशेष स्थान रखने वाले वी० आई० पी० मिस्टर आर० एन० फक्कड़, आई० सी० एस० दोनों कन्याओं और पत्नी को लेकर कुछ साल पहले मई के बीचों बीच, गए थे गुलमर्ग। तीन साल बाद किसी तरह से सात दिन का समय निकाल कर बम्बई के विख्यात अभिनेता भवानी कुमार भी उन्हीं दिनों गुलमर्ग में थे। हेवी सनग्लास की आड़ में दो दिन अपने को छिपाए रखने पर भी, तीसरे दिन गंगा के हाथों पकड़े गए। होटल के लाउंज में, गंगा मुस्कुराती हुई बगल से निकल गई, मुँह से एक शब्द नहीं कहा। यमुना, डैडी या मम्मी से भी नहीं बताया। यमुना के सोते ही, उसी रात, गंगा दबे पाँव अपने कमरे से निकल आई। भवानी के कमरे का दरवाजा नॉक किया। भवानी ने सोचा ड्रिंक लेकर बैरा आया है। बुलाया था—'कम इन।'

प्रसिद्ध फिल्म स्टार भवानी घबड़ाया नहीं। भारतवर्ष के अनेकों होटलों में, रातों को, उसके कमरे में ऐसे अतिथि आ चुके थे। बुलाया था। बगल में बैठाया था, परिचय किया था, ड्रिंक ऑफर किया था। उसके बाद और कुछ भी हुआ ही होगा, लेकिन जाने दो उस बात को। अन्त में नशे से चूर गंगा भवानी के बिस्तर पर लुढक गई थी। बेहोश गंगा को उसके कमरे मे भवानी लेकर छोड़ने गया। वहीं देखा था यमुना को।

दूसरे दिन भोर को, भवानी ने ही आकर नॉक किया था, गंगा-यमुना के कमरे में। गंगा सो रही थी। यमुना ने दरवाजा खोलते ही देखा था, भारतवर्ष की लाखों युवतियों के हृदय सम्राट् भवानी कुमार को। लगभग मूर्छा आने को हुई। खैर, लम्बी कहानी फिर कभी सुनाऊँगा। सिर्फ इतना याद रखो कि छुट्टी के शेष में, भवानी ने बड़ी मस्ती से बिताए थे। गंगा-यमुना का सम्पूर्ण सान्निध्य था।

कुमार के साथ लड़कियों की घनिष्टता देख कर मिस्टर फक्कड़ मुग्ध हो गए थे। खुशी से फटी पड़ रही थीं मिसेज फक्कड़।

इसी नाटक का दूसरा अंक, कुछ कुछ दिनों के अन्तराल में, दिल्ली में खेला जाता है। दिल्ली मे भवानी के आते ही एक मक्खी तक उसके पास नहीं फटक सकती है। दिल्ली निवास के दिनों को भवानी, खुशी-खुशी गंगा-यमुना की बाँहो में कैद होकर, काट देता है।

उस रात उनकी घनिष्ठता के बहुत सारे प्रमाण मिले थे मुझे। उस कहानी का विवरण सिर्फ तुम्हारे कानों में बता सकता हूँ। तुम लौट आओ तब बताऊँगा। जानती हो मेम साहब, जब से गंगा यमुना की घनिष्ठता भवानी कुमार के साथ हुई है तब से दिल्ली के सामाजिक जीवन में मिसेज फक्कड़ का प्रभाव थ्री-स्टेज-रॉकेट की तरह हर क्षण, हर पल सैकड़ों योजन बढता जा रहा है। और मिस्टर फक्कड़? अनेकों बैचलर आई० ए० एस० ने उनके पैरों का धोवन पीना शुरू कर दिया है। और भवानी के मित्र के रूप मे मेरा, फक्कड़-गृह पर, बेहद प्रभाव प्रसारित हो रहा है।

प्यार।

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

जब तुम्हें अपने निकट पाता था तब लगता था अपनी बात हमने की ही नहीं। हर दिन हर पल हमने एक साथ बिताए थे। कभी-कभी सारी रात बातें करते रहते, पलकें तक झपकाना भूल जाते थे। लेकिन उन सारे मधुर दिनों के अन्त में लगता—बातें अभी खत्म नहीं हुई हैं। दोनों के हँसने-रोने, सुख-दुःख, आशा-निराशा और भविष्य की बातों का अन्त नही हुआ है। कभी-कभी लगता युगों से हमारे बीच बातें जमा हो रही हैं लेकिन सब कुछ बताने का मौका ही नही मिला है। इसीलिए तो, बाहरी दुनिया में इतने लोगो के सम्पर्क में आता हूँ, बहुतो की बातें तुम्हे नही बता पाया हूँ। बता नही सका हूँ उनके विचित्र जीवन की नाटकीय कथा। तुम्हारे विदेश में रहने से जहाँ बहुत-सी बातों से मैं वंचित हूँ, वहाँ कम से कम मुझे दूसरों की बातें बताने का अवसर तो मिला है। मेरे कार्यकारी जीवन से जो जुड़े हैं उनमें एक हैं मिस्टर लुटपाटिया। आज तुम्हे उन्ही की बातें बताऊँगा।

स्वाधीन भारतवर्ष ने दुर्दान्त दामोदर नदी के पाँवों में बेड़ी पहनाई डी० वी० सी० बना कर। भाखड़ा-नंगल बना, बंगाल-बिहार के रूखे प्रान्त में उग आया चित्त-रंजन-सिन्द्री। जंगल काट कर दुर्गापुर बसा, राउरकेला-भिलाई की गगनचुम्बी चिमनियाँ

दिखाई पड़ने लगी। बंगलौर के बागों की ख्याति को म्लान कर वहाँ तैयार होने वाले जंगी जहाजों के कारखाने की कहानी चारों ओर प्रसारित होने लगी।

देश स्वाधीन होने के बाद और भी बातें हुई हैं। एम० एल० ए०, एम० पी० के झुण्ड अब जैसे बातों ही बातों में मंत्रियों को अँगूठा दिखाते है, सरकारी वैधानिक व्यवस्था के प्रति अश्रद्धा प्रकट करते हैं, बताशे की लूट बिखेरने की तरह कैरेक्टर सर्टीफिकेट बिखेर रहे हैं, पहले ऐसा नहीं होता था। पहले मंत्रियों का रूप कुछ अन्य ही होता था। आज की तरह पहले वे लोग 'सविनय निवेदनम्' हो देश-सेवक का तिलक लगा कर, अधिकारों का उपभोग नहीं करते थे। उन दिनों सर्वत्यागी देशभक्त होते हुए भी, सरकारी खजाने से अस्सी-नब्बे हजार लेकर, घर-द्वार फर्निश करने का मौका नहीं मिलता था। और भी बहुत कुछ न था। न था सनफ्रांसिस्को से टोकियो घूमने का सुअवसर, न ही चार्टर्ड प्लेन मे सैकड़ों मील दूर उड़ कर खैराती होमियो क्लीनिक का उद्घाटन करने का रिवाज था। अतीत में तो, लाखों की इम्पाला कार में चढ़ कर, सोशलिज्म का राग अलापने का भी रिवाज न था। आज तो यह सब जैसे चनाचूर-सा सस्ता हो गया है।

सिर्फ इतना ही नहीं। पहले रोज शाम को प्रार्थना सभा मे गांधी जी पाँच-सात मिनट के लिए भाषण देते थे। जवाहरलाल, सुभाषचन्द्र, सरदार पटेल या और दो-चार नेताओं के अतिरिक्त, किसी नेता का विवृत या भाषण अखबारों मे नहीं छपता था। लेकिन आज? आजकल तो अखबारों में मंत्रियों की वक्तृता और हितोपदेश के अलावा कुछ रहता ही नहीं है। भाषण देखते ही पाठक-पाठिकाओं को एलर्जी-सी होती है, लेकिन मंत्रिगण तो इससे छुटकारा देंगे नहीं।

काण्ट्रेक्टर, परमिट होल्डर, शिल्पपति और बड़े-बड़े व्यवसायी पहले भी थे, आज भी है। देश तो रगड-रगड़ कर बढ़ रहा है पर ये लोग दौड़ रहे हैं। पहले टैक्स कम था, कार और घरों की भी कमी थी। आजकल टैक्स पर टैक्स बढ़ा है, घर और सवारियाँ बढ़ी हैं, क्षमता बढ़ी है। स्वाधीन भारत मे ग्रेजुएट काण्ट्रेक्टर हो रहे हैं, लोअर डिविजन क्लर्क एम० ए० पास होते हैं, शरीफ घरों की लड़कियाँ फिल्मस्टार बन रही हैं, नर्तकियो का प्रभाव आई० सी० एस० से कहीं ज्यादा है। और भी बहुत कुछ हुआ है। इंफार्मेशन ऑफिसर, पब्लिसिटी ऑफिसर के दलों का आविर्भाव हुआ है। लेकिन सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण पद है प्राइवेट सेक्रेटरी और पर्सनल असिस्टेन्टों का।

बाहरी दुनिया के लोगों को ठीक से आइडिया नहीं है कि पी० एस० और पी० ए० क्या चीज है। बहुत से लोग मुझसे भी पूछते हैं। हाथ में वक्त रहता तो इन्हे खूब लम्बी-चौड़ी वक्तृता देते हुए पूरी कहानी समझाता वरना सिर्फ इतना कहता, 'मध्यसत्ता-भोगी—इण्टरमीडियरी'।

सच कह रहा हूँ, कसम से, दिल्ली के प्रभुओं के प्राइवेट सेक्रेटरियों का यह झुण्ड अजीब ही है। ये न तो मिनिस्टर हैं, न अफसर, लेकिन दोनों के अंश विशेष हैं। ये मंत्रियों की खुशामद करके अफसरों को जहाँ डांट लगाते हैं वहीं मौका पड़ने पर अफसरों के तलुओं में तेल मर्दन कर मंत्रियों को डरा देते हैं।

प्रसिद्ध मंत्री मिस्टर हलुआ के प्राइवेट सेक्रेटरी हैं मिस्टर लुटपाटिया। इन-सा इण्टरेस्टिंग इसान दिल्ली क्यों, लंदन-वॉशिंगटन, पेरिस, मास्को तक में मिलेगा या नहीं, इस पर सन्देह है। अगर किसी दिन भगवान् ने समय और मौका दिया और उससे भी बढ़ कर इस बात की ताक़त दे तो अवश्य ही इनकी जीवनी लिखूंगा। मैं, निश्चित रूप से जानता हूँ, राजकपूर, सत्यजीत राय से लेकर मेट्रो-गोल्डन मेयर, ट्वेण्टीयेथ सेंचुरी फॉक्स वगैरह, सभी, इस पुस्तक की फिल्म बनाने की अनुमति मांगने दौड़े आएंगे मेरे पास। इतना ही नहीं। लंदन टाइम्स के लिटेररी सप्लीमेण्ट के स्पेशल इशू में इसका रिव्यू निकलेगा। इस पुस्तक के लिखने की प्रेरणा के बारे में, सुनने के लिए, बी० बी० सी०, कोलम्बिया ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन, अमेरिकन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन, मॉस्को टेलीविजन वगैरह, संसार के सभी टेलीविजन कम्पनी के कारस्पॉण्डेण्ट व कैमरामैन, मेरे ड्राइंग रूम में भीड़ लगाये इकट्ठा होंगे।

इस तरह की एक सेंसेशनल पुस्तक लिख कर मैं झंझट बढ़ाना नहीं चाहता हूँ—इसीलिए तो आगे नहीं बढ़ रहा हूँ। इसके अलावा इस किताब की इंकम कई करोड़ रुपये होने पर मेरा मस्तिष्क विकृत होने की बहुत सम्भावना है। इसीलिए यह रिस्क लिया ही क्यों जाये?

दिल्ली आने के कुछ ही दिनों में लुटपाटिया की बात एक एमपियों के अड्डे में सुनी थी। मशहूर एम० पी० होने के नाते उनसे बहुत लोगों को बहुत तरह की आशाएँ हैं। उनसे इण्डियन डांस एसोसिएशन भी कुछ आशाएँ रखता है। मिस डैनियल और मिसेज प्रधान ने ऐसा इन एम० पी० महोदय को धर दबोचा है कि वह 'न' नहीं कर सके। भद्र महोदय ने मिनिस्टर से कहा और मिनिस्टर साहब पांच लाख देने को तैयार हो गये। लेकिन महीने और फिर साल बीत गये, रुपया न मिला। मिसेज प्रधान जैसी विशेष बान्धवी के आगे उनका एम० पी० का सम्मान घटने की नौबत आ गई। ठीक ऐसे ही समय में जिन्होंने इस समस्या का समाधान कर दिया, वे और कोई नहीं—स्वयं मिस्टर लुटपाटिया ही थे। प्राइवेट सेक्रेटरी टू आनरेबल मिनिस्टर मिस्टर आर० बी० हलुआ।

रिजर्व बैंक का चेक, सिर्फ पाँच ही सात दिनों में डांस एक्सपोर्ट एसोसिएशन के दफ्तर में पहुँच गया था। उससे पहले मिस्टर लुटपाटिया ने एसोसिएशन के काम-काज और डांसरों के बारे में सब कुछ जानने की इच्छा प्रकट की थी। दिल्ली रहने पर और लोगों के कारण, क्षण भर को सांस तक लेना दूभर होता है। इसलिए निरुपाय हो मिसेज प्रधान के साथ मिस्टर लुटपाटिया दो-चार दिनों के लिए मंसूरी चले गये थे। वहीं उन्होंने सब कुछ जान लिया था। मिनिस्टर एम० पी० से प्रामिस करने के बावजूद पाँच लाख रुपये न दे सके। इधर बिना प्रामिस किये ही मिस्टर लुटपाटिया ने साढ़े सात लाख दे डाला। सुना है, इसके बाद मिसेज प्रधान कभी एम० पी० महोदय के दरबार में हाजिरी लगाने नहीं गई थीं।

कुछ अजीब ही ढंग से मेरी मुलाकात मिस्टर लुटपाटिया से हुई थी। फिर

परिचय घनिष्ठता में बदला। रायपुर कांग्रेस का सेशन कवर कर, दिल्ली लौटने के लिए रायपुर स्पेशल में, मैंने एक लोअर बर्थ रिजर्व करवाया। ट्रेन छूटने के घंटे भर पहले अपने बर्थ पर हाथ-पांव फैला कर लेट गया। कई दिनों के परिश्रम से थका होने के कारण लेटते ही नींद आ गई। अचानक किसी के कर्कश स्वरों ने मेरी नींद भगा दी। दांत पीसते हुए मुझसे पूछा, 'आप इस कम्पार्टमेंट में कैसे आ गये ?'

'क्या मतलब ?'

'इसके मतलब हैं कि यह कम्पार्टमेण्ट सेण्ट्रल मिनिस्टर मिस्टर हलुआ के नाम रिजर्व है।'

मैं जरा घबडाया। जल्दी से बिना कुछ कहे, अपने टिकट और रिजर्वेशन स्लिप का नम्बर, ट्रेन की लिस्ट से मिला लिया। देखा ठीक ही है। अपनी सीट पर लौट कर जम कर बैठा। फिर गला खँखार कर ऐसे बोला जैसे तानपूरा झनझना उठा हो—'आई एम सॉरी, यह मेरी ही बर्थ है।'

भद्र महाशय तिलमिला कर जल उठे—'क्या पागलों सा बक रहे हैं? यह आनरेबल मिनिस्टर के लिए रिजर्व है।'

मैं भी खूब सहज स्वरों मे बोला—'हो सकता है, लेकिन मेरी यह सीट छोड़ कर।'

'डोण्ट टॉक नॉनसेन्स।'

सोचा, महाशय मिनिस्टर के कोई स्टॉफ होंगे। यह नहीं जानता था कि यही मिस्टर लुटपाटिया हैं। जान जाता तो शायद उनके पैरों पर लोट जाता। कहता जहाँ-पनाह, बन्दे की गुस्ताखी माफ हो। हमारा दुर्भाग्य, मेरी अज्ञानता के कारण ही मैं ऐसे गौरव का अधिकारी न हो सका।

प्लेटफार्म पर दर्जनों टिकट चेकर और कलेक्टर खड़े थे। आवाज लगा कर उन्हे बुलाया। टिकट और रिजर्वेशन स्लिप चेक करके बोले, 'ठीक तो है लेकिन...'

'लेकिन क्या ?'

'अन्य कोई फोर बर्थ कम्पार्टमेण्ट खाली न होने की वजह से यही ऑनरेबल मिनिस्टर को एलॉट हुई है।' जरा इधर-उधर देख कर बोले, 'अगर काइण्डली किसी दूसरे कम्पार्टमेण्ट में चले जाते तो बड़ा उपकार होता।'

'दिमाग खराब है महाशय ! क्या मिनिस्टर इन तीन बर्थों पर चढ़ कर न जा सकेंगे ?'

रेल कर्मचारीगण हँसने लगे। लेकिन मन्त्री के अविभावक गुस्से और अपमान से जल उठे।—'अपना भला चाहते हैं तो सिधाई से उतर जाइये, वरना....'

'वरना क्या होगा ?'

मामला यह है कि मन्त्रीगण बिना किराये के फोर बर्थ कम्पार्टमेण्ट पर चढ़ कर घूमने के अधिकारी होते हैं। नागपुर स्पेशल की हमलोगों की यह बोगी, ग्रांट ट्रंक एक्सप्रेस से जोड़ दी जायेगी। मेरे कम्पार्टमेण्ट के अतिरिक्त बाकी सब मन्त्रियों के कब्जे में

थी। मिस्टर हलुआ ने बिल्कुल ईलेवेन्थ ऑवर में सोचा कि इसी ट्रेन से जाएँगे। इसलिए उपाय न देख रिजर्वेशन आफिसर ने मेरा कम्पार्टमेण्ट उन्हें एलाट कर दिया। सोचा था मुझे किसी और बोगी में डाल देंगे। पर उस हालत में मैं सीधे दिल्ली नहीं आ सकता था। इसीलिए रेल कर्मचारियों के अनुरोध या मंत्री कर्मचारी के आंख दिखाने पर भी मेरी राय कोई बदल न सका।

इधर हमारा तर्क-वितर्क चल ही रहा था कि मिस्टर हलुआ आ गये। मेरे साथ उनकी बेहद घनिष्ठता न सही, पालियामेंट के सेशन के दौरान गप्प-शप हुआ करती थी। इसलिए निर्विवाद कह बैठा, 'देखिये दादा जी, कैसा झमेला उठ खड़ा हुआ है। ये लोग कह रहे हैं मैं और आप एक ही कम्पार्टमेंट में नहीं जा सकते हैं। कितने आश्चर्य की बात है देखिये।'

हलुआ ठहरे नामी कांग्रेसी सोशलिस्ट। इच्छा रहते हुए भी यह न कह सके कि मेरे साथ चलने में उन्हें एतराज है। खैर—अन्त में मंत्रीवर को एक कूपे दिया गया और मन्त्री के दो व्यक्तिगत कर्मचारी मेरे कम्पार्टमेंट में आये।

घंटे या डेढ़ घंटे लेट होकर ट्रेन आठ या नौ बजे छूटी। कुछ देर तक जागता रहा लेकिन लज्जावश मन्त्री के व्यक्तिगत कर्मचारियों से बातचीत न कर सका। दर्जन भर टिकट चेकरों के सामने हार जाने की स्मृति वे भी न भूल सके थे। इसलिए मन्त्री के वे विशिष्ट व्यक्तिगत कर्मचारी मुझसे बातें करने का उत्साह बोध नहीं कर रहे थे।

नागपुर में ट्रेन पहुँची। मेन प्लेटफार्म पर हमारी बोगी को छोड़ खाली ट्रेन चली गई। हम लोग अब इस इन्तजारी में बैठे रहे कि घंटे भर बाद जब ग्राण्ड ट्रंक एक्सप्रेस आएगी तब रवाना होंगे।

एक बोगी में पांच-सात सेण्ट्रल मिनिस्टर, कुछ एम० पी० और मन्त्रियों के प्राइवेट सेक्रेटरी चले थे, इसीलिए स्टेशन पर काफी चहल-पहल थी। मन्त्रियों के दर्शनार्थ नागपुर के बहुत से नामी-गिरामी, कुछ सर्वजनवन्दित व्यक्ति उपस्थित हुए थे। हमारे कम्पार्टमेण्ट में किसी मन्त्री के न रहने पर भी तीन-चार महापुरुषों को चढ़ते देख कर मुझे आश्चर्य हुआ। इन सबका वजन ढाई सौ, तीन या चार सौ किलो तक होगा। देखते ही लगा कि इनके विद्या के स्थान पर शनि की दृष्टि है और अर्थ के स्थान पर भाग्याधिपति बृहस्पति। पिछली रात जिनके साथ मेरा वादविवाद हुआ था उन्हें ही मिस्टर लुटपाटिया सम्बोधित कर इन सबों ने प्रणाम किया। मेरे तो दिव्यचक्षु खुल गए। डर और आतंक ने वाक्शक्ति तक हर ली। मन्त्रमुग्ध-सा आँखें फाड़ कर देखता रहा—विपुला धरणी के विपुल विशाल सन्तानों ने प्रचुर खाद्य पदार्थ और प्रेजेन्टेशन दिया लुटपाटिया को। दिल्ली प्रवासी मन्त्रिवर के स्वनामधन्य सेक्रेटरी साहब का प्रभाव सम्पूर्ण भारतवर्ष में व्याप्त है, इस विषय में, मुझे जरा भी सन्देह नहीं रह गया।

आगन्तुकों में से एक ने महाप्रभु लुटपाटिया के कानों में कुछ कहा। मुझे सुनाई पड़ा—'अरे इस मामूली-सी बात के लिए क्या सोचना? चन्द्रकान्त को टेलीफोन करते

ही आपके घर जाकर आर्डर पहुँचा देगा।'

इतना सारा खाना दोनों को शायद खाते हुए शर्म आती। अन्त में मिस्टर लुटपाटिया ने मुझे भी कुछ ऑफर किया। मैंने सिर्फ कृतज्ञचित्त होकर खाना ही नहीं—धन्य होकर उनसे बातचीत भी की।

विश्वास मानो, जी० टी० एक्सप्रेस अम्बाला पहुँचते-पहुँचते हम लोग हँसी-मजाक तक करने लगे। शाम को इटारसी जंक्शन पहुँचने से पहले ही मैं मिस्टर लुटपाटिया की बर्थ पर जा बैठा था। लुटपाटिया के साथ मेरी मित्रता और हृदयता की वही शुरुआत थी और आज हमारी दोस्ती का बंधन मिलाई-स्टील से भी कहीं ज्यादा मजबूत और दीर्घ स्थायी कहा जा सकता है।

पार्लियामेण्ट के सेण्ट्रल हाल में या दिल्ली के दूसरे अनेकों अड्डों पर बहुत लोग कहते हैं कि लुटपाटिया जैसा करप्टेड आदमी नहीं मिलेगा। ऐसी बातें सुन कर मेरा तन-बदन जल उठता है। असंख्य मनुष्यों में जो गुण नहीं है वह लुटपाटिया में है। इसीलिए उनके निन्दक इतने हैं, इतने शत्रु हैं। मनुष्य का उपकार करना ही लुटपाटिया का धर्म है और जो कृतज्ञ होता है वह उपकार के प्रतिदान स्वरूप कुछ देने की कोशिश करता है। इसके बीच करप्शन कहाँ आता है—मेरी समझ में नहीं आता।

एक दिन शाम को जरूरी एक न्यूज भेजने के लिए सी० टी० से लौटते वक्त ऐसी मूसलाधार वर्षा शुरू हुई कि कार चलाना मुश्किल हो गया। फिर भी कुछ आगे बढ़ा, लेकिन आगे कार चलाने की हिम्मत न हुई। अन्त में लुटपाटिया के घर की तरफ कार मोड़ दी। कार से उतर कर बरामदे पर पाँव रखते ही कुत्ते ने भौंकना शुरू किया। लुटपाटिया ड्राइंग रूम से निकल कर बड़ी खुशी से खातिर करके अन्दर ले गए।

बड़े सोफ़े के एक कोने पर मिस कुमार बैठी थीं। सेण्ट्रल टेबिल पर एक स्कॉच की बोतल और दो अधभरे गिलास रखे थे। लुटपाटिया ने चिल्ला कर रामसिंह को बुलाया। एक गिलास और सोडा की बोतल दे जाने को कहा। मैंने पूछा, 'मिसेज कहाँ ?'

'छः-सात दिन हुये बम्बई गई है महीने भर के लिए। फिर शायद हफ्ते भर के लिए बंगलौर भी जाएँगी।'

तीनों ने मिल कर काफी देर तक गप्प-शप की। तीन राउण्ड के बाद जैसे ही मैं उठ कर खड़ा हुआ, मिस कुमार ने हाथ पकड़ कर खींचा। बोली, 'इतनी जल्दी कहाँ जा रहे हैं ?'

हाथ की घड़ी दिखा कर बोला, 'देखा है ? गेटिंग इलेवेन।'

'डैम इयोर इलेवेन।' लुटपाटिया कह उठे।

मिस कुमार ने जबरदस्ती बैठा कर फिर से गिलास भर दिया। प्यार से दो-चार केसूनट्स मुँह में मेरे भर दिए। मिस कुमार ने मेरा दाहिना हाथ अपने हाथ से दबा कर कहा, 'तुम किस मन्त्रबल की मदद से पराए को अपना बना लेते हो, बता सकते हो ?'

उत्तर लुटपाटिया ने दिया, 'बन्धू, यह गुण अगर न रहता तो यह लड़की क्या मुझे जीत सकती ?'

'बन्धु, क्या यह बता सकते हो कि कैसे तुम्हारे मित्र ने मुझे अपना बना लिया है ?' पलट कर मिस कुमार ने प्रश्न पूछा।

लुटपाटिया के बँगले या मिस कुमार के फ्लैट में ऐसी अनेक प्यारी शामें मैंने इनके साथ बिताईं जिनका कोई हिसाब नहीं। मुझे तो दोनों बड़े पसन्द हैं, लेकिन देखो न, दिल्ली में इन दोनों को लेकर कितनी बदनामी है, कितना रसालाप हुआ करता है।

चार साल पहले इण्टरमीडिएट पास करके अट्ठारह साल की पंजाबी युवती अंजना कुमार जालन्धर से भाग्य की तलाश में दिल्ली आई। उस दिन किसी ने उसकी मदद न की, न किसी ने समवेदना जताई। दैवयोग से लुटपाटिया से मुलाकात क्या हो गई, लड़की के भाग्य का सिंहद्वार ही खुल गया। पहले सौ-डेढ़ सौ महीने पर सरकारी दफ्तर में घुसा दिया। डेढ़ साल बाद एक प्राइवेट फर्म में पाँच सौ से आठ सौ के ग्रेड में इसी बदनाम लुटपाटिया ने उसे करवा दिया था।

सब नहीं जानते हैं, मिस कुमार के मनीआर्डर पर निर्भर हैं उसके पिता-माता और छोटा भाई। जालन्धर में रह कर कोई क्या सोच सकता है कि लुटपाटिया की सहायता के बिना अंजना का क्या होता ? उन तीनों प्राणियों का क्या होता ? अवश्य ही किसी ने नहीं सोचा था। अब देखो न, मिसेज लुटपाटिया इन दिनों दिल्ली में नहीं हैं, लुटपाटिया का इतना बड़ा बंगला खाली ही तो पड़ा है, इसीलिए तो मिस कुमार को अपने निवास स्थान में लाकर लुटपाटिया ने रखा है। मिस कुमार का डेढ़-दो सौ रुपया बचेगा। इसमें बुराई कहाँ है ? कुछ नहीं।

पालियामेण्ट से एक दिन जबरदस्ती लुटपाटिया मुझे ले गए कनॉट प्लेस के एक रेस्टूरेण्ट में। जबरदस्त लंच खिलाया। कारण पूछने पर बोले, 'झुनझुनवाला जबरदस्ती एक गड्डी दे गये थे। बहुत मना किया लेकिन नहीं माना। कह गया, यह तो तुम्हारे लिए नहीं है, यह है बेबी के खिलौने के लिए उसके चाचा जी की तरफ से टोकॅन प्रेजेण्टेशन।'

उस वक्त लुटपाटिया बहुत व्यस्त थे। लिफाफा खोल कर देखने तक का वक्त न था। कुछ मौका मिला तो लिफाफा खोल कर देखा—दस कागज हैं। यह रुपया बेबी पर खर्च करने की कोई वजह नहीं है, सोच कर मुझे लंच खिलाया, मिस कुमार के साथ कुछ दिनों के लिए कुल्लू घूम आए। सब कहेंगे लुटपाटिया ने घूस लिया है लेकिन कोई यह न कहेगा कि लुटपाटिया की दया से ही झुनझुनवाला की इतनी बड़ी टेक्सटाइल मिल बच गई। उसके लाखों रुपए की इकम का रास्ता खुला रहा और ऐसा उसी सर्वनिन्दक की कोशिश और दया से हो सका।

पिछले साल ही की तो बात कह रहा हूँ। हलुआ साहब एक सेमिनार प्रिसाइड करने शिमला गए। हमारे लुटपाटिया भी साथ थे। लगभग सौ स्त्री-पुरुषों में शिमला की मिसेज नेगी भी एक थीं। लुटपाटिया के साथ परिचय हुआ। फिर घनिष्टता हुई।

सेमीनार खत्म होने के तीन-चार दिन पहले मिसेज नेगी ने लुटपाटिया को खाने पर बुलाया। उसी समय मालूम हुआ कि वे नि.सन्तान और विधवा हैं। मिसेज नेगी की उम्र भी ज्यादा न थी, यही कोई पैंतीस-छत्तीस होगी। इस निःसन्तान विधवा के दुःख से लुटपाटिया का मन भीग गया था। एक हमदर्द और संवेदनशील मन और मनुष्य पाकर मिसेज नेगी ने लुटपाटिया को अपने जीवन की सारी कहानी कह सुनाई थी। लुटपाटिया मुंह से कुछ न कह सके, सिर्फ धीरे से मिसेज नेगी का सिर अपने सीने से लगाए बैठे रहे। सिर्फ मौन सान्त्वना दे सके। विधवा होने के बाद मिसेज नेगी के जीवन में ऐसी रात कभी नहीं आई थी। घनघोर पहाड़-सी रातें, कभी ऐसी मधुर नहीं लगी थीं।

और कोई शायद नहीं जानता है पर मैं जानता हूँ। लुटपाटिया छल-बल-कौशल का प्रयोग कर मिसेज नेगी का उपकार जरूर करेंगे। अभी तो कुछ महीनों पहले की बात है। मिसेज नेगी के चार कमरों के घर को सरकार से रिक्यूजिशन करवा कर, हर महीने नौ सौ पचीस रुपए किराए पर, इन्तजाम करवा दिया है। कौन इस तरह का उपकार करता है, बताओ? लेकिन बेचारे का ऐसा ही दुर्भाग्य है कि कुछ ही दिनों में इसी बात को लेकर सारी दिल्ली में लोग बुराई करते फिरेंगे।

विश्वास मानो, लुटपाटिया की बात सोचता हूँ तो बार-बार मुझे लगता है कि विद्यासागर जी ने ठीक ही कहा था कि उपकार किए बगैर कोई साला नहीं कहता है। सचमुच सेल्यूकस! यह देश कितना अद्भुत है?

जानती हो मेम साहब, सुना है दिल्ली में ऐसे परोपकारी लुटपाटिया बहुत हैं। भारतवर्ष के स्वाधीन होने के बाद से देश दिल्ली मेल की गति से आगे की तरफ दौड़ रहा है। इस विषय पर अवश्य ही भारतवासियों को कोई सन्देह न होगा। इसके अलावा कई सौ साहबों ने भी तो हमें सर्टीफिकेट दिए हैं, सन्देह करने का अवकाश भी तो नहीं है। खैर, यह हमारा सौभाग्य है कि इस ऐतिहासिक यात्रा-पथ पर, राजधानी दिल्ली और अन्य दूसरे शहरों में बहुत-सी मिसेज प्रधान, मिस कुमार और मिसेज नेगी पैदा हुई हैं। सरकारी दफ्तरों में इस तरह के परोपकारी लुटपाटिया, जिस तरह मौन रह कर एकान्त में, नि.शब्द और उससे भी बढ़ कर निःस्वार्थ भाव से जननी जन्मभूमि की सेवा करते चल रहे हैं—उन्हें क्या कभी समाज पुरस्कृत करेगा?

जी भर कर प्यार दे रहा हूँ।

तुम्हारा ही
बच्चू

मेम साहब,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। साथ ही मिली प्राणों के मध्य तुम्हें पाने की अनुभूति। शरदोत्सव मे जब चारों तरफ लोग खुशी से मस्त हो रहे थे, तब तुम्हे पास न पाकर

मेरे मन के तार-तार बेसुरे बज रहे थे। आज तुम्हारे पत्र से लौटने की निश्चित तारीख मालूम होने से लग रहा है कि मेरे घर में भी देवी का आविर्भाव होगा, चारों तरफ मंगल शंख-ध्वनि होगी, मेरे जीवन में भी दुःख के बादल छँटने पर आनन्द रश्मि छिटकेगी।

मेरी यह चिट्ठी तुम्हारे हाथ लगने से पहले ही तुम्हारी परीक्षा खत्म हो जाएगी, परीक्षाफल भी निकल चुकेगा। तुम्हारी सफलता पर तुम्हारे साथी अभिनन्दन करेंगे, तुम्हें न जाने क्या-क्या उपहार देंगे, नाना देश के छात्र-छात्राओं के बीच, पते का लेन-देन होगा। उसके बाद तुम्हारे हाथों में दिन ही कितने रह जाएँगे? छोटे-मोटे प्रेजेण्टेशन और मेरे लिए मनपसन्द कुछ खरीदते न खरीदते २ नवम्बर आ जाएगा। उस रात तुम्हारी वह लैण्डलेडी जरूर डिनर खिलाएगी। हो सकता है, एक टोकन प्रेजेण्टेशन भी दे। और तुम? कुछ खुशी से, कुछ विच्छेदवेदना से भर कर उस वृद्धा से लिपट जाओगी। बार-बार धन्यवाद देती हुई कहोगी कि उसकी बात हमेशा याद रहेगी। है न बात सही?

उसके बाद ३ नवम्बर को तो तुम्हारे हाथों में जरा भी वक्त न होगा। ब्रेकफास्ट खाओगी, इसमें मुझे शक ही है। दोस्तों से विदा लेते-लेते ही एयरपोर्ट पर रिपोर्ट करने का टाइम हो जाएगा। पेरिस, रोम, कायरो और करांची में एक-एक दिन जरूर रुकोगी, न? ६ नवम्बर की रात का अंधेरा विदा लेकर ७ नवम्बर का सूर्य उग भी न पाएगा कि तुम्हारा जेट प्लेन पॉलम पर उतरेगा। उसके बाद की बात तो मैं सोच ही नहीं सकता हूँ। उस दिन के उस आनन्दोत्सव की बात सोचता हूँ तो सर्वांङ्ग सिहर उठता है। चेहरे पर मन की खुशी छलक आ रही है—उस दिन तुम्हें पहली बार क्या कहूँगा, क्या खिलाऊँगा, कौन सी खबर दूँगा—ये बातें जितना ही सोच रहा हूँ उतना ही दिमाग में सब गड़बड़ा जा रहा है। इसीलिए ये सब बातें सोच नहीं पा रहा हूँ, बाद में सोचूँगा।

—कुछ जरूरी काम से प्रेसीडेण्ट्स एस्टेट में एक दोस्त के पास गया था। काम जल्दी हो गया। न जाने क्यों साउथ एवेन्यू में तीन मूर्ति के सामने रुक गया। गप्प मारते-मारते यह आदत नशे में बदल जाती है। उसी नशे की रौ में मैं पास ही के एक रास्ते से होकर रोहतगी साहब के घर में जा घुसा।

जरा रात हो गई थी—यही कोई सवा नौ-साढ़े नौ का वक्त होगा। दिल्ली जैसी नियमबद्ध राजधानी में, ऐसे वक्त पर किसी बड़े आदमी के घर अचानक पहुँचना अन्याय ही नहीं, बड़ा भारी अपराध समझा जाता है। मैं इतना सब सोचे बगैर ही घुस गया था। कार से उतरते ही बारामदे पर नजर गई—ऑफिस में बत्ती नहीं जल रही है। समझ गया—रात हो गई है। प्राइवेट सेक्रेटरी, पर्सनल असिस्टेण्ट, स्टेनोग्राफर विदा हो गए हैं। अभ्यागत की आगमनवार्ता के लिए संकेत स्वरूप कॉलबेल बजाते जरा शर्म-सी लगी। हालांकि उससे भी ज्यादा शर्म महसूस किया लौटने में। बेल बजाऊँ या नहीं, सोच ही रहा था कि पीछे से किसी ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा। चौंक

कर पलटा—स्वयं मिस्टर रोहतगी थे।

'बच्चू, कैसे हो?' बहुत ही नरम आवाज में मिस्टर रोहतगी ने पूछा।

'ठीक ही', मैं बोला।

एक दीर्घ श्वास छोड़ कर बोले—'दैट्स गुड।'

इतनी रात गए अचानक पहुँच जाने से मैं विशेष रूप से लज्जा का अनुभव कर रहा था। जरा अपराधी-सा होकर बोला—'इतनी रात को परेशान करने के लिए....'

'नॅट एट ऑल', आश्वासन दिया मिस्टर रोहतगी ने। फिर बोले—'देखो बच्चू, सारे दिन मेरे पास कितने लोग आया करते हैं। नाना प्रकार के काम का तकाजा रहता है उनका। लेकिन दिन खत्म होने पर जब मैं सिर्फ मैं ही रह जाता हूँ, तब मुझे कोई पूछने तक नहीं आता है। कोई जानना तक नही चाहता है कि मैं हँसता-खेलता हूँ या रो-रो कर आँसुओं की नदी बहा रहा हूँ।' फिर दीर्घ श्वास छोड़ कर बोले, 'सो थाई ऐम वेरी ग्लेड—जो तुम आए हो।'

मिस्टर रोहतगी का अनुसरण कर चुपचाप ड्राइंग रूम में जाकर बैठा। मिस्टर रोहतगी अन्दर गए। बैरे को कॉफी के लिए कह कर लौटे, पास के सोफे पर बैठे।

कुछ देर तक हम चुप बैठे रहे। मिस्टर रोहतगी ने एक लम्बा मोटा सिगार सुलगाया। अपने ही आप खोए-खोए से कश पर कश खीचते-छोड़ते रहे—ड्राइंगरूम धुएँ से भर गया। कमरे में ज्यादा बत्तियाँ नहीं जल रही थी—इसीलिए मिस्टर रोहतगी का चेहरा मुझे ठीक से दिखाई नही पड़ रहा था। जब सिगार के धुएँ का बादल कुछ हल्का हुआ, मिस्टर रोहतगी को देख कर मैं चौंक पड़ा। लगा, जैसे बेजान एक पत्थर की मूर्ति हों।

जानती हो मेम साहब, कुछ देर बाद उस पत्थर की मूर्ति में प्राणों का संचार हुआ था। बात की थी—बताया था अपने सांसारिक जीवन की व्यर्थता का इतिहास। उस रात, उस बंगले में, भारतवर्ष के अन्यतम, श्रेष्ठ, क्षमतासम्पन्न पुरुष मिस्टर रोहतगी भूल गये थे, अपनी पद-मर्यादा, समुद्र और हिमालय पर्वत के पार तक फैली उनकी क्षमता को, उनका प्रभाव—सब कुछ। और भी बहुत कुछ भूले थे उस रात—भूले थे पार्लियामेण्ट, भूल गए सेक्रेट्रियों को, लाखों तावेदारों और खुशामदियों को। बच्चो की तरह मिस्टर रोहतगी रोए थे उस दिन। सुनाई थी अपने जीवन-उपन्यास की कहानी।

—छात्रावस्था में जब मिस्टर रोहतगी लंदन में थे, तब एक बार जबरदस्त बीमार पड़े। सहपाठी नरेन्द्र वर्मा अपने चाचा डॉक्टर वर्मा को मित्र के इलाज के लिए ले आये। जिन दिनों हालत बहुत नाजुक हो गई थी, वर्मा परिवार के सभी रोहतगी की शय्या के पास इकट्ठा थे। बयालिस दिनों तक जीवन-मृत्यु से लड़ाई चलने के बाद रोग-मुक्त हुए, मिसेज वर्मा के हाथों से अन्न ग्रहण किया।

दो हफ्ते बाद पिता-माता को सब कुछ बताते हुए चिट्ठी लिखी। उत्तर उन्हे

नहीं डॉक्टर वर्मा को मिला। लम्बी चिट्ठी के अन्त में किशोरी लाल रोहतगी ने लिखा था—'डॉक्टर, आज से मेरा लड़का सिर्फ मेरा ही नहीं, वह तुम्हारा भी लड़का है। उसका अच्छा-बुरा, कल्याण-अकल्याण का दायित्व तुम-हम दोनों पर बराबर है। भाई, मेरे उस दायित्व लेकर तुम मुझे ऋण मुक्त करो।'

वही शुरुआत थी। रोहतगी ने किराए का डेरा छोड़ कर डॉक्टर वर्मा की गृहस्थी में पुत्र की मर्यादा प्राप्त की। नया जीवन शुरु किया।

दीर्घकालीन निकट साहचर्य के क्षणों में कब, किस शुभ मुहूर्त में, रोहतगी ने डॉक्टर नन्दिनी मृणालिनी वर्मा के हाथों आत्म-समर्पण किया था, आज वह बात याद नहीं। फिर भी याद हैं छोटी-बड़ी अनेक कहानियाँ....

—'जानते हो बच्चू, फाइनल इयर मे था। प्रोफेसर हैरल्ड लास्की ने बहुत सारे नोट्स दिये थे। उन्हें पढ़ना ही पड़ता। हैरल्ड लास्की के नोट्स कौन पढ़े बिना रह सकता है, बताओ? लेकिन उन नोट्स को पढ़ने के चक्कर में दूसरी किताबों को पढ़ने का अवसर ही नहीं मिल पाता। लाइब्रेरी से किताबें ले आकर उनसे नोट्स बनाने का वक्त न मिलता—लौटा आता। एक्जामिनेशन शुरु होने के एक महीने पहले एक दिन पढ़ने की मेज पर बहुत सारी कॉपियाँ देखीं—खोल कर देखा—नोट्स से भरी थी। लिखाई देखते ही समझ गया—यह काम मृणालिनी का है।'

रोहतगी की पत्थर की मूर्ति जरा हँसी, सिगार का एक और कश खींचा—'क्लास के लड़कों के साथ हुड़दंगा करने में कोट के बटन तोड़ आया था, शर्म के मारे किसी से कह भी नहीं सका। रात को मेरे सोने के बाद मृणालिनी दबे पाँव कमरे में आई। वाडरोब खोल कर कोट ले गई। बटन टाँक कर फिर चुपचाप दबे पाँव आकर रख गई।

'दूसरे दिन ब्रेकफास्ट की मेज पर कुछ गम्भीर होकर मृणालिनी बोली,—'जानती हो माँ, कल रतन बच्चों की तरह अपने क्लास के लड़कों के साथ लड़-झगड़ कर आया था। कोट के सारे बटन टूट गए थे।'

माँ कुछ कहें, उससे पहले ही रतन ने कहा, 'माँ, तुम्ही बताओ, मेरे जैसा लड़का यह काम कर सकता है?'

रतन के कप में कॉफी डालते हुये माँ बोलीं—'बात तो सही है, रतन मारपीट क्यों करेगा?'

फुँफकार उठती मृणालिनी—'आजकल तुम बेहद पार्शियल हो रही हो।'

कॉफी की एक घूंट पीने से पहले ही रतन-मृणालिनी की लड़ाई शुरु हो जाती। माँ के अनुशासन की उपेक्षा कर दोनों लगभग हाथापाई पर उतारू हो जाते। इसी बीच मौका पाते ही रतन दौड़ कर कोट ले आया और माँ को दिखा कर कहा—'यह देखो, बटन कहाँ टूटे हैं?'

उसी क्षण मृणालिनी चुप हो गयी। सिर्फ माँ की आँखों मे धूल झोंक कर रतन की तरफ घूंसा दिखा कर इशारे से कहा—'देखना तुम्हारी क्या हालत करती हूँ।'

रतन चिल्ला कर बोला—'माँ, मृणालिनी घूंसा तान रही है।'

सिगार का एक कश खींच कर रोहतगी साहब काफी का आखिरी घूंट पी गये —'जानते हो बच्चू, मृणालिनी मेरे सम्पूर्ण जीवन में इस तरह छा गई थी कि उसके बगैर जीवन की कल्पना करना तक कष्टकर था। हर दिन, हर पल मृणालिनी के बगैर जीवन-यात्रा ही असम्भव थी। मृणालिनी से प्रेम करने लगा था, यह नहीं जानता हूँ। लेकिन उसने मुझे प्यार किया था और मैं भी उसे निकट न पाकर चारों तरफ अँधेरा-सा देखता था।'

सिगार की लम्बी मोटी राख गिर गई। मिस्टर रोहतगी ने छुपा हुआ दीर्घश्वास छोड़ा।

—'लंदन स्कूल आफ इकोनामिक्स और लिंकन्स इनसे निकलते ही रतन रोहतगी और मृणालिनी वर्मा की शादी हुई। उस रात डाक्टर वर्मा का कॅसिंगटन फ्लैट गण्यमान्य अतिथियों से भर गया था। ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के अनेक सदस्य और कई हजार भारतीयों के अतिरिक्त सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया भी आए थे, रतन रोहतगी और मृणालिनी को आशीर्वाद देने।

पहली सुहागरात को मृणालिनी ने रतन रोहतगी को प्रणाम किया। कहा, 'सिर्फ आशीर्वाद दो कि मैं तुम्हें जी भर कर पा सकूं।' लंदन प्रवासी धनी और प्रभावशाली डॉक्टर की कन्या को इस तरह से पाँव छूने देख कर मिस्टर रोहतगी आश्चर्य-चकित हुए थे। लेकिन कुछ कहने से पहले, मृणालिनी ने फिर कहा था, 'देखो रतन, मुझे प्यार करने मात्र से मेरा मन न भरेगा, मैं सन्तुष्ट न हो सकूंगी। तुम मुझे गलतियाँ-त्रुटियाँ दिखा दोगे, मुझको डाँटो डपटोगे, तभी मैं सुखी हो सकूंगी।'

खुशी और सुख से रतन रोहतगी का मन लबालब भर गया था। मुग्ध नयनों से, जी भर कर उस रात रतन रोहतगी ने अपनी जीवनसंगिनी को देखा था और दीर्घकाल से संचित प्रेम से अपना मन भर लिया था।

...'जानते हो बच्चू, रूप-कथा की कहानी की तरह मृणालिनी के स्पर्श से मेरे जीवन में सफलता की बाढ़ आ गई। नाइनटीन ट्वेन्टी फाइव से थर्टीफोर तक मैंने लाखों रुपया कमाया। कितना—आज याद नहीं है। सिर्फ याद है, हाईकोर्ट में प्रैक्टिस शुरू करने के साल भर में मकान खरीदा। साल-दो साल में हालत यह हो गई कि केस लौटाने के लिए एटर्नियों के साथ झगड़ा करना पड़ता था। उसके बाद नाईनटीन ट्वेण्टीनाइन में अलकापुरी की प्रिन्सेस अमिता सिंह का मर्डर हुआ और महाराजा के ए० डी० सी० कर्नल भोंसले को हत्या करने के अपराध में सेशन ने मृत्युदण्ड का आदेश दिया। कर्नल भोंसले को हाईकोर्ट में अपील करने की अनुमति मिली। सर हरिनाथ पाटिल की सलाह से मिसेज भोंसले मेरे पास आई। लेकिन बहुत सारे अन्य केस हाथ में होने की वजह से मैंने अपनी मजबूरी जताते हुए उन्हें लौटा दिया।'

मिस्टर रोहतगी जरा मुड़ कर बैठे। नया सिगार सुलगाया। तिरछी नजरों से विशाल फ्रेम में बँधी पत्नी की फोटो पर एक नजर डाली।

मिस्टर रोहतगी के पास से निराश होकर मिसेज भोंसले दूसरे दिन मिसेज रोहतगी के पास हाजिर हुईं। 'आपकी तरह मैं भी अपने पति से प्यार करती हूँ। उन्हें लेकर सपने गूंथती हूँ। आप ही बताइए—इन्हीं को फांसी हो जाएगी तो मैं कैसे जीवित रह सकूंगी ?' मिसेज भोंसले उत्तेजित हो उठी थीं। स्वस्थ रूप से चिन्ता करने की मानसिक अवस्था उनकी न थी। इसलिए कहा, 'मेरी जगह अगर यही मुसीबत आप पर आ जाती, तब—'

मिसेज रोहतगी ने आगे बढ़ने नहीं दिया। मिसेज भोंसले का मुँह पर दबाया। वादा किया, भरोसा दिलाया कि पति की सहायता करेंगी।

पत्नी के अनुरोध पर मिस्टर रोहतगी ने केस लिया हाथों में, लेकिन बहुत स्टडी करके देखा तो बचाना मुश्किल पाया। खोज-खबर करने पर मालूम हुआ कि बम्बई के सभी मशहूर और अच्छे बैरिस्टरों के पास मिसेज भोंसले गई थी लेकिन उन्होंने केस लेने का साहस नहीं किया था।

पेंडिंग सारे केस जूनियरों को देकर मिस्टर रोहतगी कर्नल भोंसले के केस में डूब गए।

आसान केस न था। राजकुमारी के साथ कर्नल की लम्बी प्रेम कहानी अलकापुरी एस्टेट का हर कोई जानता था। यह भी सब जानते थे कि किसी विशेष कारणवश ही राजकुमारी कर्नल से शादी करने को तैयार नहीं हुई थी। इसके कुछ दिनों बाद ही दिवान जी के विलायत से लौटे डॉक्टर पुत्र के साथ इधर-उधर राजकुमारी दिखाई पड़ने लगी। कर्नल राजकुमारी को भूलना चाहता था इसीलिए झटपट शादी करके गृहस्थी शुरू कर दी। लेकिन विवाहित कर्नल को राजकुमारी अमित सिंह बरदाश्त न कर सकी। राजमहल के हर उत्सव-अनुष्ठानों में, दरबार में मिलने वाले हर मौकों पर कर्नल को अपमानित और लज्जित करने लगी राजकुमारी। महाराज विक्रम सिंह राजकुमारी की यह हरकत पसन्द न करने पर भी एकमात्र सन्तान को कुछ कहने की क्षमता नहीं रखते थे।

इधर दिवानजी के पुत्र ने विलायत में रहते समय जिस अंग्रेज दुहिता का पाणिग्रहण किया था, वह भागे हुए पति की तलाशती, अचानक अलकापुरी में आ पहुँची। आने वाली मुसीबत से डर गया डाक्टर। तभी आई विदेशिनी को लेकर उसी दिन देश त्यागा उसने।

इसी बीच डाक्टर के साथ आनन्द यज्ञ में मस्त राजकुमारी सन्तान की माँ बनने वाली है, यह बात कोई नहीं जानता था। महाराज विक्रम सिंह ने यह बुरी खबर दिवान जी से सुनी। दिवान जी ने बताया कि कर्नल ही राजघराने की इस पवित्रता को नष्ट कर रहा है—राजकुमारी का शरीर कलुषित किया है। दिवान जी की सलाह से प्रतिहिंसा से जलती, राजकुमारी ने भी यह अभियोग, महाराज के सामने स्वीकार किया।

दूसरे दिन सुबह भरे दरबार में महाराज, दिवानजी और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों के सामने राजकुमारी ने कर्नल को अभियुक्त ठहराया। कर्नल स्तम्भित रह गये—अतीत की प्रेयसी के इस आकस्मिक आक्रमण से उनकी वाक्शक्ति भी जैसे खो गई। प्रति आक्रमण

तो दूर, यह वीर मराठा योद्धा, एक शब्द बोल न सका। सिर झुका कर दरबार से निकल आये थे वे। लेकिन यह झूठा कलंक का बोझ लेकर घर नहीं गये।

उसी दिन मध्यरात्रि में राजमहल की शांति भंग कर रिवाल्वर गरज उठा था। कुमारी राजकुमारी अनिता सिंह का निष्प्राण शरीर मिला पर आततायी की खबर न मिली। बुद्धिमान, प्रवीण, क्रूर दिवान जी ने राजकुमारी की हत्या करके भागे हुए कर्नल के विरुद्ध मुकदमा दायर किया और अन्त में कर्नल को सेशन से मृत्यु दण्ड मिला।

मिस्टर रोहतगी ने लगभग एक महीने तक अन्न-जल त्याग दिया था। रात के आखिरी प्रहर में, लाइब्रेरी के इजी चेयर पर, मोटी-मोटी कानून की किताबें सीने पर रख कर सो जाते, फिर भी शय्या ग्रहण नहीं की। चीफ जस्टिस विलसन, जस्टिस नोयेलस और जस्टिस वेकर के कोर्ट में जिस दिन इस अपील की सुनवाही शुरू हुई, उस दिन रोहतगी का चेहरा देख कर बार के मित्रगण चौंक पड़े थे। अखबार के रिपोर्टर और बार के अन्यान्य बैरिस्टरों से ही चीफ जस्टिस का कोर्ट-रूम भर गया था। एटर्नी और एडवोकेट तक कोर्ट रूम में न घुस सके थे। सात दिन में से चार दिन तक मिस्टर रोहतगी सवाल ही पूछते रहे। सवाल खत्म होने पर चीफ जस्टिस ने कहा था, 'आई मस्ट पुट इट आन रेकार्ड, आवर सिनसियर एपरीसिएशन फार योर वण्डरफुल परफार्मेंस।'

मिस्टर रोहतगी ने सिर्फ सिर झुका कर इतना ही कहा था, 'मेनी थैंक्स मी लार्ड, मुकद्दमें में हारने पर अब मुझे अफसोस नही होगा।'

कोर्ट-रूम से निकल कर मृणालिनी ने कहा था, 'रतन, तुम क्या इंसान हो?'

मिस्टर रोहतगी ने तुरन्त उत्तर नही दिया। घर लौटते वक्त कार पर बोले। —'देखो मृणालिनी, तुम्हारे कहने पर, तुम्हारा मुंह देख कर मैं इससे भी ज्यादा कठिन काम कर सकता हूँ। हनुमान की तरह अगर सम्भव होता तो छाती चीर कर दिखला देता कि वहाँ तुम्हारी ही मूर्ति है।'

मृणालिनी ने कुछ न कहा, चुपचाप पति के सीने पर सिर रख दिया था। खुशी और तृप्ति से उनका चेहरा दमक उठा था।

अगले सोमवार को चीफ जस्टिस विलसन ने खचाखच भरे कोर्ट में जजमेण्ट पढ़ना शुरू किया। समस्त इन्द्रियाँ सजग कर वह जजमेंट सुना था। मिसेज भोंसले, दिवान जी और अन्य लोगों ने। डेढ़ घंटे बाद चीफ जस्टिस ने कहा था, 'हम तीनों इस विषय पर एकमत हैं कि कर्नल भोसले दोषी नहीं हैं। दिवानजी के षड्यंत्र और पुलिस की मदद से उनका खून किया गया है।'

मिसेज भोंसले दौड़ती हुई आकर मिस्टर रोहतगी के चरणों मे गिरी थीं। मुक्ति पाकर कर्नल भी पचीस हजार का चेक लेकर आए थे। मिस्टर रोहतगी ने वह चेक लिया नहीं, लौटा दिया। कहा था, 'मैंने फीस पाने की लालसा से यह केस नहीं किया था, अपनी पत्नी के कहने पर किया था।' जरा रुक कर फिर बोले थे, 'कर्नल, भविष्य में मैं आपसे आशा करूँगा कि आप अपनी पत्नी की बात की [illegible] [illegible]।

इस वादे के अलावा आपसे मुझे कुछ मिलना नहीं।'

कुछ दिनों बाद, एक शाम, कूलिका के रोहतगी-गृह मे हाजिर हुए थे स्वयं महराज विक्रम-सिंह। कहा था, 'वैरिस्टर-साहब, अन्यान्य महाराजाओं की तरह मैं भी दिवान जी के कहने पर उठता-बैठता था, पर अब नहीं। कर्नल को मुक्ति दिलाने के लिए मैं आपका चिरकाल कृतज्ञ रहूँगा।' उसके बाद महाराज के बहुत दबाव डालने पर, वाध्य होकर पांच लाख रुपए लिए थे।

दूसरा सिगार भी खत्म हो गया। शेष टुकड़ा एशट्रे में डाल दिया। बोले, 'विश्वास मानो जर्नलिस्ट, इसके बाद मेरा यश, क्षमता, रोजगार बहुत बढ़ गया। इतने केस मिलते कि आठ-दस जूनियरों की सहायता भी कम होती। क्रिसमस की छुट्टियों में दस-बारह दिनों के लिए मृणालिनी को लेकर कहीं चला जाता। इसके अलावा एक दिन के लिये भी बम्बई के बाहर न जा पाता, एक दिन की छुट्टी तक न लेता।'

मेम साहब, अकस्मात् एक दिन उन्होंने लट कर देखा, बहुत रुपया इकट्ठा हो गया है। उसी दिन प्रैक्टिस छोड़ दी। भाग्य का इशारा पा पॉलिटिक्स ज्वाइन किया।

इसके बाद, प्रख्यात जन-नेता रतन रोहतगी (राजनैतिक जीवन मे) सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ते हुए शीर्ष स्थान पर जा पहुँचे और आज वे भारतवर्ष के अन्यतम अप्रतिद्वन्द्वी नेता हैं। रोहतगी के राजनैतिक जीवन की इस सफलता की कहानी का इतिहास सैकड़ों बार अखबारों के पृष्ठों में छप चुका है। लोगों ने भी दूर-दूर तक फैलाया है। लेकिन उनके एकान्त निजी व्यक्तिगत जीवन की असफलता के इतिहास को, जो आँसुओं से लिखा है, कोई नहीं जानता है। उस रात वह कहानी मुझे उन्होंने सुनाई थी।

रतन रोहतगी ने राजनैतिक जीवन का केन्द्र-स्थल बम्बई से हटा कर दिल्ली किया। साल भर बाद ही उनका एकमात्र पुत्र ऑक्सफोर्ड से ग्रेजुएट होकर अपने देश लौटा। साल-दो साल में वह बड़ी नौकरी मे लग गया। मिस्टर-मिसेज रोहतगी न जानते थे कि उनका एकमात्र पुत्र, इस बीच एक निकट आत्मीय की सुन्दरी कन्या को दिल दे बैठा है। इसीलिए शादी का प्रस्ताव आते ही मिस्टर रोहतगी चौंक पड़े। मृणालिनी रोहतगी भी समर्थन न कर सकी थी। पुत्र का मुँह देख मिसेज रोहतगी ने कुछ दिनों बाद अपना मत बदला था, पति के पास सिफारिश भी की थी। लाभ नहीं हुआ कुछ। वज्र कठोर चित्त मिस्टर रोहतगी ने पुत्र के आवेदन, पत्नी के अनुरोध की उपेक्षा की। बोले, 'इतने करीबी रिश्तेदारी में शादी नहीं हो सकती है। लोग थू-थू करेंगे।'

मैंने देखा मिस्टर रोहतगी की दोनों आँखों से आँसू बह रहे थे। नीचे का होंठ दाँतों के बीच दबा कर, मृणालिनी और पुत्र की, बगल-बगल लगी, आयल पेंटिंग्स की ओर देखते रहे। भारतवर्ष के एक इतने बड़े नेता की यह असहाय अवस्था देख, मैं मन ही मन न जाने कैसा अनुभव कर रहा था। कुछ कह कर सान्त्वना देने की सोच कर भी न दे सका। मेरे कुछ कहने से पहले ही मिस्टर रोहतगी ने अपने को जरा सँभाल

लिया। केवल बोले, 'तीन दिन बाद ओखला के किनारे लड़के की डेड बॉडी मिली। यमुना किनारे ओखला के बाँध पर मैं गया था लेकिन मृणालिनी नहीं गई। यंग बेटे की मृत्यु के लिये एक बूंद आँसू तक नहीं बहाया था उसने। मैं डर गया था, लेकिन मृणालिनी को सान्त्वना देने का साहस या भाषा मेरे पास न थी।'

मिस्टर रोहतगी काफी उत्तेजित हो उठे। मेरे दोनों हाथ पकड़ कर बोले, 'जानते हो बच्चू, दूसरे दिन मृणालिनी का निष्प्राण शरीर उसके बिस्तर पर देखा था। कोई खत नहीं, सिर्फ स्लीपिंग पिल्स की खाली शीशी उसके तकिए की बगल में पड़ी थी।'

मैंने मिस्टर रोहतगी के पास पहुँच कर उन्हें दोनों बाँहों में भर लिया। रुमाल से उनकी आँखें पोंछ दीं। मेरा हाथ पकड़ लिया—'बच्चू, मुझे रोने दो। मृत्यु के क्षण भर पहले तक आँखों से आँसुओं की धार बन्द न होगी।'

जानती हो मेम साहब, मिस्टर रोहतगी का शरीर न जाने कैसा अवसन्न-सा होकर सोफे पर लुढ़क गया। बड़ी देर तक वे कुछ न बोले, मैं भी कुछ कह सकने का साहस न बटोर सका। न जाने कितनी देर तक दोनों चुपचाप बैठे रहे। सिर्फ याद है रुद्ध गले से कहा था, 'विश्वास करो, मृणालिनी रोज रात को मेरे पास आती है, मुझसे बात करती है, मुझे प्यार करती है। सारा-सारा दिन, सारी शाम मैं रोया करता हूँ और रात को आकर वह मेरे आँसू पोंछ देती है। कहती है, दुःखी क्यों हो? मैं तो तुम्हारे पास ही हूँ।'

मैंने उसके बाद देर नहीं की। अन्दर से बेरे को बुला कर दोनों ने पकड़ कर मिस्टर रोहतगी को उनके बेड-रूम में लिटा दिया।

अच्छा मेम साहब—उनके प्यार की कल्पना कर सकती हो? सोच सकती हो एक जने का दूसरे पर निर्भर रहना? बहुत दिनों बाद तुम पास आने वाली हो। कुछ ही दिनों में हम दोनों का जीवन एक ही सूत्र में बँधेगा, एक ही स्वरों में दोनों संगीत बज उठेंगे। लेकिन हम क्या इस जीवन का सिंहद्वार पार कर अगले जीवन में मिल सकेंगे?

तुम्हारा
बच्चू

● ●